

क्रमशः कम होती जा रही है। मेरी ऐन एवन्स का उपनाम जॉर्ज इलियट था और एसी उपनाम ने ये साहित्य रचना करती रही। उन्होंने पहले पब्लिशिंग लिखित 'लियेन जेम्स' का अनुवाद किया और 'गेस्ट पिन्साट' लिखी परिस का महान भंगारिका बहुत काल तक रही। उनका विवाद जो एन्ड लुट ने हुआ था और लुट को ही उन्माहित करने में उन्होंने उपन्यास रचना आरम्भ किया था। जॉर्ज इलियट की कवि दर्शन शास्त्र में अधिक थी परन्तु उपन्यास रचना में ये इसका समुचित प्रयोग न कर पाते।

१८५७ ईसवी में इलियट की पहली रचना 'क्रॉस ऑफ़ क्रिकल लाइफ' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक के प्रकाशित होने की उनकी रूपाति बढ़ने लगी और 'ग्रेम वीट' (१८५६) लिखने के बाद उनकी गणना 'बैट कला-गणों में होने लगी। इस पुस्तक में 'टंगलिस्तान' के आर्मीण जीवन की मरल कथा है। इसके पात्र यथार्थ जीवन में लिए गए हैं और भावनाओं के दृष्ट में लेखिका ने गूढ़ शक्ति का प्रयोग किया है। 'ग्रेम वीट', 'ट्रेडी वॉरिल', 'डॉना', सभी पात्र यथार्थ ही नहीं बरन हृदय-वादी भी हैं। 'मिल ऑन दि फ्लॉम' (१८६०) में उन्होंने एक घर के भाई बहिन को बड़ी मरल कथा का वर्णन किया और 'माइलस मानर' (१८६१) में भी आर्मीण जीवन के वातावरण का प्रयोग किया जिसमें प्रेम और लोभ के अनेक संघर्षमय चित्र मिलते हैं। जॉर्ज इलियट ने भी 'रोमैला' (१८६३) नामक एक ऐतिहासिक उपन्यास लिखने का आग्रह प्रयत्न किया था। इस पुस्तक में 'टटली' के पुर्नजायति के चित्रण का प्रयास है। सामाजिक उपन्यासों में 'फॉलिंग ट्रीट' (१८६६) की गणना है परन्तु इसमें लेखिका की स्वच्छन्दता अवसर ही-सर् है। उनकी सबसे मरल कृति 'मिटिल मार्ज' (१८७२) ई० में प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने समकालीन वंशों के संघर्ष की मुरचिपूर्ण अभिव्यक्ति की है। जॉर्ज इलियट ने उपन्यास के कथानक-स्थलों को विस्तृत किया और पात्र चित्रण में विश्लेषण शक्ति को अधिक महत्व दिया।

ऐन्थनी ट्रॉलप—इलियट के समकालीन ऐन्थनी ट्रॉलप (१८१५-८२) ने वद्यपि उपन्यास कला में कोई विशेष प्रगति न की तिस पर भी उनकी कला में वर्णन शक्ति, कल्पना तथा चरित्र चित्रण प्रचुर मात्रा में है। वेगाई भर्म के पादरियों के जीवन का उन्हें पूर्ण अनुभव था और इसी

प्रकाशकीय

श्रीमान बड़ौदा नरेश सर मयाजीराव गायकवाड़ महोदय ने बम्बई के अधिवेशन में स्वयं उपस्थित होकर जो पाँच सहस्र रूपए की सहायता सम्मेलन का प्रदान की थी उसी से सम्मेलन इस उपयोगी सुलभ-साहित्य-माला के प्रकाशन का कार्य कर रहा है ।

प्रस्तुत पुस्तक 'अंग्रेजी साहित्य का इतिहास' इसी 'माला' के अंतर्गत प्रकाशित हो रही है । इसके लेखक डॉक्टर एम० पी० खत्री प्रयाग विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के अध्यापक हैं । अंग्रेजी साहित्य के इतिहास में प्रविष्ट होकर उन्होंने इस ग्रन्थ में उनकी प्रवृत्तियों को सुवांश तथा संक्षिप्त रूप में स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है । आशा है, हिन्दी जगत् डॉक्टर खत्री की इस अध्ययनपूर्ण कृति का समादर करेगा ।

साहित्य-मंत्री

२६ कार्तिक, २००४

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
७	६	इनके	उनके
६	१२	विहट्ट	विहट्टनी
११	२०	वर्णान	वर्णान
१४	१६	थिस्वी	थिस्नी
१४	१६	फादलोमीला	फादलोमीला
१५	११	लन्दन	लन्दन
१६	२६	लिंगनेट	लिङ्गेट
१८	२३	परन्तु	भविष्य में
२५	२४	देश प्रेम	देश प्रेम तथा
२८	१६	लिए	लिए भी
२८	२१	उनके	वाँलर के
३६	१६	संरक्षकों	संरक्षकों
४२	१४	द्विन्य	द्विन्य
४४	१४	पौधवाँ	चौशा
४६	१०	कपना	कल्पना
४८	१०	शतान्दी	शतान्दी
४६	२४	फिट्जेरेन्ड	फिट्जेरेन्ड
५१	२४	प्रॉत्सरपीन	प्रॉत्सरपीन
५४	२१	निर्देश	निर्देश
६५	२८	रही	रहीं
६६	६	इन्टरलूड्स	इन्टरलूड्स
६७	१६	सबसे पहले यही हुए	यहां
७५	७	भाग	भाग
१०३	२	नाटक	उपन्यास
१०७	१६	पुस्तक	पुस्तक
१०७	३१	उत्तरार्थ	उत्तरार्ध
१०८	२४	स्थलो	स्थलों
१०८	२८	वनियन में	ने
१०८	३१	लेखकों	लेखकों

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
१०६	३१	कैर्नैन्डज़	फ़र्नैन्डज़
११३	१८	राजनीतिक	राजनीतिज्ञ
११४	१४	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ
१३५	८	उपन्यास	उपन्यास
१३७	२४	मेकियावे ली	मेकियावे ली
१४०	५	फ़ॉर्सटर	फ़ॉर्सटर
१५६	८	फ़्रेविल्स	फ़्रेविल्स
१५७	१७	उत्तरार्ध	उत्तरार्ध
१५८	६६	बुचस	बुचस
१६०	१२	ऐतिहासिक	ऐतिहासिक
१६१	२६	निर्भयता पूर्वक	निर्भयतापूर्वक
१६२	८	के	कृा
१६२	३१	वर्क	वर्क
१६६	२६	फ़्रैमिस	फ़्रैसिस
१६६	३०	कवियों	कवियों के
१६७	२१	टार्विन	टार्विन
१७०	२०	दार्शनिक	दार्शनिक
१७०	२२	थानर्ड	थानर्ड

अपने भाई
डी० पी० खत्री
की
स्मृति
में

विषय-सूची

गुप्त संख्या

पहला-खण्ड—कविता

पहला अध्याय—इंग्लिश का प्राचीन समाज

१—५

साहित्य और समाज—इंग्लिश का आदि समाज—रोमन
शासित का प्रभाव—श्रुतन आक्रमण—प्राधुनिक साहित्य
का उद्गम ।

दूसरा अध्याय—पेंग्लो—सैक्सन—साहित्य

५—१२

जन्मकाल-पेंग्लो-मैनमन-गाथा-काल—'त्रियोबुलक'—'त्रियो-
बुलक' का वातावरण—'त्रियोबुलक' का कथानक—'त्रियो-
बुलक' का छन्द—'त्रियोबुलक' का महत्व—'विदसिथ'—
धार्मिक-काव्य की माया—धार्मिक-काव्य के लेखक—ओट-
मॉन—विनबुलक—श्रेष्ठ धार्मिक कविताएँ—गद्य-लेखक
—थरवॉन—वीट—थ्रान्कें ट—साहित्य-निर्माण—बुलक-
मटन ।

तीसरा अध्याय—चॉसस्पेन्सर-इन

१२—२४

चॉसपे की प्रतिभा—रचनाएँ—'बुक ऑव दि डचेंज',
'दि हाउम ऑव फेम', 'ट्रायलस एंग्ल क्रेसिट', 'दि लिजेण्ड
ऑव गुड विमैन', 'केंटरबरी टेल्स'—अन्य कवि-गाँवर—
लैंगलैण्ड—'दि विजन ऑव पियर्स लाउमन'—पश्चिमी
अपभ्रंश की कविताएँ—'पल', 'प्युरिट', 'पेशेन्स'—
हॉलियन संकलन—लिटगेट—ऑक्लॉव—स्ट्रीफिन हेज़—
स्कार्टलैण्ड के कवि—हेनरीसन—वायट-सरे—सांने ट छन्द
का महत्व—एटमसट स्पेन्सर—रचनाएँ—'दि शेपर्ड्स
कैलेण्डर', 'दि फ्लोयरी वीन'—स्पेन्सरियन-छन्द तथा गाँत
रचना—माइकिल ड्रेटन—सैमुयल डैनियल—जॉन डन—
जॉन ड्रवर्ट—हेनरी वॉन—क्रैसॉ—टॉमस फैरियू—
सकलिंग-लवलेस—हेरिक्—पेण्ड्रू मारवेल ।

चौथा अध्याय—मिल्टन—पोपजेम्स टागसन ।

२४—३५

मिल्टन का युग—जॉन मिल्टन—रचनाएँ—'कोमस',

पैराडाइज लॉस्ट, 'पैराडाइज रींगएड', 'मैममन एंगानिस्ट्रीज',
 'लिसिडेस'—सैमुएल वटलर—'धूर्तीव्रम'—एडमण्ड वॉल्फ
 —जॉन डेनहम—'कूपर हिल'—जॉन ट्राइडेन—रच-
 नाएँ—'ऐनस मिरैत्रिलिस', 'एवसलाम एन्ड एफिटोकैल',
 'रेलिजियो लेकार्डी', 'फ्रेविल्स', 'दि हाइन्ड एन्ड दि पैंगर'
 —एलेक्जान्डर पोप—रचनाएँ—'एमे ऑन मैन', 'रेप ऑव
 दि लॉक', 'डनसियाड', 'इपिसिल टु डॉक्टर आन्वथनाट',
 'पैस्टोरेल्स', 'विन्डसर फ़ॉरेस्ट'—सैमुएल जॉनसन—
 रचनाएँ—'लन्दन', 'दि वैनिटी ऑव धूमन विशे'ज',—
 ऑलिवर गोल्डस्मिथ—रचनाएँ—'दि ट्रेवेलर', 'दि
 डेज़रटेड विलेज'—जेम्स टॉमसन—'सॉजन्स'—विलियम
 कूपर—'टास्क', 'जॉन गिल्पिन', 'ऑल्ने हिम्म',
 'कास्टवे'—टॉमस ग्रे—'ब्राड', 'दि डिसेन्ट ऑव ओटिन',
 'एलिजी'—विलियम कॉलिन्स—'हाउ स्लीप दि ब्रैव',
 'ओड ऑन दि पाप्पुलर मुपरटिशन्स', 'ओड टु ईवनिंग'—
 क्रिस्टोफ़र स्मार्ट—विलियम ब्लेक—'सॉन्स ऑव इनोमन्स',
 'एवरलार्स्टिंग गॉस्पेल', 'प्रोफ़ेटिक बुक्स'—रॉबर्ट बर्न्स—
 -- जॉर्ज क्रेव—टॉमस चैटरटन ।

चौथा अध्याय—रोमैन्टिक-काल—वर्ड्सवर्थ—शेर्ली
 —कीट्स ।

३६-

रोमैन्टिक काल—विलियम वर्ड्सवर्थ—सैमुएल टेलर
 कोलरिज—'दि एशंन्ट मैरिनर', 'कुवला खाँ', 'क्रिस्टेवेल'—
 सर वॉल्टर स्कॉट—लॉर्ड बायरन—परसी विशे शेर्ली—
 जॉन कीट्स ।

छठा अध्याय—टेनिसन—आरनल्ड—ब्राउनिंग

४४-

फ़िट्जेरेल्ड—स्विनबर्न—मेरिडिथ—हार्डी ।

सैमुएल रोजर्स—टॉमस मूर—आल्फ्रेड टेनिसन—रॉबर्ट
 ब्राउनिंग—मैथ्यू आरनल्ड, एडवर्ड फ़िट्जेरेल्ड—डैन्टे
 ग्रेव्रील रोजेटी—चार्ल्स एलगर्नन स्विनबर्न—विलियम
 मॉरिस—क्रिश्चिना रोजेटी—'गॉवलिन मार्केट'—कॉवेन्ट्री
 पैटमोर—'दि एन्जिल इन दि हाउस', 'दि अननोन
 ईरॉस', — फ़्रैंसिस टॉमसन — जॉर्ज मेरिडिथ—टॉमस
 हार्डी—सी० एम० डाउटी—'दि डॉन इन ब्रिटेन'—

गैबर्ट क्रिनेज—'दि टेम्पेस्ट' जॉन गूडी—ऑस्कर वाइल्ड—'द प्रिन्स' आउगन—सागनेव आनमन—ए० ई० हाउसमन—रुगटे ब्रूफ—बॉल्डर दे ना मेयर—वेम्स एलगाय फॉकर—जॉन मेमफील्ड—'सेरल्ट' मेन्सो हॉपकिन्स—विनाफ्रुड ओपिन—टी० एम० इन्वियट—
 डब्ल्यू० सी० गेट्स ।

दूसरा अध्याय—नाटक

पहला अध्याय—धार्मिक नाटक—माली—निली ६३—७६

शारम्भ कान—भाट—धार्मिक उलय—नाटक मण्डलिया—
 नाटक संघ—'संसारकर्म' तथा 'स्ट्रुलूट्स'—'मोरे-
 लिटात'—जॉर्ज गैरसायन—निकलम डब्लू—'गेमर गैमर',
 गट्सव नीडिले—टॉमस गेफविल—टॉमस नाटिन—
 टॉमस फिट—जिम्स्टोकर माली—'टिम्बरलेन दि प्रेट',
 'डॉक्टर फ्राउस्टस', 'एटवर्ड मेफेन्ट',—जॉन निली—
 गैबर्ट गान—'एलफागाम', 'अरसेन्टो प्रयुरिओजो'
 जॉर्ज पीन—नाटकी का विंगेन—नाटक मण्डलियों का
 संरक्षण—संगमन ।



दूसरा अध्याय—शेक्सपियर—वेन—जॉनसन—काप्रीव
 —शेरिडन । ७६—१०२

गिलियम शेक्सपियर—रचनार्थ—प्रांतशासिक—द्वारा
 प्रचिन—दुरमान्त—सुधमान्त—नाट्य-कला ।
 वेन जॉनसन—'एदमंड मैन इन दिज ह्यूमर', 'बनपोना',
 'दि फ्लोरेंसिस्ट', 'दि गार्बोठ बुमन', 'वार्थालोग्यु फेयर',
 'नेजेनम', 'फेडिलाइन',—जॉर्ज चैपमन—'युसी डेम्बोथ'—
 टॉमस डेकर—टॉमस हेबुट—जॉन लफेचर—फ्रैसिंग
 नोमन्ट—जॉन वेच्यटर—सिरिल टूनर—टॉमस
 मिडिलटन—फ्रिलिप मैसिंजर—जॉर्ज फ्राकुहार—जॉन
 द्राइडेन—'थॉल फ्रॉर लव'—गे—रिचर्ड स्टॉल—जॉर्ज
 लिड्डो—गोल्डस्मिथ—रिचर्ड शेरिडन—रेस्टोरेशन काल
 का अन्त—

तीसरा अध्याय—हेनरी जोन्स—ऑस्कर वाइल्ड,
 गॉल्सवर्दी, शाँ

टी० डब्ल्यू० रॉबर्टसन—'कास्ट'—हेनरी आर्थर जेम्स—
 ए० डब्ल्यू० पिनेरो—ऑस्कर वाइल्ड—'लेडी विन्डर-
 मियर्स कैन', 'ए वुमन थ्रॉव नो इम्पार्टेन्स', 'पैन
 आइडियेल हसबेन्ड'—ग्रेनविल वाकर—जॉन गॉल्मवर्दी—
 'स्ट्राइफ', 'जस्टिस', 'लॉयल्टीज'—जॉन मेसफ़ाल्ट—ग्रेन्ट
 जॉन अरवाइन—थेट्स—जे० एम० सिंज—सीन थ्रो केंसी—
 जेम्स त्रेरी—जॉर्ज बर्नर्ड शॉ—थ्री लंजफ़ॉर प्युब्लिटीस',
 'ल्लेज लंजेन्ट ऐन्ड अन ल्लेजेन्ट', 'गंजर वारवरा', 'दि
 ऐपिल कार्ट', 'सेन्ट जोन', 'मैन ऐन्ड स्पूपरमैन', 'थ्रैक टु
 मेथुज़िला', 'पिगमेलियन'—टी० एम० इलियट—
 थ्रॉडेन—आइशरबुड ।

तीसरा खण्ड—उपन्यास

पहला अध्याय—सिड्नी, वनियन, डिफो १०३—११०

कथा-साहित्य का जन्म—सर फिलिप सिड्नी—'आर-
 केडिया'—जॉन लिली—'यूफ्यूस'—राबर्टग्रान टॉमस लॉज
 —'रोजेलिन्ड'—टॉमस डिलोनी—टॉमस नैश—'जैक
 विल्टन'—जॉन वनियन—रचनाएँ—'ग्रेस एवाउन्टिंग'
 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस'—डैनियल डिफो—रचनाएँ—'गॉविन्सन
 कूसो', 'कैप्टेन सिंगिलटन', 'रॉक्साना' ।

दूसरा अध्याय—रिचार्डसन—वालपोल—ऑस्टिन—

स्काट । १११—१२२

सैमुयल रिचार्डसन—रचनाएँ—'पामेला', 'ब्लैरिसा हाली',
 'सर चार्ल्स ग्रैन्डिसन'—हेनरी फ्रीलैंडिंग—रचनाएँ—
 'जोजेफ ऐग्डूज़', 'जोनैथन वाइल्ड', 'टॉम जोन्स'—
 टोविया स्माल्लेंट—रचनाएँ—'रॉडरिक रैन्डम', 'पेरीग्रोन
 पिक्ल', 'हम्फ्री क्लिकर'—लॉरेन्स स्टर्न—'ट्रि स्ट्रामशैन्डी',
 'सेन्टीमेन्टल जर्नी'—जॉनसन—'रेमेलस'—गोल्डस्मिथ—
 'विकर थ्रॉव बेकफ़ाल्ड'—फ़ौनी बर्नी—हेनरी मैकेन्जी—
 हॉरेन्स वालपोल—विलियम बेकफ़ाल्ड—मिसेज रैडक्लिफ़-
 लुई—मैट्टरिन—मिसेज शैली—जेन ऑस्टिन—सर
 वॉल्टर स्काट—रचनाएँ—'बेवर्ली', 'गाई मैनरिंग',
 'ओल्ड मोरेलेटी', 'दि ऐन्टीक्वेरी', 'रॉव राय'—टॉमस
 लव पार्काक ।

तीसरा अध्याय—डिकेन्स—ब्रॉन्टी—हार्टी—किपलिंग

—वेल्स

१२३—१४४

चार्ल्स डिकेन्स—रचनाएँ—'ग्रेन्वेल्ल वाइं हाउस', 'पिक-
विक पैपर्स', 'सर्जिनार टिमन्ट', 'डेविड कॉपरफ़ील्ड',
'टेल ऑफ़ द पिरीज'—थॉकरे—रचनाएँ—'वैनिटी फ़ैयर',
'पेनोन्सिंग', 'हेनरी एडमन्ड', 'दि न्यूकमस'—बुलवर
लिटन—चार्ल्स किंग्सले—ए. डब्ल्यू. किंगलेक—चार्ल्स
रीड—बेनमिन डिज़र्रेला—मिसेज़ गेस्केल—विल्की
गॉल्डस्मिथ—थॉर्लट ब्रॉन्टी—जॉर्ज एनियट-रेन्थनो ट्रॉलप—
जार्ज मेरिटिथ—हेनरी जेम्स—टॉमस हार्टी—समुएल
बटलर—गवर्ट लुडोन्टविन्सन—जॉर्ज सिंगिंग—किपलिंग
—गॉल्डस्मिथ—एच. जी. वेल्स—जोसेफ़ फॉर्नर—
जॉर्ज मूर—डब्ल्यू. सर्जमेन्ट मॉग—डॉ. एम. फॉर्मेटर—
सर ए. पॉलपोल—ग्रीस्टली—टी. एच. लॉरेन्स—
आर्लटन रकले—जैम्स स्वायम ।

चौथा खण्ड—गद्य

पहला अध्याय—कैक्सटन, टिन्टेल, वेकन, ब्राउन

• हाइटेन

१४७—१५८

अनुवाद युग—सुन्न जीवन चरित्रों—आ अनुवाद—
रेजिनाल्ड पीकोक—विलियम कैक्सटन—लार्ड वर्नेम—
वाइविल का अनुवाद—टिन्टेल तथा क्वेंटेल—पॉपम—
रिचर्ड ड्रकर—सर रोज़र पेंसकम—सर टॉमस नार्थ—
हॉलिनशेट—रिचर्ड डेक्लिड—रायट वर्डन—फ्रैमिस चेकन—
सर टॉमस ब्राउन—जेरेमी टेलर—जॉन मिल्टन—आइजक
वॉल्टन—'कम्प्लीट ग्लोसरी'—जान हाइटेन—हॉक्स—जॉन
लॉक—सैम्युएल पॉप—एडवर्ट हाइट—जॉनथन
स्विफ्ट ।

दूसरा अध्याय—जॉनसन, कोलरिज, डार्विन, रस्किन,

चेस्टरटन

१५९—१७२

जॉर्ज फ. बटलर—ग्रनार्ड मॅन्टविल—जॉर्ज चकले—
एडवर्ट गिबन—डॉक्टर जॉनसन—ऑलिवर गोल्ड-
स्मिथ—एडमन्ड बर्क—जे. क्लर—जॉन वेज़ली—हॉरेस

वॉलपोल—लार्ड चेरटरफ़ाल्ड—जेम्स मैकग्रासन—‘ग्रॉमि-
 यन’—कोलरिज—‘ग्रयोत्रेफ़िया लिटररिया’—कीट्स-
 वायरन—लैम्ब—विलियम हेज़लिट—डॉमस डि फ़िन्सी—
 विलियम क्वेट—वॉल्टर संवेन लैन्डॉर—‘काननमैगन्स’—
 सामयिक पत्र—चार्ल्स टार्निन—मेकॉले—जेनरी न्यूमन
 जॉन रस्किन—मैथ्यू प्रारनल्ट—वॉल्टर पेटर—चा० हे०
 चे स्ट्रटन—लिटन स्ट्रैची ।

दो शब्द

यूरोप के साहित्यिक इतिहास में अंग्रेजी भाषा तथा अंग्रेजी साहित्य का विशिष्ट स्थान है। इस साहित्य ने अपने निर्माण में, यद्यपि अपने प्रादुर्भाव के देशों का ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव ग्रहण किया परन्तु अंग्रेजों ने अपना निजी व्यक्तित्व न छोड़ा। फ्रांस, जर्मन, इटली, रूस, अमेरिका तथा अन्य देशों के राजनीतिक, आर्थिक तथा राष्ट्रीय भावनाओं तथा विचार-शैली को अंग्रेजी साहित्य ने अपने से इतना घुला भिना लिया है कि उस सृष्टिना में वे उन्हें पृथक् कर सके हैं।

यूरोप के साहित्यिक महागणियों ने अंग्रेजी साहित्य की इस विशेषता को भूरी भूरी प्रशंसा की है। जर्मन लेखक गर्टा ने तो यहाँ तक कहा था कि 'अंग्रेजी साहित्य तथा अंग्रेजी भाषा में आधा विचार-माग्न लट गता है; उसके ही प्रभाव में जर्मन साहित्य ने अपनी संप्रतिष्ठा बनाई है।' पूर्व में, भारतीय हिन्दी साहित्य पर, मद्रास की छाया बहुत दिनों तक रही। उसी छाया में हिन्दी-साहित्य फूला फूला परन्तु आधुनिक काल में मस्कृत का तबल हिन्दी-साहित्य निर्माण के लिये मगना गया और अन्य भाग्यों ने उसका स्थान ले लिया। अंग्रेजी साहित्य हा इस नव विधान की मूल धारा प्रवाह होनी है। इस साहित्य के प्रभाव का प्रथम दर्शन बंगला साहित्य में मिलता है। शायद यह अनुक्ति न होगी कि कवि-सम्राट् रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा बंकिमचन्द्र चटर्जी जैसे महान लेखकों की लेखन-शैली में अंग्रेजी साहित्य का स्पष्ट छाया दिखलाई देती है। बंगला साहित्य के साथ-साथ मराठी तथा गुजराती साहित्य ने भी अंग्रेजी साहित्य के प्रभावों को व्यक्त और अत्यन्त रूप से प्रदग्ग कर अपना साहित्य निर्मित किया है। आजकल हिन्दी साहित्य-जगत भी अंग्रेजी साहित्य की विचार-शैली, लेखन-शैली तथा शब्द-भण्डार से अपना अंगर कोप भर रहा है। दिन पर दिन वह कोप भरा पुरा हो रहा है।

भारतीय साहित्य के सभी अंगों पर अँग्रेजी साहित्य-सूर्य की प्रखर किरणें पड़ी हैं। दर्शन तथा राजनीति, समाज-शास्त्र तथा अर्थ-शास्त्र, सभी ने कुछ न कुछ मात्रा में अँग्रेजी आदर्शों को या तो सराहा है या अपनाया है। हमारी साहित्यिक विचार-धारा तो वास्तव में अँग्रेजी साहित्यिक आदर्शों की पूर्ण अनुयायी हो रही है। उपन्यास और नाटक, कहानी और एकांकी, काव्य और गद्य, गीत तथा लेख, आलोचना तथा शैली, दिन प्रतिदिन अँग्रेजी साहित्य की ही बहुमुखी प्रतिभा के सहारे अपना मार्ग ढूँढ़ रहे हैं।

भारतीय जीवन पर अँग्रेजी आचार-विचार, भाव-विनिमय तथा रहन-सहन ने गहरा प्रभाव डाला है। राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में तो यह प्रभाव सर्वत्र ही विदित है। आधुनिक शिक्षा में यद्यपि अँग्रेजी भाषा का महत्व बहुत कुछ घट रहा है और घटेगा परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि अँग्रेजी साहित्य का प्रभाव बहुत दिनों तक स्थायी रहेगा। इसका कारण यह है कि शिक्षा-माध्यम से अँग्रेजी भाषा हटकर हिन्दी को स्थान तो एक दिन अवश्य ही देगी, परन्तु वह विद्यार्थियों और साहित्य मर्मजों और अन्वेषकों की उत्सुकता इतनी अधिक बढ़ाती रहेगी कि कदाचित् उसका प्रभाव और भी गहरा होता जायगा। विदेशों से विचार विनिमय और आदान-प्रदान में भाषा फिर भी उपयोगी सिद्ध होगी और शायद साहित्य निर्माण में उसका विशिष्ट स्थान रहेगा। परन्तु यह कहना कि अँग्रेजी भाषा और अँग्रेजी साहित्य ही संसार में सर्वश्रेष्ठ है भारी भूल होगी। प्रत्येक देश को अपनी भाषा और अपना साहित्य ही श्रेष्ठ जंचेगा; और यह ठीक भी है, क्योंकि बिना इस भावना के न तो भाषा प्रगति कर सकती है और न साहित्य ही उत्पन्न हो सकेगा। रूसी, फ्रांसीसी, जर्मन, अँग्रेज सभी अपने अपने साहित्य की आराधना और सराहना करते हैं, मगर साहित्य मर्मज अथवा आलोचक को तो ऐसी असाहित्यिक विचारा धारा से अलग रह कर उनकी श्रेष्ठता की परख करनी चाहिये।

यदि इस दृष्टि से देखा जाय तो सभी देशों के साहित्य में कुछ न कुछ अपूर्व श्रेष्ठता मिलेगी। जर्मन साहित्य में दर्शन उच्च कोटि का है; शायद अन्य साहित्यों में संस्कृत दर्शन-साहित्य ही उसकी समता कर सके;

क्रांतीको साहित्य में उष्ण होट्टी की सुभान्तकी तथा उन्हाड प्रहसनो का विरचन है; कर्म साहित्य में उफनप्रस तथा कशानी कला की पगकाष्टा पहंच रही है, पन्तु साहित्य के अन्य अंगों की भंगना हम यदि जर्मन, फ्रांसीसी तथा रूसी साहित्य में पाना चाहे तो यह सम्भव नहीं। अंग्रेजी साहित्य में ही सम्भवतः साहित्य के सभी अंगों की समुचित छुटा हम देख पायेंगे। हम इस साहित्यक प्रानाद में तथा ग्यान दर्शन, इतिहास, वाद्य, नाटक, उपन्यास, गद्य, आलोचना सभी का व्यापक दर्शन पायेंगे। मिल तथा लॉकः बर, गिबन, कार्लोइल; चॉसर, मिल्टन, बर्ट्रान्दयः शेक्सपियर शेरिदन, शॉ; फॉल्लिंग, स्काट, डिफेंसः वेम्न, रॉसनन, रॉसिन, ट्राय्बेन, ग्रानगल्ट, पेटर, हम साहित्याकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं।

अंग्रेजी साहित्य की हम बहुमूर्ती प्रतिभा में ही उसके अमरत्व के बीज हैं। इस साहित्य के प्रभाव की उचित गति में सम्भरने के लिए मिया देशाटन और अन्वयन के बीड़े और साधन नदी। अन्वयन ही शायद हमसे सम्बन्ध युक्ति है जिसके द्वारा हम पर बड़े ही समार के अनेक देशो का सम्पूर्ण दर्शन कर सकते हैं। प्रस्तुत पुस्तक भी इस विचार में लिपी गई है और इसी ध्येय की पूर्ति, ऐसा विश्वास है, करेगी।

हिन्दी भाषा में भारत के अन्य साहित्यों अंगला, मराठी, गुजराती का अविश्व प्रस्तुत है, किन्तु अब तक अंग्रेजी साहित्य का इतिहास कदाचित् नहीं लिखा गया। उन विद्याधियों तथा साहित्य-नैतियों की यह पुस्तक प्रिय हो सकेगी जो अंग्रेजी साहित्य की विचार भाग्यो और अंग्रेजी कलाकारों का परिचय मात्र-भाषा के द्वारा ही प्राप्त करना चाहेंगे। पाठकों को साहित्य के चार प्रमुख अंगों—वाद्य, नाटक, उपन्यास तथा गद्य का सम्पूर्ण तथा पृथक-पृथक परिचय देने के लिए इसके चार भाग कर दिए गए हैं। अंग्रेजी साहित्य के श्रेष्ठ इतिहासकारों—लेखी, नेन्टुम्वेरी, इवन्स, स्ट्रांग तथा लॉग सबसे पूरी सहायता ली गई है और केवल थोड़े पृष्ठों में ही तथासाध्य साहित्यिक धाराओं और उनके पोषक और प्रवर्धक कलाकारों का परिचय देने की चेष्टा की गई है।

आशा है इस पुस्तक से हिन्दी साहित्य जगत की एक कमी कटाचित् पूरी होगी। तब तक श्रेष्ठ विद्वान हिन्दी का माध्यम चुन कर अंग्रेजी

साहित्य के एक विशाल और सम्पूर्ण इतिहास की रचना कर उसका भण्डार भर देंगे ।

मैं अपने मित्र डॉक्टर लक्ष्मीसागर वाष्णीय का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने समयानुकूल अनेक रूप से इस पुस्तक के लिखने में सहायता दी । हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, के ही सौजन्य से यह पुस्तक पाठकों के सम्मुख है ।

इलाहाबाद युनिवर्सिटी,
अक्टूबर १९४७

एस० पी० खन्ना

पहला खण्ड

कविता

पहला अध्याय

इंगलिम्बान का प्राचीन समाज

साहित्य और समाज—समाज की उत्पत्ति का क्या नाम दे सकते हैं। समाज का संज्ञादान का क्या अर्थ है। और समाज के सभी लोगों का पूर्ण निम्न साहित्य के प्राचीनभिन्नः सत्य है। यह हम किसी देश के साहित्य की पूर्ण रूप में समझना चाहते हैं। हमें उस देश के समाज का समुचित अध्ययन करना पड़ेगा क्योंकि समाज के ही आचार विचार, रीति-रिवाज और मूल-मूल्य, साहित्य में लक्षित होते हैं।

इंगलिम्बान का आदि समाज—इंगलिम्बान के आदि निवासियों का समाज भी अन्य पुराने देशों के समाज परास्य तथा वर्ध था। देश की आदि जाति का नाम 'केट' था और इसी की दो उपजातियों ने पश्चिमी यूरोप पर अपना अधिकार जमा रखा था। 'केट' जाति की यों तो अन्य उपजातियाँ भी परन्तु मुख्य केवल 'गैल' तथा 'मिमरी' थी। 'गैल' एक नि-पुत्रक थे उनके स्थानिय ने भी प्रेम था और ऐतिहासिक दृष्टि में वे कुछ निम्न श्रेणी के जर्मन जाति के वंशज प्रतीत होते हैं। इन्होंने उत्तर की अन्य उपजातियों से कुछ कम उन्नें हराया परन्तु धीरे-धीरे वे भी उन्हीं में मूल-गैल गए।

'मिमरी' जाति का उत्थान 'गैल' जाति के बाद हुआ। ये लोग सामाजिक दृष्टि में अधिक अग्रगण्य थे और इनकी सभ्यता निकृष्ट कोटि की थी। ये भ्रमण करते, शरीर पर मोदने धनाते और माताहार करने थे और ये स्वतंत्र से अनभिन्न थे। कदाचित् फिनीशिया की प्राचीन व्यापारी जाति ने इनका सम्पर्क हुआ होगा क्योंकि ये व्यापारी कॉर्नलैन्ड के टीन की खदानों के पास ही व्यापार करते थे। यदि किसी विदेशी जाति से इनका सम्बन्ध प्रमाणित है तो वह रोमन जाति से है।

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

रोमन जाति का प्रभाव—रोमन लोगों ने ५५५ पूर्व ईसा में इंगलिस्तान पर आक्रमण किया। रोमन सेनापति जूलियस सीज़र ने गेल जाति को फ्रांस में पूर्णतया पराजित कर वहाँ अपनी विजय पताका फहराई। फ्रांस के पश्चिमी भाग से उन्होंने इंगलिश चैनल के पार जत्र दृष्टि डाली तो इंगलिस्तान के कुछ ऊँचे पर्वत शिखर उन्हें दिखलाई पड़े। उन्होंने सोचा शायद पृथ्वी के विस्तार का अन्त वहीं हो और इंगलिस्तान पर धावा बोल दिया। रोमन सेनापति की विजय हुई और उन्होंने सारा देश अपने आधीन कर लिया।

इस समय इंगलिस्तान का राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन 'गेल' जाति के ही समान था। रहन-उहन, रीत-रिवाज भी उन्हीं के समान थे। दोनों की बोलियों में भी विशेष समानता थी।

रोमन लोगों ने यद्यपि इंगलिस्तान पर अधिकार तो कर लिया परन्तु वहाँ के निवासियों पर पूर्ण अधिकार जमाने में एक शताब्दी का समय लग गया। अन्त में रोमन सेना की श्रृंखला तथा उसके विशाल संगठन की जीत हुई। इंगलिस्तान रोमन साम्राज्य का एक प्रदेश बना लिया गया। इस साम्राज्य का विस्तार स्कॉटलैन्ड के नीचे मैदानों और डोव-स्ट्रेट से लेकर फ्रथ ऑव फ़ोर्थ तक था। परन्तु वेल्स की कुछ पहाड़ियों पराजित न हो पाई थी। ४८० वर्षों तक इंगलिस्तान की यही दश रही।

रोमन लोगों ने इस समय के अनन्तर बहुत सी सड़कें बनाईं और बहुत से नगर बसाए। ये सड़कें अब भी हैं परन्तु इनके पुराने नाम बदल दिए गए हैं। इस समय की सबसे लम्बी सड़क अरमाइन स्ट्रैट अब ओल्डनॉर्थ रोड के नाम से विख्यात है। इन सड़कों के कारण नगरों में सम्पर्क बढ़ा और इस सम्पर्क के कारण सारे देश में रोमन जाति की लैटिन भाषा का भी प्रयोग बढ़ा। फ्रांस में तो लैटिन देश भाषा का स्थान ले लिया था। अब इंगलिस्तान में भी उस प्रचार बढ़ने लगा। इस प्रचार के कारण लैटिन ही सभ्य भाषा ली गई परन्तु दूसरी ओर वेल्स और कम्ब्रिया की 'केल्ट' जाति स्कॉटलैन्ड की 'पिक्ट' जाति के लोग दुर्भेद्य पर्वत-श्रेणियों के पीछे अस्वल्प शासन कर रहे थे। रोम के सैनिक इनको परास्त न कर प ५ लतः इन जातियों ने अपनी विशेषताएँ न छोड़ी। जत्र-जत्र उन्हें

सर मिलना ये निकट के प्रदेशों पर तथा अपनी। परन्तु इन जंगली जातियों की भाषा भी लैटिन के प्रभाव से मुक्त न रह सकी। अनेक स्थानों के रोमन नाम उन्हींके आसपास। आधुनिक वेल्स की बंगली में अनेक लैटिन शब्द प्राकृतिक रूप में हैं। लैटिन भाषा भी इन पर पूर्ण रूप से।

इन अंगनी जातियों ने अपनी एक प्रजात कोली बना ली थी और रोमन सभ्यता से अपने को पृथक् रखने का प्रयत्न करते थे। अपने उन स्वयं देशवासियों को भी उन्होंने क्षलज ही रखा जो रोमन प्रदेशों में रहते थे। इनकी लूटमार इतनी बढ़ी कि रोमन लोगों की अनेक फ़ौजी शक्तों के अन्तर्गत और 'भार्थमिन्टिन वॉल' बनानी पड़ी। परन्तु इन रोमन प्रदेशों के रहने वालों को शान्ति न मिली। वे रोम से महानता की प्रतीक्षा करते थे और स्वयं अपनी रक्षा जंगली जातियों के विरुद्ध नहीं कर सकते थे और जब जब रोमन सेनाएँ उनकी रक्षा के लिए आतीं तब तब वे जंगली जातियों की युद्ध अपनी निरमं जनता को बड़ा बड़ा पीता था। रोमन प्रदेशों के रहने वाले, इनके दिनों तक आश्रय रहने के कारण साहसी हो गए थे। दानव्य ने उनके कारगर बना दिया था और उनकी राजधानी निर्भीकता से गई थी। कुछ समय तक तो रोम की सरकार ने इन प्रदेशों की सहायता की परन्तु कुछ दिनों बाद वे अपने प्रदेशों को न संभाल सके। रोमन साम्राज्य एक कठपुतली के समान हो रहा था और सभी साहसी सेनानायक उम्र पर अधिकार पाने के स्वप्न देखते थे। रोमन स्वयं पतित तथा दुर्बल हो गई थे और ऐसे समय में इंगलिस्तान की जंगली जातियों को प्रतिशोध लेने का सुनहरा अवसर मिला।

ये जातियाँ रोमन प्रदेशों में बहुत रुढ़ थी क्योंकि उन्होंने रोमनों की दासता प्रह्ला कर ली थी। इन्होंने भी अधिक वे इस बात पर क्रोधित थी कि इन प्रदेशों से जंगली जातियों को परास्त करने में रोमनों का महर्षे क्षम बढाया था। 'पिक्ट' और 'स्कॉट' जाति के लुटेरे नीचे घाटियों में अचरित पाकर उतर आते और अपने देशवासियों के घाल का पूरा प्रतिशोध लेते थे। अपनी लूटमार तथा आक्रमणों में इन्होंने प्रदेश के प्रदेश उजाड़ दिए और रोमन सभ्यता का एक भी स्मारक नहीं खड़ा रहने दिया। इस लूटमार और रक्तपात

भव, कभी हास्य, कभी आशा, कभी निराशा के भाव उदय तथा प्रसन्न होते रहते थे।

इस समय वेल्स के निवासियों में धार्मिक भावनाओं का क्लेश उमड़ पड़ा। जिनमें ग्लानि तथा विपन्न दोनों की संकष्ट भावना थी। परादियों के अन्य निवासियों ने वेदना पूर्ण कर्मण्य रम ने आधुनिक नाट्य को जन्म दिया।

वेल्स, तथा अन्य स्कटलैंड शैलियों ने अग्ने की लोडन का प्रभाव में यथामुहूर्त दूर रखा। उन्हीं शैलियों ने आधुनिक व्यञ्जना का बीज था जिसे नॉर्वेजी मनाब्दा के लोडन के मशॉरिन तथा मरमाविन करके साहित्य रचना की।

—:०:—

दूसरा अध्याय

पेंग्लो-सैक्सन-साहित्य

जन्म-काल— अंग्रेजी साहित्य का प्रारम्भ उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में मानने हैं। जैसे जो चॉसर के पद्यों के अन्तर्गत है; शताब्दियों का साहित्य प्राप्त है किन्तु इस साहित्य में एक धारण कुछ अनभिज्ञ है। इसका कारण यह है कि इस साहित्य का उदय-पाटन दुर्लभ है और इसकी भाषा गितान्त विदेशी जान पड़ता है। आधुनिक विज्ञानी चॉसर की रचनाएँ सरलता ने पठन उमर शर्ष लगा लेता है परन्तु चॉसर के पूर्व की साहित्यिक रचनाएँ जिनका अनुवाद-रूप में ही प्राप्त हैं।

पेंग्लो-सैक्सनसाधा-काल—नॉर्मन आक्रमण के पूर्व इंग्लैंड के इतिहास में दो विशेष घटनाएँ घटित हुईं, जिनके कारण देश के साहित्य पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। पहली घटना थी, पैंग्लिन्, सैक्सन तथा उट जातियों पर नॉर्मन जाति का आक्रमण, जिनके अंग्रेजी शक्ति दाग की नींव डाली। ये जातियाँ अधिक सभ्य न थीं और जिनके लूट-मार और आक्रमण पर प्रस्तुत होतीं तो और वर्षरता प्रदर्शित करतीं। ये वर्षर जातियाँ ईसाई धर्म से अनभिज्ञ थीं। दूसरी घटना १०६६ ई० में हुई जब कि मन्त ऑगस्टाइन ने ईसाई धर्म की धताका फलरुटे और अंग्रेज जाति को ईसाई-मनावलम्बी बनाया। वेल्स प्रदेश की उट जाति ने सबसे पहले

नामक काव्य के दो सफ़ट खंड जो मूलरूप में 'दियोबुल्क' के समान रहे होंगे १८६० ईसवी में कोपेनोगन के राज-पुस्तकालय में मिले ।

'दियोबुल्क' का वातावरण—'दियोबुल्क' प्रपञ्ची ग्राहित्त स प्रथम शब्द है परन्तु न तो नायक का और न वातावरण का इंगलिस्तान में कोई सम्बन्ध प्रतीत होता है । यद्यपि ऐंगित्त ने उस कथानक को इस लिम्बान में प्रचलित किया किन्तु पर भी यह इनके जन्म में सम्बन्धित नहीं । वह कथानक नैन्डिनेविया देश का है । इसका एक कारण यह भी कि यद्यपि जर्मनों को अनेक उपजातियाँ प्राप्त में लड़ा करती थीं फिर भी वे लोग एक दूसरे ही भावर-भाषाओं और कथानकों में अन्वि प्रकृत नहीं करते थे वरन् उनकी शक्ति अपना लेते थे । उनके कवि महान् जर्मन जाति के रस्य देवते और उनके गीत गाते थे ।

'दियोबुल्क' का कथानक—'दियोबुल्क' की कहानी रोचक है । इस जाति के न्यायप्रिय नरेश गधर की ब्रैट्ल नामक देव अत्यन्त कष्ट वे रण था । और दियोबुल्क अपने सुने हुए सदावशों के साथ, नगर में आकर ब्रैट्ल को पराम्न करना है और ब्रैट्ल की माता को भी जो समुद्र की सुन्दरी है भीत के घाट उतार कर शान्ति स्थापित करता है । कथानक के दूसरे खण्ड में, 'दियोबुल्क' राज्य-शासन करना है, परन्तु वह अत्यन्त बुद्ध है । उसे राज्य-रत्ता में अग्नि-वर्षा करने हुए देवों ने युद्ध करना पड़ता है; परन्तु अन्त में स्वयं मृत्यु को प्राप्त होता है और उसकी प्रजा मरण-क्रिया में भाग लेकर शोकाकुल हो निलाप करती है । यही कथानी समान ही जाती है । कई समालोचकों की दृष्टि में कथानक महत्त्वपूर्ण है परन्तु 'दियोबुल्क' में उस समय की धारणा, कार्य-परायणता, सामाजिक नियम, योद्धाओं के आदर्श, उपहारों का आदान-प्रदान, मुगपान, और-भाषा-गान का बड़ा रोचक परिचय मिलता है ।

'दियोबुल्क' का छन्द—समस्त एंग्लो-संस्कृत कविताओं के समान 'दियोबुल्क' भी लम्बी पंक्तियों में रचित है । पंक्तियाँ मुक्तक हैं और कहीं-कहीं नहीं वरन् प्रत्येक पंक्ति में अनुप्रास की छुटा है । कवि का भाषा-योग विस्तृत है और उनमें विशेष शब्दावली है । चमत्कार के लिये कवि प्रायः शब्दों से चित्र व्यंजना करता है । "समुद्र" उसके लिये "हंसमार्ग" है और "मानव-शरीर" "आस्थ-प्रासाद" । यद्यपि कथानक ईसाई-धर्म में अर्दाचित्त जर्मन उपजातियों से सम्बन्धित है तो भी

नामक काव्य के दो सफ़ट खंड जो मूलरूप में 'दियोबुल्क' के गमान से होंगे १८६० ईसवी में कोपेनोगन के राज-पुस्तकालय में मिले ।

'दियोबुल्क' का वातावरण—'दियोबुल्क' प्रपञ्ची ग्राहित्त स प्रथम चरित्र है परन्तु न तो नायक का और न वातावरण का इंगलिस्तान में कोई सम्बन्ध प्रतीत होता है । यद्यपि ऐंगित्त ने उस कथानक को इस लिम्बान में प्रचलित किया किन्तु पर भी यह इनके जन्म में सम्बन्धित नहीं । वह कथानक नैन्डिनेविया देश का है । इसका एक कारण यह भी कि यद्यपि जर्मनों को अनेक उपजातियाँ प्राप्त में लड़ा करती थीं फिर भी वे लोग एक दूसरे ही भावर-भाषाओं और कथानकों में अन्वि प्रकृत नहीं करते थे वरन् उनकी शक्ति अपना लेते थे । उनके कवि महान् जर्मन जाति के रस्य देवते और उनके गान गाते थे ।

'दियोबुल्क' का कथानक—'दियोबुल्क' की कहानी रोचक है । इस जाति के न्यायप्रिय नरेश पाथगर की ब्रैट्ल नामक देव अत्यन्त कष्ट वे रण था । और दियोबुल्क अपने सुने हुए सदावशों के साथ, नगर में आकर ब्रैट्ल को पराम्न करना है और ब्रैट्ल की माता को भी जो समुद्र की सुन्दरी है भीत के घाट उतार कर शान्ति स्थापित करता है । कथानक के दूसरे खण्ड में, 'दियोबुल्क' राज्य-शासन करना है, परन्तु वह अत्यन्त युद्ध है । उसे राज्य-रक्षा में अभि-वर्षा करने हुए देवों ने युद्ध करना पड़ता है; परन्तु अन्त में स्वयं मृत्यु को प्राप्त होता है और उसकी प्रजा मरण-क्रिया में भाग लेकर शोकाकुल हो निलाप करती है । यही कथानी समान ही जाती है । कई समालोचकों की दृष्टि में कथानक महत्त्वपूर्ण है परन्तु 'दियोबुल्क' में उस समय की धारणा, कार्य-परायणता, सामाजिक नियम, योद्धाओं के आदर्श, उपहारों का आदान-प्रदान, मुगपान, और-भाषा-गान का बड़ा रोचक परिचय मिलता है ।

'दियोबुल्क' का छन्द—समस्त एंग्लो-संस्कृत कविताओं के गमान 'दियोबुल्क' भी लम्बी पंक्तियों में रचित है । पंक्तियाँ मुक्तक हैं और कहीं-कहीं नहीं वरन् प्रत्येक पंक्ति में अनुप्रास की छटा है । कवि का भाषा-योग विस्तृत है और उनमें विशेष शब्दावली है । चमत्कार के लिये कवि प्रायः शब्दों से चित्र व्यंजना करता है । "समुद्र" उसके लिये "हंसमार्ग" है और "मानव-शरीर" "आस्थ-प्रासाद" । यद्यपि कथानक ईसाई-धर्म में अर्दाचित्त जर्मन उपजातियों से सम्बन्धित है तो भी

नामक काव्य के दो सफ़ट खंड जो मूलरूप में 'दियोबुल्क' के गमान से होंगे १८६० ईसवी में कोपेनोगन के राज-पुस्तकालय में मिले ।

'दियोबुल्क' का वातावरण—'दियोबुल्क' प्रपञ्ची ग्राहित्त स प्रथम शब्द है परन्तु न तो नायक का और न वातावरण का इंगलिस्तान में कोई सम्बन्ध प्रतीत होता है । यद्यपि ऐंगित्त ने उस कथानक को इस लिम्बान में प्रचलित किया किन्तु पर भी यह इनके जन्म में सम्बन्धित नहीं । वह कथानक नैन्डिनेविया देश का है । इसका एक कारण यह भी कि यद्यपि जर्मनों को अनेक उपजातियाँ प्राप्त में लड़ा करती थीं फिर भी वे लोग एक दूसरे ही भावर-भाषाओं और कथानकों में अन्वि प्रकृत नहीं करते थे वरन् उनकी शक्ति अपना लेते थे । उनके कवि मदान् जर्मन जाति के रस्य देवते और उनके गान गाते थे ।

'दियोबुल्क' का कथानक—'दियोबुल्क' की कहानी रोचक है । इस जाति के न्यायप्रिय नरेश पाथगर की ब्रैट्ल नामक देस्य अत्यन्त कष्ट के रण था । और दियोबुल्क अपने सुने हुए सदावशों के साथ, नगर में आकर ब्रैट्ल को पराम्न करना है और ब्रैट्ल की माता को भी जो समुद्र की सुन्दरी है भीत के घाट उतार कर शान्ति स्थापित करता है । कथानक के दूसरे खण्ड में, 'दियोबुल्क' राज्य-शासन करना है, परन्तु वह अत्यन्त युद्ध है । उसे राज्य-रक्षा में अभि-वर्षा करने हुए देवों ने युद्ध करना पड़ता है; परन्तु अन्त में स्वयं मृत्यु को प्राप्त होता है और उसकी प्रजा मरण-क्रिया में भाग लेकर शोकाकुल हो निलाप करती है । यही कथानी समान ही जाती है । कई समालोचकों की दृष्टि में कथानक महत्त्वपूर्ण है परन्तु 'दियोबुल्क' में उस समय की धारणा, कार्य-परायणता, सामाजिक नियम, योद्धाओं के आदर्श, उपहारों का आदान-प्रदान, मुगपान, और-भाषा-गान का बड़ा रोचक परिचय मिलता है ।

'दियोबुल्क' का छन्द—समस्त एंग्लो-संस्कृत कविताओं के गमान 'दियोबुल्क' भी लम्बी पंक्तियों में रचित है । पंक्तियाँ मुक्तक हैं और कहीं-कहीं नहीं वरन् प्रत्येक पंक्ति में अनुप्रास की छुटा है । कवि का भाषा-योग विस्तृत है और उनमें विशेष शब्दावली है । चमत्कार के लिये कवि प्रायः शब्दों से चित्र व्यंजना करता है । "समुद्र" उसके लिये "हंसमार्ग" है और "मानव-शरीर" "आस्थ-प्रासाद" । यद्यपि कथानक ईसाई-धर्म में अर्दाचित्त जर्मन उपजातियों से सम्बन्धित है तो भी

नामक काव्य के दो सफ़ट खंड जो मूलरूप में 'दियोबुल्क' के समान रहे होंगे १८६० ईसवी में कोपेनोगन के राज-पुस्तकालय में मिले ।

'दियोबुल्क' का वातावरण—'दियोबुल्क' प्रपञ्ची ग्राहित स प्रथम शब्द है परन्तु न तो नायक का और न वातावरण का इंगलिस्तान में कोई सम्बन्ध प्रतीत होता है । यद्यपि ऐंगिलिस ने उस कथानक को एंग लिस्तान में प्रचलित किया किन्तु पर भी यह इनके जन्म में सम्मिलित नहीं । वह कथानक नैन्डिनेविया देश का है । इसका एक कारण यह था कि यद्यपि जर्मनों को अनेक उपजातियाँ प्राप्त में लड़ा करती थीं फिर भी वे लोग एक दूसरे ही भावर-भाषाओं और कथानकों में अन्विष्ट प्रकृत नहीं करते थे वरन् उनकी शक्ति अपना लेते थे । उनके कवि महान् जर्मन जाति के रस्य देखते और उनके गाँव गाते थे ।

'दियोबुल्क' का कथानक—'दियोबुल्क' की कहानी रोचक है । इस जाति के न्यायप्रिय नरेश आधर की ब्रैट्ल नामक देस्य अत्यन्त कष्ट वे रण था । घोर दियोबुल्क अपने सुने हुए सदावशों के साथ, नगर में आकर ब्रैट्ल को पराग्न करना है और ब्रैट्ल की माता को भी जो समुद्र की सुन्दरी है भीत के घाट उतार कर शान्ति स्थापित करता है । कथानक के दूसरे खण्ड में, 'दियोबुल्क' राज्य-शासन करना है, परन्तु वह अत्यन्त युद्ध है । उसे राज्य-रक्षा में अभि-वर्षा करने हुए देस्यों ने युद्ध करना पड़ता है; परन्तु अन्त में स्वयं मृत्यु को प्राप्त होता है और उसकी प्रजा मरण-क्रिया में भाग लेकर शोकाकुल हो विलाप करती है । यही कथानी समान ही जाती है । कई समालोचकों की दृष्टि में कथानक महत्त्वपूर्ण है परन्तु 'दियोबुल्क' में उस समय की धारणा, कार्य-परायणता, सामाजिक नियम, योद्धाओं के आदर्श, उपहारों का आदान-प्रदान, मुगपान, और-भाषा-गान का बड़ा रोचक परिचय मिलता है ।

'दियोबुल्क' का छन्द—समस्त एंग्लो-संस्कृत कविताओं के समान 'दियोबुल्क' भी लम्बी पंक्तियों में रचित है । पंक्तियाँ मुक्तक हैं और कहीं-कहीं नहीं वरन् प्रत्येक पंक्ति में अनुप्रास की छुटा है । कवि का भाषा-योग विस्तृत है और उनमें विशेष शब्दावली है । चमत्कार के लिये कवि प्रायः शब्दों से चित्र व्यंजना करता है । "समुद्र" उसके लिये "हंसमार्ग" है और "मानव-शरीर" "आस्थ-प्रासाद" । यद्यपि कथानक ईसाई-धर्म में अर्दाचित्त जर्मन उपजातियों से सम्बन्धित है तो भी

शैशव तथा विद्याभ्ययन में दक्षता प्राप्त की। उनका वंश मध्यम वर्ग का था जिस पर भी उन्होंने दर्वीर जीवन का विशेष-रूप में अध्ययन किया था और साधारण मानव-समाज को बहुत सूक्ष्म दृष्टि से देखा था। कदाचित् ही कोई साहित्यिक पुस्तक हो जिसका उन्होंने पूर्ण अध्ययन न किया हो। उन्होंने वाक्यांशों में बहुत की, क्रांति तथा इटली में भ्रमण पर उन्होंने सम्पूर्ण महादीप के भाष्यों का अनुसन्धान किया। लैटिन भाषा ज्ञान में वे दक्ष थे और लैटिन के कवि प्रोविड तथा वर्जिल के काव्यों में उनके अध्ययन रसि भी। चासर ने अपनी समत्कार-पूर्ण प्रतिभा में ही प्रेरित हो काव्य-रचना प्रारम्भ की। इतने विद्वान लेखक को प्रह्लाद करने की क्षमता उस समय के विशिष्ट हा मनुष्यों में थी और एनी क्वरण चॉसर की कविता का प्रचार कुछ सदस्य पाठकों तक ही सीमित रहा। ये पाठक दर्वीर तथा समृद्ध व्यापारी वर्ग के थे। मध्य-कालीन साहित्य के विशेषतः क्रांतिवादी लेखकों के काव्यों तथा काव्य-भाग्यों में चॉसर अत्यन्त प्रभावित हुए थे। साहित्य में स्वयं का माध्यम उन्हें मिला था और दर्वीर जीवन के प्रेम-प्राप्त के आशुन-प्रदानों में उन्हें सुखित थी। ऐतिहासिक दृष्टि से कदाचित् ही उन्होंने फ्रांसीसी लेखक ग्विलाम डि लॉरिस का पुस्तक "रोमंमस ऑव दि गेज़" का अनुवाद किया हो। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने ग्विलाम तथा उनके सहकारी लेखक जीन डि म्यूस की कविताओं का समुचित अध्ययन किया था। ग्विलाम ने नारी को देवी रूप में देखा और उसकी श्रावधना की। जीन ने नारी ज्ञान को वास्तविक रूप में देखा और व्यंग-वाग् वरसाये। परन्तु चॉसर ने श्रावधना और व्यंग दोनों शैलियों का मिश्रित व्यवहार अपनी रचनाओं में किया।

रचनाएँ—'बुक ऑव दि डूचेज़', दि हाउस ऑव फेम—चॉसर लिखित मध्यकालीन जीवन का समुचित प्रदर्शन करने वाली पुस्तक 'बुक ऑव दि डूचेज़' है। यह भी स्वयं है। इसमें जॉन ऑव गान्ट की स्त्री ब्लैन्के के मरण का वर्णन है। इस श्रेणी की दूसरी रचना 'दि हाउस ऑव फेम' है जहाँ कवि स्वप्न-देश में विचर कर काव्य-स्मृति से आविर्भूत हो मध्य कालीन लोक-गाथाओं का वर्णन करता है। कवि ने अनेक गीत लिखे परन्तु साहित्यिक दृष्टि से उनकी केवल

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

तीन कृतियाँ महत्व-पूर्ण हैं—‘ट्रायलस ऐण्ड क्रेसिड’, ‘दि लिजेन्ड ऑव गुड विमेन’, और ‘कैन्टरबेरी टेल्स’ जो अपूर्ण हैं।

‘ट्रायलस ऐण्ड क्रेसिड’—चॉसर ने ‘ट्रायलस ऐण्ड क्रेसिड’ की गाथा इटली के प्रसिद्ध कहानी लेखक बोकाचिओ लिखित ‘इल फ्लोस्ट्रियो’ से ली है। यह कहानी ट्राय देश के युद्ध गाथाओं में अभिमलिन कर ली गई थी और इसी कहानी को महाकवि शेक्सपियर ने नाटक रूप में परिवर्तित किया था। ट्रायलस के अचल प्रेम और क्रेसिड के प्रयत्नपूर्ण प्रेम की कहानी को चॉसर ने काव्य-रूप दिया। वास्तव में कवि ने एक छन्दो-बद्ध उपन्यास की रचना की, जिसमें चरित्र-चित्रण की मात्रा विशेष है। नायक तथा नायिका का चरित्र-चित्रण और नायिका के चाचा पैन्डेरेस के चरित्र का विवेचन कवि ने उत्साह तथा गान्धर्विकता के साथ किया है। कदाचित् पैन्डेरेस का चरित्र-चित्रण अंग्रेजी नाट्य तथा उपन्यास साहित्य में प्रथम और सम्पूर्ण है।

‘दि लिजेन्ड ऑव गुड विमेन’—‘दि लिजेन्ड ऑव गुड विमेन’ ‘शॉपनाम ऐण्ड क्रेसिड’ से कम महत्व-पूर्ण है। कवि वियोगिनी प्रेमिकाओं का वर्णन करता है। इनमें क्लियोपाट्रा, थिस्ता तथा फादलांमीला प्रमुख हैं। इन चित्रणों के प्राह्वन में कवि पुनः रूपक का आश्रय लेकर अत्यन्त ही व्यंग्य-प्रदेश में विचरता है।

की मृत्यु १४०० ईसवी में हुई और उनकी उच्चकौटि के विद्वत्ता के कारण उस युग के अन्य कवियों को ख्याति न मिल सकी।

अन्य कवि-गाँवर—इन कवियों में सर्व प्रथम गाँवर हैं। गाँवर चॉसर के समान फ्रेंच तथा लैटिन भाषा के विद्वान थे। वे दोनों भाषाओं में काव्य-रचना सरलता में करते थे। नामाजिक तथा राजनीतिक अनुभव भी उनमें यथेष्ट थे और कदाचित् चॉसर का जन्म यदि न हुआ होता तो गाँवर निश्चय ही उनका स्थान लेते। गाँवर का जन्म १३२५ ईसवी में हुआ था और उनकी मृत्यु १४०८ ई० में हुई।

लैंगलैण्ड—‘दि विज़न ऑव पियर्स प्लाउमन’—चॉसर तथा गाँवर के समय में अंग्रेज़ी भाषा अनेक बोलियों में विभाजित थी। यद्यपि लण्डन निवासी पूर्वीय मिडलैण्ड की बोली को विशेष रूप से अपना रहे थे फिर भी पश्चिमी नगरों में अन्य बोलियाँ अपना अस्तित्व रक्ती थी। चॉसर इन पश्चिमी अपभ्रंशों से प्रेरणा करते और स्पष्ट रूप में उनकी अवहेलना कर पूर्वी बोली में ही काव्य-रचना करते थे। परन्तु यह अपभ्रंश सजीव रही और इसमें विलियम लैंगलैण्ड ने काव्य रचना की। लैंगलैण्ड कदाचित् ईसाई गिर्जे में पुरोहित थे और अपने समाज के लिये ही उन्होंने लेखनी उठाई थी। विलियम लैंगलैण्ड की मुख्यकृति ‘दि विज़न ऑव पियर्स प्लाउमन’ है। ‘दि विज़न ऑव पियर्स प्लाउमन’ के तीन संस्करण स्वयं कवि ने प्रकाशित किये। पहला १३६२ का ‘ए संस्करण’ था, दूसरा “बी” १३७७ में और तीसरा १३६५ में प्रकाशित हुआ था। (कवि के स्वप्न-देश विचरण से कविता प्रारम्भ होती है।—कवि मूलवर्त प्रदाडी का स्वप्न देवता है जहाँ जन-समूह उपस्थित हैं।—इस स्वप्न-देश में कवि समाज, शासन विधान तथा अन्यान्य वर्गों की तीव्र निन्दा करता है। इस रचना में चौदहवीं शताब्दी के सम्पूर्ण समाज का चित्रण है। धन-लिप्सा, अनौचित्य तथा राजनीतिक दलभेदी की निन्दनीयता प्रदर्शित कर, ईसा के चरणों तक पहुँचने का मार्ग कवि निर्देशित करता है। उनका निश्चय है कि सत्कार्य से ही यह मार्ग मिल सकता है। यदि लैंगलैण्ड दार्शनिक कवि न होते तो निश्चय ही वे क्रांतिकारी होते। उनकी भाषा कर्कश तथा शुष्क और कविता नीरव है, परन्तु अंग्रेज़ी साहित्य में ईसाई जीवन विधान पर दूसरी पुस्तक इतने समान नहीं है।)

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

तीन कृतियाँ महत्व-पूर्ण हैं—‘ट्रायलस ऐन्ड क्रैसिड’, ‘दि लिजेन्ड ऑव गुट विमेन’, और ‘क्रेटरवरी टैल्स’ जो अपूर्ण हैं।

‘ट्रायलस ऐन्ड क्रैसिड’—चॉसर ने ‘ट्रायलस ऐन्ड क्रैसिड’ की गाथा इटली के प्रसिद्ध कहानी लेखक बोकाचिओ लिखित ‘इल फ़िल्लिस्ट्रियो’ में ली है। यह कहानी ट्राय देश के युद्ध गाथाओं में सम्मिलित कर ली गई थी और इसी कहानी को महाकवि शेक्सपियर ने नाटक रूप में परिवर्तित किया था। ट्रायलस के अचल प्रेम और क्रैसिड के प्रसन्नपूर्ण प्रेम की कहानी को चॉसर ने काव्य-रूप दिया। वास्तव में कवि ने एक लुन्दी-जुद्ध उपन्यास की रचना की, जिसमें चरित्र-चित्रण की गाना विशेष है। नायक तथा नायिका का चरित्र-चित्रण और नायिका के चाचा फेन्ट्रेस के चरित्र का विवेचन कवि ने उत्साह तथा आत्मविश्वास के साथ किया है। कटाचिन् फेन्ट्रेस का चरित्र-चित्रण अंग्रेजी नाट्य तथा उपन्यास साहित्य में प्रथम और सम्पूर्ण है।

‘दि लिजेन्ड ऑव गुट विमेन’—‘दि लिजेन्ड ऑव गुट विमेन’ उपन्यास ‘ट्रायलस ऐन्ड क्रैसिड’ से कम महत्व-पूर्ण है। कवि विद्योगिनी प्रेमिकाओं का चरित्र चित्रण करता है। इनमें कैथरीन, थिस्ती तथा फ्राइलोमीला प्रमुख हैं। इन तीनों का प्रदर्शन में कवि पुनः रूपक का आश्रय लेकर एक ही हीरोइन प्रवेश के चित्रण करता है।

की मृत्यु १४०० ईसवी में हुई और उनका उल्लेख 'दिव्य' के विद्वान के द्वारा
 कवि युग के अन्त की कविताओं की खोज में मिल गया है।

अन्य कवि गाँवर—इन कविताओं में सर्व प्रथम गाँवर है। गाँवर
 नामक के अन्त में गाँवर तथा गाँवर नाम के विद्वान हैं। वे दोनों
 भाषाशास्त्रों से अत्यन्त-अत्यन्त अभिरुचि के कर्मी थे। गाँवरिका तथा गाँवर-
 गाँवरिक अनुभव को इनमें संशुद्ध व प्रीति-कदाचित् कविता या कवि
 कविता न हुआ होता तो गाँवर निश्चय ही उनका स्थान लेते। गाँवर का
 जन्म १२२५ ईसवी में हुआ था और उनका मृत्यु १२०० ईसवी में हुई।

सैमलैण्ड—'दिव्य विद्वान प्रोफ. पियर्स साउमन'—कविता तथा कविता
 के अन्त में कविता तथा कविता प्रोफेसर्स के विद्वान हैं। यहाँ
 लन्दन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर्स का श्रेणी की विशेष रूप से ध्यान देते
 थे। कविता तथा कविता नामों में अत्यन्त-अत्यन्त अभिरुचि रखती थी।
 चौखट इन कविताओं पर प्रोफेसर्स ने पूर्ण रूप से और स्पष्ट रूप से उनका
 अन्वेषण कर चुकी श्रेणी में ही अत्यन्त-अत्यन्त अभिरुचि रखते थे। परन्तु वह प्रथम
 कविता ही और इनमें प्रथम कविता के अन्त में गाँवर रचना थी। सैमलैण्ड
 कदाचित् इसी विद्वानों में प्रोफेसर्स थे और प्रथम कविता के विद्वानों की कविता
 लेखना इच्छा थी। विद्वान सैमलैण्ड की मृत्युका विद्वान प्रोफ.
 पियर्स साउमन है। 'दिव्य विद्वान प्रोफ. पियर्स साउमन' के तीन संस्करण
 नाम कविता के प्रकाशन किये। पहला १९६६ का 'ए. संस्करण' था, दूसरा
 'बी' १९७७ में प्रोफ. सैमलैण्ड १९६५ में प्रकाशित हुआ था। (कविता के
 अन्त-कविता विद्वानों में कविता प्रारम्भ होती है। सैमलैण्ड कविता पदादी का
 अन्त-कविता है कविता अन्त-कविता उदाहरण है। इसी अन्त-कविता में कविता
 नामक, नामक विद्वान तथा अन्त-कविता नामों का तीसरा विद्वान कविता है। इस
 रचना में चौखटकी शब्दादी के सम्पूर्ण समाज का चित्रण है। धन-
 लिप्सा, अनौचित्य तथा राजनीतिक दलबन्दी की निन्दनीयता प्रदर्शित
 कर, इनके चरित्रों तक पहुँचने का मार्ग कविता निर्देशित करता है।
 उनका निश्चय है कि कविता के ही वह मार्ग मिल सकता है।
 यदि सैमलैण्ड दार्शनिक कविता न होते तो निश्चय ही वे क्रांतिकारी
 होते। उनका भाषा कर्षण तथा शुष्क और कविता नामक है, परन्तु
 अंग्रेजी साहित्य में इसी जीवन विद्वान पर दूसरी पुस्तक इसके समान
 नहीं है।

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

के दूसरे तथा चौथे खण्ड को मुक्तक छन्द में अनुवाद करने के पश्चात् ही उन्हें अधिक ख्याति मिली। उस समय सर अपने नवीन मुक्तक छन्द-चयन की महत्ता को कदाचित न समझ सके होंगे क्योंकि इसी मुक्तक छन्द में भविष्य के महान कवियों ने नाटक तथा व्यंग-काव्य रचे। इसी छन्द में शेक्सपियर ने नाटक, मिल्टन ने महाकाव्य और कीट्स तथा टेनिसन ने अनेक कविताएँ लिखीं। आधुनिक समय के लेखक भी इसी मुक्तक छन्द शैली का प्रयोग कर रहे हैं।

सॉनेट छन्द का महत्त्व—सॉनेट छन्द की उपादेयता का दोनों कवियों ने शायद ही अनुमान किया हो। उन्होंने लैटिन के कवि पीटार्क का स्वयं अनुकरण किया था और उनके छन्द ही नहीं वरन् विषयाधार भी ग्रहण किये थे। पीटार्क ने मुख्यतः प्रेम विषयक आधार लिये थे। प्रेमी की कर्तव्य-निष्ठा, श्रद्धा, प्रेमोद्रेक, असमंजस तथा नैराश्य और प्रेमिका की सुन्दरता, मन मोहकता, गर्व तथा तिरस्कार पीटार्क के काव्य के मूलाधार थे।

एलिज़बेथ के युग के समस्त कवियों ने पीटार्क के छन्द और विषयाधारों का अनुकरण कर प्रेम-गीत रचे। कुछ थोड़े से कवि ऐसे भी थे जिन्होंने इस छन्द विधान तथा प्रेम-विषयाधार रचनाओं की अस्वाभाविकता प्रकट की परन्तु वे युग-शैली को बदल न सके। ये थे सर फिलिप सिड्नी तथा विलियम शेक्सपियर। ये दोनों कवि सॉनेट लेखक थे, परन्तु वे उसकी अस्वाभाविकता से भी परिचित थे। उन्होंने रुढ़िवादी विषय में परिवर्तन करने की चेष्टा की, भाषा को उदात्त किया, तथा इस छन्द के दोनों भागों सेस्टेट तथा ऑक्टेट दोनों में मनोवैज्ञानिक सामंजस्य लाने का प्रयास किया। परन्तु सॉनेट छन्द की प्रियता बढ़ती ही गई। प्रत्येक युग के कवियों ने इसे प्रयुक्त किया और इस छन्द विशेष में एक पूर्णता अनुभव की जो अन्य छन्दों में विद्यमान नहीं। मिल्टन ने इसका विषयाधार पूर्णतया परिवर्तित किया। उन्होंने अपनी जीवनी विषयक गाथाओं का आधार लिया, धार्मिक तथा सामाजिक विचारों को स्थान दिया और जन-समाज को प्रेरित करने वाले विषय भी अपनाये।

१—पहले भाग की ६ पंक्तियाँ सेस्टेट तथा दूसरे की आठ पंक्तियाँ ऑक्टेट कहलाती हैं। दोनों मिलाकर कविता में १४ पंक्तियाँ होती हैं।

बॉन्गर, स्पेन्सर, डन

बर्टेन्बर्ग ने इसी छन्द में राष्ट्रीय भवनाशी का प्रकार किया, राष्ट्र के शुद्धीकरण के लक्ष्य में सभी प्रकार के मनुष्यों को विभक्त किया। बर्टेन्बर्ग ने भी स्वार्थी मन भावों को किया परित्याग कर अपने ही मंगल के और उत्तमवर्गी भवनाशी के प्रतिमम भाव में यह मंगलार्थ ने इसी छन्द में आत्म सिद्धिपत्र नाम गैलेटो ने प्रकाशित की प्रशंसा की।

एडमन्ट स्पेन्सर—इस छन्द की सभ्यता स्थापित करने की मन्ता बर्तार वास्तव तथा मरने की है किम पर भी स्वयं उनकी कविता विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं है। इनके विरसोय वाच्य मन्ता मिनी एडमन्ट स्पेन्सर की। इनका जन्म १८५२ ईसवी में हुआ था। उनकी जीवनी का पूर्ण विवरण नहीं मिलता परन्तु उन्होंने कैम्ब्रिज विश्व विशालय में शिक्षा ग्रहण की थी और अनेक निर्यात तथा प्रशंसकों की संगति में काव्य-रचना प्रारम्भ की। उनकी प्रथम इच्छा सभ्य-दर्शन में सम्मिलित होने की थी। अन्त में उन्हें प्रायः गैलेटो ने उनी अर्पणों सेवा में लिया और स्पेन्सर एडमन्ट में उनी के साथ रहे। उनकी मृत्यु भी आयर-लैंड में ही हुई।

रचनाएँ—'दि शेवर्ट्स केन्तेन्टर', 'दि कैयरी कौन'—स्पेन्सर की रचनाएँ प्रकाशित: उनकी दो रचनाओं में है—१८५६ ई० में रचित 'दि शेवर्ट्स केन्तेन्टर' तथा 'दि कैयरी कौन' जिनका प्रकाशन १८६० ईसवी में आरम्भ हुआ। मन्तव्य रचनाओं के समान स्पेन्सर की भी इच्छा मानुष्या को संयान्ते, शब्दावली का सुद्धन करने तथा ऐसे ग्रन्थों की रचना करने की भी जो नूतनी तथा लैटिन भाषा के मन्तव्यों की समानता कर सकते। उन्होंने होमर तथा वर्जिल का अर्थ बतान दिया था और उनके आदर्शों में वे प्रेरित भी हुए थे। यदी नहीं चम्प, परिप्रेक्षा तथा दैयो कवियिधियों का फलनाना कविताओं का भी उन्होंने स्थापान किया था। मध्य-युग की अद्भुत कथाओं, देवगाथाओं, आर्षर नरेश-सम्बन्धी कथानकों तथा दान्यों और राज्यों की कथानियों ने उनका पूर्ण परिचय था। प्राचीन काल के मन्तव्य ग्रन्थों के योगों और योग कथाओं ने प्रभावित होकर वे इन सम्पूर्ण काव्यायों में मिश्रित एक महाकाव्य रचना चाहते थे। उनका अर्थ अपनी काव्य-वर्णा को राज्य महिमा तक पहुँचाना और उनके दर्शन में अर्पण कविता संग्रहित करना था। अनेक काव्या-दर्श उनके समुख उपास्थित हुए—युग परिचय, समाज सुधार, नैतिकता-

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

प्रसार तथा राज्य-सम्मान आह्वानों का स्पेन्सर की प्रतिभा में प्राचीन तथा मध्ययुग के आदर्शों का मुखवि पृष्ण सामंजस्य भी स्थापित हुआ था। स्पेन्सर का काव्यादर्श चाहे कुछ भी रहा हो वे अन्त तक एक गणल कलाकार रहे। शब्द उन्हें प्रिय थे। उनका रूप, उनकी ध्वनि, उनका लय, उन्हें मोहित करते रहे। उनकी प्रथम रचना 'शेपर्ड्स कैलेन्डर' की मोहकता समय ने किंचित कम कर दी हो परन्तु १५७६ ईसवी में उसकी लोक प्रियता प्रमाणित है। शब्द-सामंजस्य तथा ध्वनि लालित्य उनकी विरचित 'एपिथलैमियम' तथा 'प्रोथलैमियम' में पराकाष्ठा पर है। 'शेपर्ड्स कैलेन्डर' प्रत्येक मास के लिए एक वाग्य गीत देता है जिसमें ग्राम्य जीवन के चित्र, प्रेमाभिनय, व्यंग्योक्ति और राज्य-स्तुति प्रधान विषय हैं।

परन्तु 'फ्लेयरी क्रीन' में स्पेन्सर की सम्पूर्ण काव्य-शक्ति निहित है। कथानक के लिए कवि ने अनेक प्राचीन वीर गाथाओं और रूपकों का सम्मिश्रण कर वर्णनात्मक शैली ग्रहण की है। तत्कालीन घोटकों के लिए उसमें पात्र तथा दृश्य संकेत साष्ट रहे हैं। परन्तु वे संकेत समय-परिवर्तन के अनुसार अस्पष्ट होते गये और 'फ्लेयरी-क्रीन' एक दुरुह, काल्पनिक, अस्तव्यस्त रचना मात्र रह गई है।

स्पेन्सेरियन-छन्द तथा गीत रचना—'फ्लेयरी क्रीन' की छन्द-शैली की विशेष ख्याति हुई। जिस छन्द में स्पेन्सर ने इस काव्य को लिखा है उसमें शब्द-सामंजस्य, लावण्यता तथा कल्पना-प्रसार के लिए यथेष्ट स्थान है। यह छन्द स्पेन्सर के नाम से (स्पेन्सेरियन-छन्द) प्रख्यात है। नौ पक्तियों का यह छन्द 'भविष्य' के अनेक कवियों द्वारा प्रयुक्त हुआ परन्तु स्पेन्सर की कृतियों में ही इसका लालित्य पूर्णतया प्रदर्शित हुआ है। अंग्रेजी जीवन और अंग्रेजी दृष्टिकोण पर इस काव्य का समुचित प्रभाव पड़ा था। मध्ययुग की ध्वनि-प्रियता तथा भावुक काल्पनिकता की छाया इसी काव्य द्वारा जन-समूह के मानसपटल पर अंकित हुई। सम्भव है आद्योपास्त पढ़ने पर 'फ्लेयरी क्रीन' स्थूल, अरोचक तथा निर्जीव प्रतीत हो, परन्तु उसके अनेक खण्डों में काव्य-माधुर्य, ध्वनि तथा शब्द-लालित्य की प्रचुरता है। एलिज़बेथ के युग में काव्य-माधुरी ने नाटक का विशेष सहारा लिया और इस काल की उत्कृष्ट कविता

नाटकों में प्रस्तुत है। नाटककार यदि वे। वे काव्य-मूल्यों के प्रेम-पात्र कहने में ही सुखी है।

मार्ता नाम रोमनायिका, दोनों नाटककारों ने कार्यवाही ली। मार्ता लिखित दोनों ऐंग्ल लिक्नेटर्स, रोमनायिका की 'ग्रीक ऐंग्ल एरोनिक', 'बुद्धि' तथा 'ग्रीक' और वेन जॉन्सन के शैली में इन युग में स्थापित पद। यद्यपि उन्मुख कलाकार नाटक रचना की और प्रेरित हुए फिर भी काव्य-भारा प्रकाश-पूर्ण थी। अनेक उच्च तथा छोटे-शाब्द लिखे गए, अनेक शैलियों का प्रयोग हुआ, परन्तु दोनों की ध्यान ही लेखकों की अधिक प्रवृत्ति रही।

मार्शल कल डेटन—अपनी समकालीन मार्शलिक प्रवृत्तियों के प्रति निधि मार्शलिक डेटन है। डेटन का जन्म १७६६ ईसवी में हुआ था और उन्होंने अपने जीवन में अनेक ऐतिहासिक कृतियों का प्रयोग किया। वे काव्य में लेकर भावुक शैली तक के लिखने में वे दक्ष थे। 'विस्तार' जो १८०६ में प्रकाशित हुई, एक ऐतिहासिक कथा है जिसमें स्वयं मान के घटनाओं का वर्णन है। 'रॉलीओनियन', मध्य शक्यों की कविता में ईंगलिशमन के शैली का दर्शन करती है जिनमें देश-प्रेम की भावना प्रधान है। परन्तु डेटन का सबसे अनुराजित वाक्य 'निर्माकृतियाँ' है जिसकी पूरी देश-की-पदना-सत भावना-स्थल-स्थल पर पाठकों को मोहित करती है।

सेमुयल डैनियल—डेटन के वयस में एक वर्ष छोटे सेमुयल डैनियल में भी अपनी निराली प्रतिभा थी। यद्यपि उन्होंने भी ऐतिहासिक विषयों पर कविता की परन्तु उनकी कथाएँ चिन्तन-विषयक कविताओं में ही हुई। उनके विरचित 'दि मिडिल वर्स विटवीन लैन्केस्टर ऐंग्ल चार्क' में ऐतिहासिक पूर्णता ती बहुत है परन्तु रोचकता कम है। उनकी चिन्तन-शील कविताएँ उनके 'इपिगिल्ल' में हैं जिनका प्रभाव कवि वर्तु-सर्वथ पर विशेष रूप से पड़ा।

इन युग की लम्बी तथा ऐतिहासिक कविताएँ यद्यपि हैं तो बहुत, तो भी साहित्यिक दृष्टि में वे हीन हैं। यह युग वास्तव में शैली का युग है। गीत, गान, वाद्य इन तीनों के आकर्षण से घिरे ही रहे होंगे और दर्वाजी जीवन का तो यह प्रधान आभूषण था। कवि, श्वनि; लय तथा शब्द प्रयोग में पूर्ण प्रवीण थे और वे अपनी काव्य-भाषुगी द्वारा

राज्य-महिषी से लेकर राज्य-नेतकों तक का मन मोड़ लेते थे। डॉनल्ड कैम्पबेन की कविताओं में वे गुण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

जॉन डन—कविता की सर्वतोमुखी प्रतिभा कदाचित्त जॉन डन में पिछले कवियों की अपेक्षा अधिक प्रशस्न हुई। उनका जीवन प्रत्यन्त सादस पूर्ण रहा। उन्होंने दबोरी जीवन व्यतीत किया, युद्ध में शून्य भ्रष्ट किये, इंगलिस्तान के लार्ड कीपर के भंडों रहे तथा अपने स्वामी का उम्माता बनने की चेष्टा में बन्दी बनाए गए। अन्त में वे सेन्ट पॉल के गिरफ्त में प्रधान पुरोहित के पद पर आसीन हुए। उनका मूल्यक बहुत दिनों तक विश्रुत चल रहा। अध्ययन उनका प्रधान कार्य था। धर्म, विज्ञान, दर्शन तथा अन्यान्त्र-ज्ञात-सुश्रुती पुस्तकों का वे मनन करते रहे। जीवन के मृदु तथा कटु अनुभव, राष्ट्रप्रेम, प्रेम-बुद्धि, जीवन-मरण सभी प्रकार की मानसिक परिस्थितियों पर उन्होंने विचार किया था और उनकी विरोधी-भातनाओं का उनके काव्य में समविश हुआ। (1) उन स्वभावतः प्राचीन रुढ़ियों के विरुद्ध थे। पुराने कृदों के प्रति विशेषतः उन्हें कोई सदानुभूति न थी। पुराने गीत कृदों के स्थान पर उन्होंने नए कृदु अपनाए। कृदों में नये रूप की खतियों सम्मिलित की और प्राचीन काव्य-उपमाओं को नवीन तथा आकर्षक रूप दिया। कहीं कहीं तो उनकी उपमाएँ अद्भुत अधिक हैं और वास्तविक कम। अठारहवीं शताब्दी के प्रधान कवि और समालोचक डॉक्टर जॉनसन ने उन तथा उनका अनुकरण करने वाली कवि-गोष्ठी को 'मेटेफिज़िकल' नाम इस कारण दिया कि उनके (विचारों तथा विशेषणों में विचित्र असामंजस्य था। इसमें सन्देह नहीं कि उनकी कविता में यह विचित्रता थी। परन्तु अनेक श्रेष्ठ कविताओं में उनकी प्रतिभा, छोटे तथा सरल विशेषणों तथा उपमयों द्वारा प्रस्फुटित हुई।

जॉन हरवर्ट—डन इस 'मेटेफिज़िकल' कवि गोष्ठी के नेता मान लिए गए हैं; परन्तु उनके अनुयायियों में धार्मिक कवि अधिक थे। जॉन हरवर्ट (१५६३-१६३३) ने उनका सम्पूर्ण रूप से अनुकरण किया। उनमें एक सरल धार्मिकता है। उपमाओं के चयन में यद्यपि उन्होंने सावधानी प्रदर्शित की है तो भी कहीं कहीं उन्हें अपने धार्मिक तथा आध्यात्मिक आवेश में उपमाओं तथा उपमयों में पूर्ण सम्बन्ध

कविताओं में गीत काव्य की मधुर भावुकता, छोटी छोटी शब्दावलिओं की कृदा तथा भाव और लय के सामंजस्य की एक विचित्र मोहकता है। अंग्रेजी गाँवों का सरल जीवन, मई-मास की रंगरलियाँ, उनकी कविताओं के प्राण-स्वरूप हैं। प्रेम ही उनके अनेक गीतों की नींव है। प्रेम की उदासीनता उनको सर्वत्र विचलित करती है और उसका रस रंग उन्हें सर्वत्र आन्दोलित करता रहता है।

एन्ड्रू मारवेल—जब हेरिक अपना जीवन निर्वासन में व्यतीत कर रहे थे उसी समय इस गोष्ठी के अन्तिम कवि एन्ड्रू मारवेल (१६२१-७८) अंग्रेजी राजनीति तथा तत्कालीन जीवन का अध्ययन कर कविता लिखने का प्रयास कर रहे थे। मारवेल प्यूरिटन मतावलम्बी थे। जब जनता ने क्रॉमवेल के प्यूरिटन-शासन के पश्चात्, चार्ल्स द्वितीय को राजा बनाया तो मारवेल के धर्म को ठेस लगी और उन्होंने क्रोध और विराग से उद्वेलित हो अनेक व्यंगमय कविताएँ लिखीं। मारवेल की महत्वपूर्ण कविताएँ वही हैं जिनमें न तो धर्म-पुकार है और न तत्कालीन जीवन की उदासीनता है। उनमें स्वाभाविक प्रकृति दर्शन, सरल मानव चिन्तन, तथा प्रेम का लालित्य है। ये ही कविताएँ उनकी कथाति प्रसारित करती रहेंगी।

—:०:—

चौथा अध्याय

मिल्टन, पोप, जेम्स टॉमसन

मिल्टन का युग—अब एक नये युग का आरम्भ होता है। सोलहवीं शताब्दी का अन्त भी आगया था। कवैलियर-कवियों के पश्चात् इंग्लिन्ड में एक नये जीवन, एक नये समाज, और एक नवीन साहित्यिक धारा का जन्म हुआ।

देश में शूद्र-युद्ध समाप्त हो रहा था। जनता ने धार्मिक मतभेदों और धर्म युद्ध के कारण एक विचित्र अशान्ति मील ले ली थी और इस अशान्ति में मध्ययुग की अनेक साहित्यिक धाराओं का लोप भी हो गया था। मध्य-युग का मानव एक विचित्र देश का प्राणी था। उसमें अज्ञानता थी; विश्वास था; और उग्रता भाव भंडार अक्षय था।

कैथलिक मतावलम्बी थे और उन्हें फ्रांसी दे दी गई थी। कॉमनलॉ के शासन के पश्चात् जनता में कैथलिक मत की नई लहर उठी। प्यूरिटन शासन से जनता ऊब उठी थी और मिडलन का स्वप्न-जगन टट गया था। कवि ने हारते हुए वर्ग का साथ दिया और अब उसे विश्वास होना लग रहा था कि मानव-समाज का कल्याण शीघ्र नहीं होने पायेगा।

प्यूरिटन वर्ग की विजय और कॉमन-वेल्थ के जीवन ने मिडलन के हृदय में महान आशाएँ उठाई थीं। वे उस नये युग का स्वप्न देख रहे थे जब मनुष्य ईश्वर को पहचानेगा, अपने पापों की क्षमा माँगेगा और ईसा के शासन की छत्रछाया में सुख की नोंद सोएगा। परन्तु कवि को कोई भी आशा फूलने-फलने न पाई। कवि को आशाओं पर इतना तुपारापात की छाप है। कवि अब वृद्ध, निराश तथा नेत्रविहीन था। उसके चैरियों ने उसका जीवन भी संकट में डाल रखा था। उसी निराश्व की अवस्था में मिडलन ने अपने हृदय की ज्योति प्रज्वलित कर तीन बड़े काव्य लिखे। पहला था 'पैराडाइज़ लॉस्ट' (१६६७) दूसरा 'पैराडाइज़ रीगेन्ड' और तीसरा "सैमसन ऐगनिस्टीज़" (१६७१) था।

रचनाएँ—'कोमस'—मिडलन की सबसे अधिक आदरणीय पुस्तक 'कोमस' है। 'कोमस' नाटक है। उसकी मनोहरता पढ़ने पर नहीं बरन् रंगमंच पर विदित होती है। 'कोमस' की कहानी प्यूरिटन-जीवन से सम्बन्धित है। एक कुलवती नारी अपने सतीत्व और आचरण के बल पर कोमस नामक यज्ञ को तिरस्कृत कर, उसके प्रलोभनों को टुकरा कर, अपनी आत्मरक्षा करती है। यही 'कोमस' का सरल कथानक है। इतने सरल कथानक के होते हुए भी इस नाटक में मिडलन की कविता के सभी गुण विद्यमान हैं। भविष्य की सभी रचनाओं का आभास इस नाटक में है। कवि के लिए मानव-जीवन एक महान् द्रव्य है। यद् पाप और पुण्य, शान्ति और अशान्ति, ज्ञान और अज्ञान, भले और बुरे में हैं। परन्तु पुण्य, ज्ञान तथा भले ही को विजय प्राप्त होती है।

'पैराडाइज़ लॉस्ट'—इसी द्रव्य के भाव को लेकर 'पैराडाइज़ लॉस्ट' नामक काव्य की रचना हुई। ईश्वर-कृत प्रथम मनुष्य आदम और उनकी स्त्री हौआ शान्ति तथा प्रेम-मय जीवन व्यतीत करते हैं। शैतान सर्प वेश में आकर उनके जीवन में विष का बीज बोकर ज्ञान-वृक्ष का फल खाने का सफल प्रलोभन देता है। दोनों का शान्ति मय जीवन

प्रशासित हो पाएगी। जो इन्हीं युग ही उत्पन्न है। ईश्वरवाचक भाषा पालन के कारण ही यह उत्पन्न हुआ। इसका नाम है 'शैतान'। शैतान का प्रयोग है और ईश्वरवाचक भाषा पालन का। शैतान की विचार शक्ति ही शैतान के विचार ही है। ईश्वरवाचक भाषा के कारण शैतान की विचार शक्ति है।

'पैरासाइज रीगेन्ट'—इस विचार का अर्थ है 'पैरासाइज रीगेन्ट' में है। इसका अर्थ है 'पैरासाइज रीगेन्ट' में है। शैतान पर विचार करने है, और ईश्वरवाचक भाषा पालन के कारण शैतान पर विचार शक्ति प्रदान करने है।

'मैसमन पैरासाइज'—मैसमन के अर्थ है 'मैसमन पैरासाइज' में है। इसका अर्थ है 'मैसमन पैरासाइज' में है। शैतान पर विचार करने है, और ईश्वरवाचक भाषा पालन के कारण शैतान पर विचार शक्ति प्रदान करने है।

इन दोनों कारणों से मिल्टन ने 'मैसमन पैरासाइज' की प्रतिपादन किया था। परन्तु इनकी विस्तृत रचनाओं में यह आदर्श अत्यंत सुंदरता नहीं तो नहीं हीन होकर ही हो गया है। 'पैरासाइज रीगेन्ट' में शैतान का चरित्र-चित्रण 'पैरासाइज रीगेन्ट' में ईश्वर की महानशीलता और 'मैसमन पैरासाइज' में शैतान का अज्ञान-अविज्ञान साहित्य के दृष्टिकोण में अर्थ है। सामाजिक चरित्र-चित्रण के भाग कवि ने और तथा शान्त दोनों रसों का प्रतिपाद किया है। मिल्टन ने जिस युवावस्था का प्रयोग किया है उसमें एक अद्भुत शान्तिभाव है जो अल्प लक्ष्यों की रचनाओं में देखने को नहीं मिलती।

'लिमिटेड'—कवि की अन्य रचनाओं में 'लिमिटेड' कविता भी प्रख्यात है। इसमें प्रकृति विरोध, अज्ञान, तथा आत्मिक जीवन का वर्णन मिलता है। कुछ दृष्टिकोणों का अर्थ है कि मिल्टन सर्व साधारण के कवि नहीं और उनके विषय, उनकी भाषा, तथा उनकी शैली सर्व प्रिय नहीं ही तकनी। परन्तु इसमें अर्थ नहीं कि मिल्टन अपने समय के अद्भुत व्यापक कवि थे। साहित्य-प्रिया उन्हें अर्थ जान में पढ़ते थे और अद्भुत शान्ति में शायद ही कोई ऐसा कवि ही जिसे मिल्टन की

काव्य-शैली का अनुकरण न किया हो। इस शताब्दी के साहित्य पर मिल्टन का पर्याप्त प्रभाव है। मिल्टन ने अपनी रचनाओं में प्युरिटन मत की पवित्रता, उसकी मानवता तथा उसकी ईश्वरीयता का यशोगान किया था।

सैमुएल बटलर—'ह्यूडीब्रैस'—उसी समय एक दूसरे का प्युरिटन मत की अनुदारता, उसके असंयम, उसके पाखण्ड और छद्म पर व्यंगोक्ति लिख रहे थे। वे सैमुएल बटलर (१६१२-८०) थे ह्यूडीब्रैस में उन्होंने मिल्टन के प्युरिटन-आदर्शों की खिल्ली उड़ई ह्यूडीब्रैस प्रेमी तथा बोद्धा हैं और अपने सेवक रैफ के साथ अपने साहित्यिक कार्यों में घोर मूर्खता का परिचय देता है जिससे पाठकों में बड़ा मनोरंजन होता है। ह्यूडीब्रैस की प्रियता घर घर बढ़ी।

'ह्यूडीब्रैस' लिख कर बटलर ने यह प्रमाणित कर दिया था कि स साधारण को मिल्टन की कविता प्रिय नहीं। मिल्टन को पूर्ण-रूप समझने के लिए पाठकों को प्राचीन महाकाव्यों, लैटिन तथा यूनानी की भाषाओं की जानकारी आवश्यक थी और मिल्टन के समान काव्य कं नृत्क छन्दों को लिखने के लिए महान काव्य-प्रतिभा अपेक्षित थी उर्गालिफ भविष्य के लेखक कविता को सरल, साम्य तथा लोकप्रिय बन में प्रयत्न में लग गए।

एडमण्ड वॉलिंग—जिन लेखकों ने यह प्रयास आरम्भ किया उन प्रमुख एडमण्ड वॉलिंग (१६०६-८७) तथा सर जॉन डेनहम (१६१६-६६) हैं। उनके अनेक मनोहर गीतों का आधार प्रेम है और उनके दो पत्रों के छन्द को सर्व प्रिय बनाने की चेष्टा की।

जॉन डेनहम—'कूपर जिन'—यही चेष्टा जॉन डेनहम ने भी की उसी समय उनकी 'कूपर जिन' नामक कविता की रूपाति मिली। इस कविता में एक पहाड़ी और उसके चारों ओर प्रकृति सुन्दर विषय दो वर्णन बड़ी सरल भाषा में किये हैं। डेनहम के समकालीनों ने उनसे इस प्रयास की बहुत सराहना की।

जॉन ड्रायडेन—उस समय के जिन कवियों ने इन नई-नई शैलियों में विशेष सहायता दी उनमें जॉन ड्रायडेन (१६३१-८०) का नाम आता है। ड्रायडेन की प्रतिभा सर्वतोभूमी थी लॉटन गार, पार्लेमेन्ट, जनसभा तथा दरबारी के कलाकर थे। ड्रायडेन

शरीर के लिए उन महत्त्वों पर निर्भर रहना पड़ता था जो भी कल्याणकारी कर्मों के द्वारा प्राप्त हो सके।

रचनाएँ—इन्होंने आत्मिक महत्त्वों की 'प्रवर्तक कविता' में स्थान दिया, परन्तु वे अत्यन्त सरल नहीं हैं।

'वेनम सिरीजनिम' तथा 'वेदमेलाय वेन्ट प्रिन्सिपल'—'वेनम सिरीजनिम' (१६६७) में उन्होंने अज्ञान के अविनाश तथा इन सुखों का वर्णन किया और, "वेदमेलाय वेन्ट प्रिन्सिपल" (१६८१) में आत्मिक दुःखों के निवारण के लिए का विचार बताया।

'वेलियथो वेराई', 'वेवियम', 'दि हाइन्ट वेन्ट दि पैन्थर'—इन्होंने ने अपने समय के आत्मिक महत्त्वों और आत्मिक कल्याण का वर्णन किया। 'वेवियथो वेराई' तथा 'दि हाइन्ट वेन्ट दि पैन्थर' नामक कविताओं में दिया है। १६०० ईसवी में उन्होंने 'वेवियम' नामक कविता लिखी जिसका अर्थ है 'दुःखों का सब माना जाता है। इन आत्मिक कल्याणों के अभाव में वे अपने आत्मिक जीवन में अशान्ति, अज्ञान तथा अज्ञान की रचनाओं का अनुभव करते हैं। इन्होंने सब जगह के सर्वोत्कृष्ट की नदी बरन्, अज्ञान भी जगह जगह है।

वेनम सिरीजनिम पोप—रचनाएँ—इन जगहों में प्रथमों में वेनम सिरीजनिम पोप (१६८८-१६९८) का भी विशेष स्थान है। वेनम सिरीजनिम में ही अज्ञान, दुःख, अशान्ति, अज्ञान, तथा अज्ञान का वर्णन है। परन्तु यह सब होने हुए भी वे अज्ञान का वर्णन करते हैं। इन्होंने कविता में उच्चकला प्रदर्शन करने के लिये अत्यन्त परिश्रम किया। निश्चय ही उनकी कविता में आत्मिक नदी, परन्तु प्रवाहपूर्ण नहीं है कविता लिखने में उनका अज्ञान ही बड़ा अज्ञान ही है। उनका कल्पना-शक्ति उद्योग ही था और उनका विचार क्षेत्र भी परिमित था।

'प्रेम आनि मेन'—'प्रेम आनि मेन' में वेनम ने अपने दर्शन-विचारों को उद्घोषित किया।

'वेनम सिरीजनिम', 'वेनम सिरीजनिम'—'वेनम सिरीजनिम' में उन्होंने अपने अज्ञान की तीव्रता को परिष्कृत किया और अज्ञानकारी कल्याणों के समाहित जीवन को निन्दित कर अपनी प्रतिष्ठा घोषित की।

‘इनमियाट’ में उन्होंने अपने युग के सुगमों को विस्मय विधा और उपहास-काव्य लिखने में भड़ी ख्याति पाई।

‘इपिमिल टु डाक्टर ऑरवथर्नाट’—उनके कृष्टि कृष्टि सुगमों उपख्यानों में “दि इपिमिल टु डॉक्टर ऑरवथर्नाट” बहुत लोक प्रिय है। परन्तु पोप ने केवल उपहास-काव्य ही नहीं बल्कि प्रकृति दर्शन पर भी अनेक कवितारचनें लिखीं।

‘पेंस्टोरेल्स’, ‘विन्डसर फॉरेस्ट’—उनके ‘पेंस्टोरेल्स’ तथा ‘विन्डसर फॉरेस्ट’ में मरल-प्रकृति-निर्माण, तथा मरल सुन्दरता है। उनकी दो अन्य कवितारचनें ‘इलायना डू एविलाडे’ तथा ‘पुलिनीस टु दि मेमरी ऑव ऐन अनफॉरगुनेट लेडी’ में भावुकता तथा वर्णन प्रियता भी है। पोप ने अपने जीवन के मध्य काल में एक महान् साहित्यिक कार्य की प्रतिज्ञा की थी। यह यूनानी महाकवि होमर का अंग्रेजी में अनुवाद करने की प्रतिज्ञा थी। पोप ने इसमें भागलता पाई। परन्तु पोप में इतनी प्रतिभा न थी कि वह होमर की विशालता को पूर्णतया प्रदर्शित कर लें। इसी कारण यह अनुवाद यद्यपि रोचक काव्य है मगर श्रेष्ठ अनुवाद नहीं। पोप के आचार विचारों ने क्रुद्ध होकर समालोचकों ने यहाँ तक कह डाला है कि पोप के अनुवाद में केवल होमर का नाम है प्राण नहीं।

सैमुएल जॉनसन—रचनाएँ—‘लन्दन’, ‘दि वैनिटी ऑव ह्युमन विशेज’—पोप के पश्चात् इस युग के कर्णधार सैमुएल जॉनसन हुए। जॉनसन की ख्याति कविता से कम और आलोचना में अधिक हुई। उनकी कविताओं में दो उपहास-काव्य लोकप्रिय हुए। एक था ‘लन्दन’ (१७३८) और दूसरा ‘दि वैनिटी ऑव ह्युमन विशेज’ (१७४६) जो लैटिन कवि जुविनेल के आधार पर लिखे गए थे। इन दोनों कविताओं पर पोप की छाप कम है। कवि की नैतिकता, उसके गंभीर-भाव तथा उसके विषादयुक्त विचार दोनों कविताओं के प्राण हैं।

ऑलिवर गोल्डस्मिथ—पोप ही के समान ऑलिवर गोल्डस्मिथ ने भी अपने समय के सामाजिक तथा आर्थिक विचार धारा को ही अपनी कविता का आधार बनाया। इंगलिस्तान तथा आयरलैन्ड के समाज का उन्हें विशेष और विस्तृत ज्ञान था। पोप से ही उन्होंने दो पंक्तियों के

कृष्ण शैल्युद्ध के संभव था। ये दोनों वा. समानता और उदा का उपहास-सद्वर्णन से ही-ए. इन्सुन मरते थे।

रचनार्थ—'दि ट्रेमलर', 'दि ट्रेमलर ट्रेमलर'—किन्तु मीनर मित्रक कालिका, कालिकावाः और निर्दोष प्रज्ञा के प्रत्यक्ष से और विद्वत् साहित्य साधना उनमें न ही मरती थी। इसी कारण यथाः उनमें 'ट्रेमलर' तथा 'ट्रेमलर ट्रेमलर' में मरती, संभवता मान्यता तथा सामान्य जीवन का साष्ट्र परिचाय मिलता है। फिर भी उनमें उदाता नहीं। यदि कोट्टरमिष में कला की सुनिश्चि होवे तो वे उद्योगी के साधनों में मिले जाते।

विश्व समग्र पौर, जीवनन तथा मीनरमिष परिकल्पना समाज की प्रथमा कविता में प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उदा समग्र युद्ध युद्धों की प्रकृति सुन्दर का कल्पना कर रहे थे। यथाः प्रज्ञा के मीनर में प्रकृत कविता की प्राकृतिक विद्या भी किन्तु इस समय उदाता सामान्य और भी श्रुत रहा था। अतः एक ही कवि प्रकृति की सुन्दरता का एक पर उदा पर मान्य-कविता का वर्णन करते थे। अतः कविता में प्रकृति की समाज के जीवन में प्रथम पर उद्योगी सुन्दरता का वर्णन सामान्य विद्या।

जेम्स टॉमसन—'मीनर'—इस प्रकृति-मीनर-वर्णन में 'जेम्स टॉमसन (१७००-४८) अग्रतम है और इन्होंने अग्रतम, कविता पाठ। इन्होंने पहले पहले प्रकृति के मीनों प्रकृतियों का किन्तु वर्णन पाठों की 'मीनर' नामक कविता में दिया। साम. शब्द, और समय उनका कविता के आधार हुए। इस नवीन काव्य प्रथम में शोध की बहुत से पाठों के हृदय में स्थान बना दिया क्योंकि इन्होंने तथा पौर की व्यंग्य-कविता पाठों की मदा प्राकृतिक न कर मरी। पाठक-सूत्र नवीनता की खोज में था फलतः टॉमसन की इस नवीन भाग में शोध ही लोक प्रियता पाठ। लगभग एक शताब्दी तक टॉमसन की लोक प्रियता बनी रही। परन्तु टॉमसन में काव्य-कला और काव्य-आत्मा की कर्म थी। यथाः उनकी कविता में मान्यता के सदृश्य चित्र हैं और इन्होंने निम्न मूलिक रूप में प्रकृति-वर्णन भी किया है जो भी वे कुछ कारणों से उद्योगी के कवि न कहलाये जा सके। किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि टॉमसन एक उद्योगी के कवि न होकर भी मूलिक रूढ़ और जो नवीन भाग इन्होंने साहित्य में प्रमाणित की वह आत्मा शताब्दी

में अन्य रूपों में प्रस्फुटित हुई। इस धारा का पहला रूप जो साहित्य में अवतरित हुआ वह था स्फुट दृश्यों का चित्रण। इस समय, नागरिक जीवन के प्रसार से राजमार्ग तथा जन्ममार्ग मुख्यवस्थित तथा मुरझित होने लगे थे। इन मार्गों से प्रकृति के स्फुट चित्रों को देखकर नागरिक प्रसन्न हो उठते थे। चित्रकार भी अपनी तूलिका से इन्हीं चित्रों का चित्रण बड़ी सावधानी से करते थे और इस प्रकार क्रमशः मनुष्य के हृदय में प्रकृति के सौन्दर्य ने अपना अटल स्थान बना लिया। नगर का जीवन द्रुन्दमय, जटिल तथा अशान्त होने के कारण मनुष्य के थके हुए हृदय को प्रकृति के सौन्दर्य और प्रकृति के शान्ति-पूर्ण वातावरण की आवश्यकता हुई। अठारहवीं सदी का जीवन नीरस तथा तार्किक हो रहा था और समाज में दिन प्रतिदिन अमीर तथा गरीब का विरोध बढ़ता जा रहा था। पहले-पहल तो कवियों ने मानवता की पुकार सुनाई। फिर जीवन की सरलता, कोमलता तथा सहानुभूति के गीत गाये। क्रमशः प्रकृति की सरलता, कोमलता तथा उसके सौन्दर्य ने उनको 'वर्शाभूत' कर लिया।

विलियम कूपर—'टास्क', 'जॉन गिल्पिन', 'ऑल्ने हिम्स', 'कास्टवे'—इन भावनाओं का समुचित सम्मिश्रण विलियम कूपर की कविता में हुआ। कूपर की 'टास्क' शीर्षक कविता में ग्रामीण दृश्य, मानव सहानुभूति तथा धार्मिक विचार हैं। परन्तु अन्य रचनाओं, विशेषतः 'जॉन गिल्पिन' 'ऑल्ने हिम्स' तथा 'कास्टवे' में, इश्वरीय मय तथा उनके उन्माद का प्रमाण मिलता है। इस युग के अनेक कवियों में एक विचित्र मानसिक रङ्गता का आभास है। वे अकारण ही जीवन को संद-युक्त, भययुक्त तथा दारुण समझने लगे थे।

टॉमस ग्रे—'वार्ड', 'दि डिसेन्ट ऑव ओडिन', 'एलिजी'—ऐसे कवियों में टॉमस ग्रे (१७६६-७१) की भी गणना है। ग्रे ने युरोपीय देशों का भ्रमण किया था। उनमें उच्चकोटि की विद्वता थी। परन्तु जीवन के दारुण दृश्यों ने हताश होकर वे अधिक परिमाण में साहित्य-स्रजन न कर सके। उन्होंने अपनी कविताओं में प्राचीन तथा मध्ययुग के चित्रों के गर्भमिष्टि की चेष्टा की है। 'वार्ड' कविता में मध्ययुग की झुंटा है तथा 'दि डिसेन्ट ऑव ओडिन' पर प्राचीन युग की व्याप है। परन्तु उनकी सबसे सकल कविताएँ 'ओट' अर्थात् गौरव गीतों के

संग्रह हैं। कवि की 'एलिजी' आर्थात् शोक गीत नामक कविता अत्यन्त लोकप्रिय है। इस कविता में युग का मानसिक वैपम्य पूर्ण रूप से चित्रित है।

विलियम कॉलिन्स—'हाउ स्लीप दि ब्रेव', 'ओड ऑन दि पाय्युलर सुपरसूटिशन्स', 'ओड टु ईवनिंग'—इसी मानसिक विपमता की छाप और भी गहरे रूप में कवि कॉलिन्स (१७२१-५६) पर है। विलियम कॉलिन्स का जीवन दुखी, दरिद्र तथा उन्माद रोग से ग्रसित था। तत्कालीन समाज के चित्र उनकी कविता में नहीं हैं। परन्तु कल्पना, अन्तर्जगत विवेचन तथा कोमल भावनाओं की दृष्टि से कॉलिन्स की कविता सर्व प्रिय रही। उनकी कविता में "हाउ स्लीप दि ब्रेव" "ओड ऑन दि पाय्युलर सुपरसूटिशन्स ऑव दि हाइलैन्ड्स" तथा "ओड टु ईवनिंग" श्रेष्ठ हैं।

इन कविताओं में कॉलिन्स के सभी गुण हैं। उनमें सरल भाव, सरल भाषा तथा सरल विषय-निरूपण हैं। परन्तु कॉलिन्स ने इस शैली का उपयोग अन्य कविताओं में नहीं किया। फलतः वे कविताएँ लोकप्रिय न हो सकीं। जब जब कॉलिन्स ने सरलता अपनाई उनकी रचनाओं में गीत-काव्य के गुण और संगीत-की-मधुरता-प्रचुर रूप में प्रकट हुई और इसी माधुर्य-गुण-के कारण उनका स्थान इस युग के कवियों में श्रेष्ठ है।

क्रिस्टोफर स्मार्ट—श्रेष्ठ कवियों की श्रेणी में क्रिस्टोफर स्मार्ट का भी स्थान है परन्तु उन्होंने बहुत कविताएँ नहीं लिखीं। स्मार्ट का जीवन असंयमित, भ्रष्ट तथा उन्माद रोग से ग्रस्त रहा जिसके कारण वे पागल-खाने में बहुत दिनों रहे। बन्दीगृह की दीवारों पर ही कोयले तथा कीलों से उन्होंने अपनी सर्वश्रेष्ठ कविता 'सॉंग टु डेविड' लिखी। स्मार्ट की बुद्धि तीव्र और उनकी कल्पना आवेशमय थी। इस कविता में आत्मिक क्षयावृत्त तथा शब्द माधुर्य की अपूर्व छटा है।

विलियम ब्लेक—'सॉन्स ऑव इनोसेन्स', 'एवर लास्टिंग गॉस्पेल', 'प्रोकेटिक बुक्स'—यद्यपि दस शताब्दी के कवियों में मानसिक उन्माद की एक लहर सी फैल चुकी थी और अनेक कवि इस विपमता के शिकार हो चुके थे तिस पर भी इस युग की रचनाओं में आव्य-माधुर्य की न्यूनता नहीं रही। विलियम ब्लेक (१७५७-१८२७) ने अपनी कविता में इसी-मधुरिमा को उच्चस्तर देने का प्रयास किया।

ब्लेक की कविताएँ तीन श्रेणियों में विभाजित की जा सकती हैं। पहली वे जो बाल-जीवन की साधुता और सरलता से सम्बन्धित हैं, दूसरी जो समाज को तामसिकता से उठाकर आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करती हैं, और तीसरी वे जो मनुष्य के उत्थान के लिए एक दिव्यजगत् से भविष्य वाणी करती हैं। अठारहवीं शताब्दी जड़वाद की जटिलताओं में बन्दी हो गई थी और मनुष्य की तामसिकता उसे नीचे की ओर खींचे लिए जा रही थी। ऐसे समय ब्लेक ने मानव-समाज में एक नई ज्योति फैलाई। 'साँग्स् ऑव इनोंसेन्स ऐन्ड इक्सपीरियेन्स', 'एवरलास्टिंग गॉस्पेल' तथा 'प्रोफेटिक बुक्स' में कवि की आध्यात्मिकता समुचित रूप से प्रतिबिम्बित है। इस अन्तिम कृति—'प्रोफेटिक बुक्स' में कवि एक दूर देश का संकेतवाद अपनाता है और भाव क्लिष्टता के कारण सर्व साधारण तक अपना सन्देश नहीं पहुँचा पाता। परन्तु जब जब कवि सरल भाषा, सरल भावावेश तथा सरल संकेत देता है, तब तब उसकी पंक्तियाँ पाठक के हृदय पर स्थायी प्रभाव डाल कर उसे तन्मय कर देती हैं।

रॉबर्ट बर्न्स—ब्लेक के समकालीन कवियों में रॉबर्ट बर्न्स (१७५९-९६) ने भी अच्छी ख्याति पाई। बर्न्स किसान-वंश के थे और उन्होंने स्कॉटलैन्ड में जन्म लिया था। उन्होंने अपने से पूर्व कवियों का समुचित अध्ययन किया था और पोप, ग्रे और टॉमसन की रचनाओं से वे भली-भाँति परिचित थे। शेक्सपियर की कविताओं में उनकी विशेष रुचि थी और स्कॉटलैन्ड के कवियों की रचनाएँ भी उन्हें प्रिय थीं। बर्न्स की अनेक श्रेष्ठ कविताएँ १७८६ ईसवी में 'किलमारनक' नामक संकलन में प्रकाशित हुईं। इस संग्रह के लोकप्रिय होते ही बर्न्स समाज में पूज्य माने जाने लगे। इन्होंने धर्म के पाखण्डों का खण्डन 'दि जॉर्ली वेगर्स' नामक कविता में दृढ़तापूर्वक किया है। 'टॉम ऑ शैन्टर' तथा 'जॉन एन्डरसन माई जो' भी बहुत लोकप्रिय हुए। परन्तु बर्न्स की ख्याति विशेष उनके लोक-गीतों में है। अंग्रेजी तथा स्कॉटलैन्ड की विविध बोलियों की अपनाकर उन्होंने बड़े सरल, मधुर और प्रेम मय गीत रचे जो अब तक सर्व प्रिय हैं। रॉबर्ट बर्न्स ने जीवन का यथेष्ट अध्ययन किया था। शिष्ट तथा अशिष्ट वर्ग दोनों को उन्होंने भली प्रकार समझा था।

अनुभव था, क्योंकि इसके सम्पर्क में वे विशेषतः रहा करते थे। इसी कारण उनकी कविता में मानव के प्रति प्रेम और भावुकता की मात्रा अधिक है।

जॉर्ज क्रेव—जब वर्न्स सरायों की दिन चर्या पर काव्य-रचना कर रहे थे उसी समय क्रेव (१७५४-१८३२) ग्रामीण जीवन की सरलता, मधुरता और पवित्रता पर विचार कर कविता लिखने में व्यस्त थे। क्रेव ने ग्रामीण जीवन की वास्तविकता को कविताओं में दर्शाया है। ग्रामीणों की निर्धनता, सरलता, प्रेम, दुख इन सब का उन्होंने स्वाभाविक चित्रण किया है। प्रत्येक दृश्य, प्रत्येक भावना, प्रत्येक वस्तु जो उन्होंने काव्य-रचना के लिये चुनी, उसे विस्तृत रूप दे सच्चा तथा यथार्थ वर्णन किया।

इन सब लक्षणों से युक्त उन्होंने 'विलेज' (१७८३) 'दि पैरिश रेजिस्टर' (१८०७) तथा 'टेल्ल्स इन वर्स' (१८१२) की रचना की। इन कविताओं में क्रेव ने पोप तथा जॉनसन की छन्द शैली—दो पंक्तियों के तुकान्त छन्द-का प्रयोग किया। बहुत से पाठकों को क्रेव की कविता नीरस तथा निर्जीव प्रतीत होती है परन्तु क्रेव के समान यथार्थवादी कविता विरले ही कवियों ने लिखी है।

टॉमस चैटरटन—यथार्थवादी कविता लिखने में क्रेव ने जीवन के एक बड़े महत्वपूर्ण अंग की अवहेलना की थी। वह थी मनुष्य की कल्पना-प्रियता, उसकी कल्पित जीवन के प्रति रुचि जो उसे वास्तविक जीवन में दूर ले जाकर उसके लिये एक नये जगत का निर्माण करती है। इस अंग की पूर्ति टॉमस चैटरटन (१७५२-७०) ने की। चैटरटन केवल अठारह वर्ष की ही अवस्था में स्वर्गवासी हुए। परन्तु उन्होंने अपने 'राउली पोएम्स' तथा छोटी-छोटी कविताओं में मध्य युग की भावनाओं और उसके कल्पना जगत का सुन्दर परिचय दिया। साहित्यिक ग्रन्थेपकों ने चैटरटन की कविताओं को किसी अन्य लेखक की रचना प्रमाणित करने का प्रयास किया है। परन्तु उनके प्रमाण सन्तोष-जनक नहीं हैं। चैटरटन में अपूर्व प्रतिभा तथा अपूर्व ज्ञान था और यदि वे जीवित रहते तो कदाचित् उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना करते। परन्तु अल्पायु होने हुए उन्होंने अपने समय में एक प्राचीन धारा का पुनरुत्थान कर दिया था। उन्होंने यथार्थवाद के विपरीत काल्पनिकता की रक्षा कर उसी का नवीन जगत बसाना चाहा था। यह कार्य उनके समय में न होकर आगामी काल में सम्पूर्ण हुआ।

चौथा अध्याय

रोमैन्टिक काल,

वर्ड्सवर्थ, बायरन, शैली, कीट्स

रोमैन्टिक काल—उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में एक नये युग का जन्म होता है। इस नये युग में अठारहवीं शताब्दी के विपरीत अनेक साहित्यिक धाराएँ प्रवाहित हुईं। सबसे बड़ा परिवर्तन काव्य-विषय तथा (1) काव्य-शैली में हुआ। यद्यपि इन धाराओं का जन्म अठारहवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध के कवियों द्वारा हो चुका था तो भी उन्नीसवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध के ही कवियों ने उन्हें वेगवती बनाया।

इस साहित्यिक धारा को लेखकों ने 'रोमैन्टिक' नाम दिया है। हमें उन्होंने अनेक भावों का समावेश माना है। 'रोमैन्टिक' शब्द में वे नये युग की काल्पनिक वास्तविकता, सरलता तथा मानवता, प्रकृति दर्शन, प्रकृति-अनुकरण, जीवन के योग्यता तथा आध्यात्मिकता की और संकेत करते हैं।

पिछली शताब्दी के नागरिक जीवन की समस्याएँ जटिल हो रही थीं। बुद्धि, तर्क तथा मस्तिष्क के बल पर समाज अपने प्रश्नों का हल ढूँढ़ रहा था। पदार्थ-वाद, नामसिकता, तथा व्यापारी जीवन के दृष्ट में मनुष्य अपनी मानवता खो रहा था। व्यापार से लक्ष्मी का आगमन हो रहा था परन्तु उसके साथ ही मनुष्य का प्रेम, मनुष्य की साधुता, मनुष्य की नैतिकता विदा ले रही थी। नगर का जीवन ग्रामीण जीवन से बहुत दूर जा चुका था। ग्रामीण जीवन की सरलता, मानवता और शान्ति में नगर का मनुष्य परे था।

रोमैन्टिक पुनरुत्थान, इस ग्रामीण जीवन की और संकेत कर, मनुष्य आरावादी, सन्तोषप्रिय, सरल, शान्तिप्रिय तथा प्रकृति-पूजक बनाने प्रयत्नशील हुआ। इस वर्ग के कवियों ने अपने हृदय की अन्तरतम वृत्तियों को ही काव्य की आत्मा माना। पहले के कवि साहित्यिक तथा रागिक अध्ययन के बल पर काव्य-रचना करते थे। उनके विषय मनुष्य में मनुष्य के हृदय का स्थान कम और भाषा का स्थान अधिक था। जहाँ उस मनुष्य का स्थान विशेष था जो नगरवासी होकर अपनी सरलता

रोमैन्टिक काल

तथा अपनी मानवता, व्यापार-विनिमय की जटिलताओं में पड़ कर खो चुका था। यह मनुष्य प्रकृति से दूर पदार्थ-वाद का बन्दी था।

विलियम वर्ड्सवर्थ—इस पदार्थ-वाद से मनुष्य को मुक्त कर उसे प्रकृति तथा स्वाभाविक जीवन की ओर ले जाने का श्रेय महाकवि वर्ड्सवर्थ को है। विलियम वर्ड्सवर्थ (१७७०-१८५०) का जन्म 'लेक-डिस्ट्रिक्ट' अर्थात् जलाशयों के प्रदेश में हुआ और उनका बाल्य-काल प्रकृति की गोद में व्यतीत हुआ। अपनी युवावस्था में उन्होंने फ्रांस देश के क्रान्तिकारी लेखक रूसो की पुस्तकों का अध्ययन किया तथा फ्रांसीसी क्रान्ति की घोषणा से उत्साहित हो कर वे एक नये युग का स्वप्न देखने लगे। फ्रांसीसी क्रान्ति की स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृभाव के आदर्शों को वर्ड्सवर्थ ने बड़े गर्व से अपनाया और उन्हीं आदर्शों की नींव पर उन्होंने काव्य-रचना प्रारम्भ की। यद्यपि वे घोषणाएं राजनीतिक थीं किन्तु इनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति का श्रेय वर्ड्सवर्थ को ही है।

वर्ड्सवर्थ की सम्पूर्ण रचनाओं में प्रायः ये आदर्श समान रूप से नहीं मिलते। क्रमशः कवि ने फ्रांसीसी क्रान्ति की असफलता देखी और उन उच्च आदर्शों का भी पतन देखा जिसका वे स्वप्न देखा करते थे। कवि अब दुखी, क्रुद्ध तथा परम्परावादी हो चले और अपनी वृद्धावस्था में वहाँ तक हठधर्मी हो गये कि उन्होंने अपने पुराने आदर्शों को टुकरा कर अंग्रेजी पार्लेमेण्ट के अनेक प्रस्तावों का विरोध किया जो मनुष्य को विशेष राजनीतिक तथा सामाजिक अधिकार दे रहे थे।

वर्ड्सवर्थ का सम्स्त जीवन काव्य साधना में ही बीता। युवाकाल में वे फ्रांस चले गये। वहाँ क्रान्ति आरम्भ हो चुकी थी। कवि में आदर्शवाद के साथ-साथ प्रेम का भी आविर्भावन हुआ और उन्होंने वहाँ एक फ्रांसीसी सुन्दरी में अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया। परन्तु वे अपनी प्रेमिका और उसकी नवजात बालिका को छोड़कर शीघ्र ही दंगलिस्तान वापस आए और अपनी बहन डॉरोथी वर्ड्सवर्थ तथा अपने मित्र क्वेलरिज के सम्पर्क में रह कर काव्य-रचना आरम्भ किया।

डॉरोथी वर्ड्सवर्थ बड़ी सुशिक्षित तथा तात्त्विक बुद्धि की महिला थी। उन्होंने वर्ड्सवर्थ का ध्यान प्रकृति सुन्दरी की ओर आकर्षित किया और कवि के सम्मुख एक नया आन्तिक-स्वप्न अवतरित हुआ। प्रकृति की छाया में कवि के सन्तप्त हृदय को अपार शान्ति मिली। वह अब अपनी

प्रियसी को भूल गया। प्रकृति के सुन्दरतम आकर्षणों ने उसका मन मोह लिया। पक्षियों के गीतों में, प्रपानों के भर-भर में, वायु के सर-सर में कवि ने आध्यात्मिक सत्वों का विकास पाया और नागरिक जीवन के प्रति उसकी घृणा बढ़ती गई। अन्त में उसने प्रकृति-पूजन के नाग आदर्श की दुन्दुभि बजाई और मानव को प्रकृति की लुल्लुधिया में विधाम लेने की आमन्त्रित किया।

वर्ड्सवर्थ ने अपने मस्तिष्क के विकास की कहानी 'दि प्रिल्यूड' (१८२०) में लिखी है। इस कविता में कवि ने अपने अन्तरगत भावों के उत्थान तथा विकास का वर्णन बड़ी निष्कपटता से किया है। परन्तु कवि ने इस पुस्तक से उतनी ख्याति न पाई जितनी उन्हें 'लिरिकल व्रैलेड्स' काव्य संग्रह (१७०८) से मिली। उन्होंने अपने मित्र कोलरिज के सहयोग में यह पुस्तक लिखी थी। इस संग्रह के प्राक्कथन में कवि ने अपनी नई शैली तथा नवीन विषय चयन पर गूढ़ तर्क के साथ अपने साहित्यिक विचार प्रकट किए हैं। विषय चयन में नवीनता इसलिए है कि उन्होंने ग्रामीण जीवन का मनुष्य अथवा ग्रामीण जीवन के परिचित दृश्य ही समस्त कविताओं के आधार रखे हैं और शैली की नवीनता इसलिए है कि लेखक ने केवल वे ही शब्द ग्रहण किये हैं जो ग्रामीण अपनी दिन चर्या में प्रयोग करता था। कोलरिज ने भी नवीन विषय चुने। उन्होंने काल्पनिक जगत को वास्तविक जगत पर अवतरित करने का प्रयास किया और इसमें उन्हें अद्भुत सफलता मिली। परन्तु वर्ड्सवर्थ का साहित्यिक प्रयास बहुत अंशों में असफल रहा। इसमें सन्देह नहीं कि इन नवीन सिद्धान्तों को मौलिक रूप से वर्ड्सवर्थ ने ही कार्य-रूप में परिणित किया। 'मिक्सेल' इस संग्रह की सबसे सफल कविता है। इस कविता में कवि दुःखद चित्रों में काव्य की मर्यादा प्रतिष्ठित करता है। 'टिन्टर्न ऐबी' नामक कविता में कवि की वर्णनात्मक तथा विवेचन शक्ति पूर्ण-रूप से प्रगट है। 'एक्सकर्पन' में कवि नद्यपि एक छोटे कथानक पर कव्य-रचना करता है फिर भी स्थल-स्थल पर धार्मिक विश्लेषण तथा प्रकृति दर्शन मनोहर है। प्राचीन कथानक पर विरचित 'लायोडेमाया' आध्यात्मिकता तथा प्रेमावेश से ओत-प्रोत है। परन्तु वर्ड्सवर्थ की लोकप्रिय कविताओं में उनके गौरव गीत हैं जो प्रेम, प्रकृति, राष्ट्रीयता और आध्यात्मिक विषयों पर हैं। 'इम्मॉर्टैलिटी ओड' में कवि

'लेडी ऑव दि लोक'. (१८१०) में कवि ने अपनी कल्पनाशक्ति अपने अद्भुत-रस प्रेम तथा मध्यकालीन जीवन की ओर रुचि का परिचय दिया। योद्धाओं की प्रेम-साधना, युद्ध, करुण दृश्यों तथा, भावुक प्रेमिकाओं के सफल तथा रोचक चित्र स्कॉट ने अपनी कविताओं में खींचे हैं। परन्तु उनका काव्य-स्रोत क्रमशः सूखता गया और वे उपन्यास रचना की ओर प्रवृत्त हुए जहाँ उन्होंने बड़ी ख्याति पाई।

लॉर्ड बायरन—स्कॉट ने कविता लिखना वास्तव में बायरन के भय में छोड़ा। लॉर्ड बायरन ने रोमैन्टिक भारा के एक विशाल अंग को लेकर आधुनिक काव्य रचना प्रारम्भ कर दी थी। यह अंग था कल्पना-जगन की चारनिकता तथा स्वयं-वाद की प्रतिष्ठा। बायरन जब हीरो स्कूल में विद्यार्थी थे तो उसी समय से उनकी काव्य-रचना की इच्छा हुई। उसी समय उन्होंने एक काव्य-संग्रह 'आवर्स ऑव आइडिलनेस' प्रकाशित किया जो उनकी भावुक तथा विपाद-पूर्ण आत्मा का चित्रण करता है। इस पुस्तक की समालोचना में आलोचकों ने बायरन को दुर्बचन कहे और संग्रह की नीर मित्रा की। इस निन्दा का उत्तर बायरन ने 'दिंगलिश वार्ड्स एन्ड स्कॉच रिड्युअर्स' (१८०६) नामक कविता में इस तीक्ष्ण व्यंग्य और आदेश में दिया कि समालोचक समाज सिहर उठा और सदा के निरंशान्त हो गया। अब बायरन लंदन समाज के नायक बन गये। इनमें गर्व और घृणा आदेश तथा कार्य हीनता, करुणा तथा उत्साह के भाव प्रकट तथा मुन होने गये। वे इन्हीं विचार तरंगों में काव्य रचना करने गये और अपनी प्रथम रचना पर अपने जीवन, अपने चरित्र तथा अपने निजी आदर्शों की पूरी छाप लगा दी।

बायरन की पहली कविता जो लोक-प्रिय हुई, वह 'मियोर' (१८१३) की प्रथम कवि ने कल्पना जगन में विचर कर आनेक गालमिक तथा सुन्दर यारी कायादिभू किये। यह कविता इंगलिस्तान की नहीं बरन् समस्त यूरोप में लोक प्रिय हुई। इस पुस्तक के पाठक इसे बड़े चाव से पढ़ते थे। बायरन ने दूसरी कविता 'चाइलड्रेंस पिलाग्रिमेज' पुनः उसी विषय पर लिखी। यह (१८१३-१८) में प्रकाशित हुई। इस कविता में बायरन ने अपने जीवन की आनेक किंवदन्तियों तथा अपने जीवन के अनेक विचर-प्रसंगों को स्पष्ट रूप में वर्णन किया। नगरों के हृद्य, नगरों के विचर, अद्भुत कारवाओं के वर्णन, स्थान-स्थान पर

परसी विश शैली—जहाँ चायन इस युग भी अनिश्चय, अव्यवस्थित, आवेश-प्रियता के स्तंभ माने जाते हैं वहाँ परसी विश शैली (१७६२-१८२२) इस युग की आदर्श-प्रिया के स्तंभ हैं। शैली का जीवन अत्यन्त अशान्त तथा दुःखमय रहा। आत्मावस्था से ही वे अपने पिता टिमर्थी शैली के सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक आदर्शों के विरुद्ध रहे। टिमर्थी ने अपने आदर्शों के अनुसार उन्हें लैरो के स्कूल तथा ऑक्सफ़र्ड विश्वविद्यालय में शिक्षा के लिए भेजा जहाँ वे वे नस्तिकता पर लेख लिखने के कारण निकाल दिए गए। फलतः अपने राजनीतिक और सामाजिक आदर्शों के अनुसार उन्होंने काव्य-रचना आरम्भ किया। पारिवारिक अन्याय की विषमता ने वन डेरियट वेस्टवुड नामक कन्या से उन्होंने विवाह कर तो लिया पर अपने आदर्शों पर अटिग रहने के कारण उसकी आत्महत्या के मूल कारण भी हुये। मेरी गॉडविन के साथ अपने दूसरे विवाह से शैली सन्तुष्ट रहे और उन्हीं के साथ उन्होंने यूरोप में भ्रमण किया और वहाँ के दिव्य स्थानों-स्विट्ज़रलैंड तथा इटली में रहकर काव्य-रचना की। परन्तु ३० वर्ष की ही अवस्था में नौका विहार के समय एक तूफ़ान आने और नौका के डूब जाने से वे काल-कवलित हुए।

शैली के जीवन पर कई प्रभाव पड़े थे। फ्रांसीसी राजक्रान्ति की घोषणाओं ने उन्हें उद्वेलित किया, उनके मित्र हांग ने उन्हें राजनीतिक विषयों की ओर आकृष्ट किया तथा गॉडविन तथा उनकी स्त्री की लिखी हुई क्रमशः दो पुस्तकें 'पोलिटिकल जस्टिस' तथा 'राइट्स ऑव विमेन' ने उनके आदर्शों की पुष्टि की। ईसाइयों की धर्म-पुस्तक बाइबिल तथा यूनानी तत्ववेत्ता अफ़लातून (प्लेटो) के आदर्शों ने उन्हें नए जगत का स्वप्न दिखलाया। मानव समाज में अपने आदर्शों तथा अपने सिद्धान्तों का प्रचार कर एक नवीन संसार की स्थापना करने की उनमें प्रबल इच्छा थी। उनका सारा जीवन तथा उनकी सम्पूर्ण काव्य-साधना इसी प्रयत्न में लगी रही। उनकी प्रत्येक कविता में भविष्यवाणी करने तथा संसार का उद्धार-कर्त्ता बनने की प्रबल लालसा है।

अपनी पहली कविताओं-‘क्वीन माव’ तथा ‘रिवोल्ट ऑव इस्लाम’ में कवि ने रूढ़ि, सामाजिक क्रूरता तथा दासत्व के विरुद्ध आवाज़ उठाई। ‘प्रोमीथ्यूज अनवाउन्ड’ नामक नाट्य-गीत में कवि ने एक पौराणिक

जीवन से दूर एक अलौकिक, भय रहित तथा सौन्दर्य पूर्ण कल्पना जगत, की प्रतिष्ठा की। कीट्स की कुछ कविताएँ अपूर्ण रहीं। 'हाइपिरियन' में उन्होंने मिल्टन के आदर्शों के अनुसार महाकाव्य की रचना आरम्भ की जिसमें उन्होंने अपने दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन करना चाहा था।

कुछ कवियों तथा आलोचकों का कथन है कि कीट्स पलायनवाद में विश्वास करते थे। इसमें सन्देह नहीं कि कवि की पहली कविताओं में इसका आभास मिलता है, परन्तु उनके गौरव गीतों ने यह धारणा निर्मूल कर दी है। इन कविताओं में जीवन की भित्तिशों को ढूँढ़कर एक नवीन दर्शन सिद्धान्त प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है। मानव-समाज तथा मानव दुर्भाग्य पर कवि की पूर्ण दृष्टि थी। यदि कीट्स इतनी कम अवस्था में काल-कवलित न हो जाते तो हमें शेक्सपियर की समानता करने वाली रचनाएँ प्राप्त होतीं। कीट्स की असामयिक मृत्यु १८२१ ईसवी में हुई। उस समय वे केवल छब्बीस वर्ष के थे।

—:०:—

पाँचवाँ अध्याय

द्रे निम्सन, आरनल्ड, ज़ाउनिंग, फ़िट्ज् रेल्ड
स्विनबर्न, अरिडिय, हार्डी

सर्दमवर्ष तथा स्कॉट को छोड़ कर प्रायः सभी रोमैन्टिक कवि अपायु ही रहे। कीट्स की मृत्यु १८२१ ई० में, मैला की १८२२ ई० में तथा बायर्न की मृत्यु १८२४ ई० में हुई। चार वर्षों के बीच ही ये तीनों कवि संसार से चले गये। अंग्रेजी समाज में अभी भी काव्य-प्रेम अधिक था। यद्यपि सर्दमवर्ष तथा कॉन्स्टेबल अब भी कवितो लिख रहे थे किन्तु उनका काव्य-योग्यता कम हुई थी। आरनल्ड तथा स्कॉट लोकप्रिय थे परन्तु इस समय अंग्रेज स्कॉट छोड़ कर अन्य जनता को समान समय पर लोकरोजक कवियों पर संतुष्टी में डूब कर गेते थे।

सैम्युएल रोजर्स तथा टॉमस मूर—सैम्युएल रोजर्स ने 'इटली' की पद्य तथा टॉमस मूर की कविता लिखी तथा टॉमस मूर ने आस्ट्रिया जीवन के अन्त में 'एडिन्बरो' में रहकर 'एडिन्बरो' नामक 'काव्य-संग्रह' कविताओं

अपने समय के अनेक आधिष्ठातों, व्यापारिक समुदायों, नवीन आंदोलनों को ध्यान में रखकर कविता की जगह उनकी आकर्षिता बहुत बढ़ी। आर्केड टेनिसन की लोक-प्रियता का विशेष कारण उनका काव्य भावपूर्ण था। छन्द, अनुप्रास, शब्द-माधुर्य, लय तथा गीत काव्य की विशेषताओं से वे पूर्णतया परिचित थे। शब्दों की शक्ति, पंक्तियों की शक्ति तथा छंद, लय की सरसता उनके प्रत्येक गीत में पूर्णरूप से विद्यमान है।

एक विशेष वर्ग के कुछ आलोचकों ने कवि की निन्दा की है। यह इसलिये कि कवि स्पष्ट-रूप से जीवन की कठुता, उमरी विपत्तियाँ और उसकी यथार्थता का चित्रण नहीं करता। वह तो केवल मध्य युग के कल्पना-जगत में विचर कर एक ऐसे काव्य-जगत का निर्माण करता है जहाँ शब्दों की रागिनी, भावनाओं का तारतम्य और तर्कहीन आदर्शवाद की धूमिल ज्योति रहती है। वे ब्राउनिंग को अधिक यथार्थवादी मानते हैं।

रॉबर्ट ब्राउनिंग—रॉबर्ट ब्राउनिंग (१८१२-८६) ने भी अपनी कविता में समकालीन सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक आदर्शों तथा द्वन्द्वों का विस्तृत वर्णन किया है। उन्होंने भी साहित्य का समुचित अध्ययन किया था। मध्ययुग के इटली का साहित्यिक ज्ञान उन्हें यथेष्ट था। उस समय की आध्यात्मिकता तथा नैतिक धारणाओं से वे पूर्णतया परिचित भी थे। वे स्वभावतः जीवन के मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक विश्लेषणों में विशेष रुचि रखते थे।

इसी रुचि विशेष के कारण उन्होंने अपने काव्य विषय भी चुने। ये विषय मनुष्य के मस्तिष्क तथा आत्मा से सम्बन्धित थे। परन्तु इसके लिये केवल नाटक का ही माध्यम ठीक होता और ब्राउनिंग को भी नाटकीय वातावरण तथा नाटकीय विश्लेषण अधिक रुचिकर था। तिस पर भी उन्होंने नाटक का माध्यम न चुनकर कविता को ही अपनाया। इसका एक विशेष कारण था। मानव समाज के वर्ग-द्वन्द्व अथवा व्यक्ति-द्वन्द्व प्रदर्शन में ब्राउनिंग की कोई रुचि न थी। उनकी रुचि मनुष्य के अस्तित्व का विश्लेषण करने में थी। इसीलिये उनकी प्रायः सभी कविताएँ मनुष्य का आत्म-विश्लेषण करती हैं। परन्तु उनकी शैली नाटकीय है।

ब्राउनिंग की यह शैली निराली थी। नाटकीय स्वगत की शैली

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

उन्होंने अपने नाटकीय गीतों का एक लोकप्रिय संग्रह निकाला। १८५५ ई० में 'मैक एन्ड विमेन्' तथा १८६४ में 'ड्रेमेटिक्स परसानी' नामक काव्य संग्रह उन्होंने प्रकाशित किये। नाट्य-स्वगत शैली का विस्तृत प्रयोग ब्राउनिंग ने "दि रिंग एन्ड दि बुक" नामक पुस्तक में किया। यह नाट्य-काव्य कदाचित् अंग्रेजी साहित्य में सबसे बड़ा, दुरुह तथा कवि के दार्शनिक आदर्शों का पूर्ण परिचायक है। कथानक में एक अमानुषिक हत्या का वर्णन है और वातावरण इटली देश का है। इसी दुर्घटना से सम्बन्धित अनेक पात्रों का मानसिक विश्लेषण उन्होंने नाटक रूप में प्रस्तुत किया। यह कविता ब्राउनिंग की अन्य कविताओं से अधिक क्लिष्ट तथा विद्वत्ता-पूर्ण है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में कवि की ख्याति टेनिसन् से तो कम परन्तु उस युग के अन्य कवियों में कहीं अधिक हुई।

अंग्रेजी साहित्य में ब्राउनिंग की प्रतिभा का माप अत्यन्त कठिन है। चौदहवीं शताब्दी के साहित्यिक पुनर्जन्म की सम्पूर्ण छाया उनकी कविताओं पर है। नाट्य-साहित्य के स्मरणीय पात्रों का वर्णन उनके नाटकों में है। उनकी कविताओं में मानवत् के विजय की चर्चा तथा सांसारिक पक्ष, दुःख और विघ्न बाधाओं की तीव्र अवहेलना है। सांसारिक जीवन पर यदि कवि अपनी तीक्ष्ण दृष्टि डाल सकता तो उसकी कविता गूढ़, न्यायवादी तथा संपूर्ण होती।

मैथ्यू आर्नल्ट—इस युग में अन्य कवियों को ब्राउनिंग तथा टेनिसन् के समान लोकप्रियता नहीं मिली। इस श्रेणी में मैथ्यू आर्नल्ट (१८२२-८८) थे। उन्होंने शिक्षा-विभाग के कार्यों में लगे रहने पर भी काव्य-रचना की। आर्नल्ट, रानी स्कूल के प्रधानाध्यापक ऑफिसर आर्नल्ट के पुत्र थे और उन्हें प्राचीन साहित्य का बड़ा अच्छा ज्ञान था। यूनानी, लैटिन तथा फ्रांसीसी साहित्य का उन्होंने व्यापक अध्ययन किया था जिससे उनका कल्पना अगत यदि निष्प्राण नहीं तो अतिशय अक्षय्य था।

आर्नल्ट के दृष्ट्य में सांसारिक दुःखों के कुल-स्वरूप एक विचित्र अदृश्य है। संसार तथा अनेक सामयिक अतिम प्रश्नों का उत्तर वे स्वयं देना चाहते थे जो केवल दार्शनिक तथा तत्त्ववेत्ता ही कर सकते थे। अतः उनकी कविता में दार्शनिक तथा अल्प भावनाओं अधिक हैं और वे आर्नल्ट ने इसी आन्तरिक व्यथा को व्यक्त करने के लिये

डे निगन, आरनल्ट, ब्राउनिंग, फिट्जेरेल्ड स्विनबर्न

लेखनी उठाई तभी उन्हें काव्य-लेखन में सफलता मिल

है: काव्य की आत्मा है: उस है ।

कवि भी सफल रचनाओं में 'एम्पीडॉक्लीज ऑन एट्टना' 'दि फॉर-
नेक्न मरनेन', 'थरसिल', 'दि स्कॉलर जिप्सी', 'रग्नी चैपेल' तथा
'ओवर वीन' की रचना हैं । परन्तु जब जब अपने काव्यादर्यों को प्रस्तुत
करने के लिये कवि को रचना करनी पड़ी तब तब वह निष्प्राण तथा
अप्रिय रही । "गैरोपी" इती नाम्ना लोकप्रिय न हो पाई और "सोहराघ
एन्ड कस्तम" में भी काव्य की प्राण-प्रतिष्ठा न हो सकी ।

आरनल्ट की प्रतिभा विशेषतः गद्य साहित्य में यथेष्ट रूप से सुरक्षित
है । उनमें कविताएँ यद्यपि लोक-प्रिय न हो सकीं फिर भी काव्यशिल्प
काव्य और शौकशील लिखने में उन्हें अधिक सफलता मिली । परन्तु
आरनल्ट में कभी अधिक सफलता केवल एक ही अच्छी कविता लिये कर
एडवर्ड फिट्जेरेल्ड (१८०६-६३) की मिली ।

एडवर्ड फिट्जेरेल्ड—एडवर्ड फिट्जेरेल्ड यद्यपि काव्य रचना में
आलसी थे परन्तु उनमें काव्य-प्रेम अधिक था । उन्होंने भी इन युग की
काव्यशिल्प धारा प्रदूषण की और ईरानी कवि उमरखैयाम की कथाओं का
अंग्रेजों में स्वतंत्र अनुवाद किया । यद्यपि उनका यह अनुवाद पहले कुछ
दिनों तक लोक-प्रिय न हुआ परन्तु ज्योंही उसकी लोक-प्रियता बढ़ी, वह
फिर कम तक न पड़ सकी । कण्ठ रूप की समुद्रता, भाग्य का निरन्धर
पूर्ण भाग्यलोक प्रेम की पूर्णता, जीवन की उदररक्षा सभी इस कविता
में प्रदर्शित हैं । कवि की शक्ति यथनी है, किन्तु इसी में उसकी मौलिकता
का इसी नाजना के कारण फिट्जेरेल्ड का नाम अंग्रेजी साहित्य में
प्रसिद्ध है ।

हेनरी रोड्रीग रोडेटी—फिट्जेरेल्ड की लोक-प्रिय कविता में दिन
कविता के सारयुक्त कविता उनमें प्रथम हेनरी रोड्रीग रोडेटी (१८२८-८२)
थे । रोडेटी विशेषतः थे । उन्होंने अपने कविता के आदर्श को अपनी
आदर्शिक शक्ति में सर्वप्रथम कहा । एक शोभा के प्रमुख महत्त्व
होनाकर उन्हें, कविता तथा शोभा शिल्प का उद्भव में । रोडेटी ने प्राचीन
रचना के लिए अपनी ही निष्कर्षण को पुनर्जीवित करने का प्रथम प्रयास
किया है कविता की निष्कर्षण का प्रयोग । पर उन्होंने कविता के
प्रयोग को कविता के उद्भव में कविता का उद्भव । कविता की उन्होंने

स्वतंत्र रूप से सत्य के स्पष्टीकरण का आदेश दिया। उन्होंने न्यून यत्न आदर्श अपने सामने रख कर निच निचित्रन किये थे। काव्य-रचना में भी रोजेटी ने इन्हीं आदर्शों का पालन किया। तन्कालीन राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक वातावरण में उन्होंने अपनी कविता को अद्वैत रखा और चित्र-कला के आदर्शों को काव्य में प्रयुक्त किया।

(2) रोजेटी का मस्तिष्क कल्पनात्मक तथा छायावादी था। रहस्यवाद उन्हें प्रिय था। इसलिए उन्होंने अपने काव्य से यथार्थवादी भावों को दूर रखा। 'दि ब्लेड डेमोजेल' में उनकी कला स्पष्ट है। जो मानसिक द्वन्द्व रोजेटी में थे वे ही इस कविता में भी हैं। (कविता का कथानक तो यथार्थवादी है परन्तु वातावरण रहस्यवादी है।) रोजेटी छाया के देश में विचरण करते हैं। वहाँ वायु, जन्द्र, रसाविरंगे काल्पनिक जल राशि पर खेलती हुई लहरियों की उपमा से वे अपने उपमेयों की ओर संकेत करते हैं। 'पोयेम्स' (१८७०) तथा 'ब्लेड्स ऐन्ड सॉनेट्स' (१८८१) में छायावाद की पूर्ण छटा है। 'दि हाउस ऑव लाइफ' में उन्होंने प्रेम को मुख्य विषय मान कर रहस्यवादी कविताएँ लिखीं जिनमें आध्यात्मिकता का स्थान रसवाद ने ले लिया है। कवि का शब्दावली प्राचीन इटली के तत्ववेत्ताओं विशेषतः अरिस्टॉटल से ली गई है और कवि पर उनके रहस्यवाद का पूरा प्रभाव है।

चार्ल्स ऐलगर्नन स्विनबर्न—रोजेटी के चरित्र में विचित्र आकर्षण था। उस समय के युवाओं में जो उनसे विशेष रूप से आकर्षित हुए उनमें प्रमुख चार्ल्स ऐलगर्नन स्विनबर्न (१८३७-१९०६) थे। स्विनबर्न ने इटली तथा हंगरी में शिक्षा पाई थी। वे वहाँ दुखी रहे। परन्तु १८६६ ई० में 'पोयेम्स ऐन्ड ब्लेड्स' के प्रकाशित होते ही उन्होंने लंदन समाज को आकर्षित कर लिया। विकटोरिया के समय का साहित्य बहुत से यथार्थवादी विषयों से दूर था। समय ने उन पर परदा डाल रखा था और सभ्य समाज में उनकी चर्चा अनुचित तथा अश्लील थी। रोजेटी तथा स्विनबर्न ने इसी साहित्यिक प्रथा के प्रतिकूल रचना करनी आरम्भ की। अपनी कविताओं में स्विनबर्न ने ऐसे प्रेम का वर्णन किया जो विकटोरिया के काल के कृत्रिम वातावरण से दूर पूर्णतया यथार्थवादी था। उनकी कविताओं का प्रेम लिप्सा मय, स्वच्छन्द, क्रूर तथा कुत्सित था। अनुप्रास की प्रचुरता तथा लय की मधुरिमा के कारण इन कविताओं में रसवाद

ट्रेनिसन, आग्नलड, ब्राउनिंग, फिट्जेरे लड म्विनवर्न, मेरिटिश, हाडी

और भी गहरे रूप में है। प्रेम की अनेक कुन्मित भावनाओं का कदाचित् उन्हें स्वयं अनुभव न रहा हो। शायद उन्होंने अपने साहित्यिक पठन-पाठन अथवा सम्भवतः फ्रांसीसी लेखक बुद्लोयर की रचनाओं का विशेष महारा लिया होगा।

स्विनवर्न की अनेक रचनाओं पर जॉन कीट्स का भी प्रभाव है। कीट्स की सौन्दर्य-प्रियता तथा उनके रसवाद ने स्विनवर्न को आकर्षित किया था। यूनानी साहित्य का समुचित अध्ययन कर उन्होंने यूनानी जीवन की सौन्दर्य-प्रियता तथा सौन्दर्य-साधना का अपने-गीतों तथा नाटकों में पूर्ण परिचय दिया है। 'इटलिस्' में कवि की सौन्दर्य-प्रियता तथा उसके दो नाट्य-गीतों-'एटलैन्टा इन कैलीडन' (१८६५) तथा 'ट्रेकथियेस' (१८७६) में सौन्दर्य साधना का उत्कृष्ट परिचय है। स्विनवर्न की पहली रचनाओं में पुष्टता है, उत्तेजना है, उत्साह है। परन्तु जब प्रेम-विषयक उत्तेजनाओं को वे काव्य-रूप दे चुके और सुमधुर लय पूर्ण गीत रचना हो चुकी तो उनकी काव्य-प्रतिभा मन्द हो चली। उनमें उत्साह तथा भावावेश न रह कर केवल एक मन्द स्वर लहरी रह गई। केवल शब्दाडम्बर से ही चाहे उसमें मधुरता कितनी ही क्यों न हो, काव्य की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती। इसी कारण स्विनवर्न की अन्तिम रचनाएँ अधिक लोक-प्रिय न हो पाईं। स्विनवर्न अन्तिम समय तक काव्य रचना करते रहे, परन्तु उनके 'पोयेप्स ऐन्ड व्रैलेड्स' की सर्व-प्रियता उन्हें फिर न मिली।

'साँग्स विफोर सन राइज़' (१८७१) में उन्होंने इटली की स्वानन्द्य-प्रियता की प्रसिद्धि की; 'ट्रिस्टम् ऑव लियोनीज़' (१८८२) में उन्होंने ट्रिस्टम् तथा इज़ोलेट के कथानक को नए रूप में रखा और "गाडें ऑव प्रॉसरपीन" में उन्होंने सुगठित तथा भावुक शैली में काव्य रचना की। परन्तु जब जब कवि दिन-प्रतिदिन के अनुभवों के विषय पर काव्य-रचना करता तो उसकी कविता नीरस और उसकी शैली ओज-हीन हो जाती थी। कवि कि अन्तिम रचनाएँ इसी कोटि की हैं। केवल उसकी पहली रचनाएँ सजीव तथा उच्चकोटि की हैं।

स्विनवर्न ने शब्द-माधुर्य, ध्वनि-लालित्य तथा लय-गति को अपनी कविता में पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया है। शब्द तथा ध्वनिलहरी से आस्रावित कविता कदाचित् ही कोई दूसरा कवि इस उत्कृष्टता से रच

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

सका हो। अब काव्य को अन्य विषय तथा दूसरी शैली ग्रहण करने की आवश्यकता इसलिए थी कि स्विनबर्न की शैली उस स्थान पर पहुँच चुकी थी जिसके आगे उसकी प्रगति असम्भव थी।

विलियम मॉरिस—रोजेंटी तथा स्विनबर्न की सौन्दर्य प्रियता से विलियम मॉरिस (१८३४-१९०६) भी कम प्रभावित न थे। रोजेंटी का आदर्श, संसार की कुरूपता को सौन्दर्य में परिणत करना था और मॉरिस का आदर्श मनुष्य-कृत सभी वस्तुओं में सौन्दर्य-प्रतिष्ठा था। मॉरिस रस्किन के अनुयायी थे और रस्किन के ही गहन्यादर्श उन्होंने अपनाए। रस्किन का विचार था कि पूँजीवादी समाज में सौन्दर्य-सृष्टि इसलिए नहीं हो सकती क्यों कि वहाँ प्रत्येक पल व्यापारिक लेन-देन की उलझनों में फँसा रहता है। मॉरिस की भी यही धारणा थी। इसी कारण यद्यपि मॉरिस केवल कला प्रिय थे और क्रांति तथा दीवारों पर चित्रकारी किया करने के अन्त में साम्यवादी हो गए और क्रान्तिकारी आदर्शों के प्रणेता हुए।

टे' निसन, आरनल्ड, ब्राउनिंग, फ़िट्जे' रे' ल्ड स्विनबर्न, मेरिडिथ, हार्डी कहानियों में उन्होंने भविष्य का सुन्दर चित्रण किया है। और १८९६ ई० में प्रकाशित 'दि वे'ल ऐट दि वलर्ड्स एन्ड' में भविष्य के सौन्दर्य और उसके आकर्षण की इतनी स्पष्ट रूप रेखा दी जो कदाचित् ही किसी अन्य कवि ने दी होगी।

क्रिश्चना रोज़ेटी—'गॉवलिन मार्केट'—रोज़ेटी से प्रभावित कवियों में स्वयं उनकी बहन क्रिश्चना रोज़ेटी (१८३०-६४) थीं। क्रिश्चना रोज़ेटी का जीवन सरल, धार्मिक तथा अत्यन्त पवित्र था और अपने भाई के प्रति उनकी महान श्रद्धा थी। उनकी एक ही कविता लोक-प्रिय है और वह 'गॉवलिन मार्केट' है। इस कविता में कल्पना के रंगीन चित्र विशेष रूप से पाये जाते हैं। परन्तु ज्यों-ज्यों कवियित्री की धार्मिकता तथा रुढ़िवादिता बढ़ती गई उनका कल्पना श्रोत भी सूखता गया।

कॉवेन्ट्री पैटमोर—'दि एन्जिल इन दि हाउस', 'दि अन्नोन ईरोस'—क्रिश्चना रोज़ेटी के विपरीत कॉवेन्ट्री पैटमोर (१८२३-६६) में ज्यों-ज्यों आध्यात्मिकता बढ़ती गई उनका काव्य शक्ति तथा कल्पना शक्ति भी बढ़ती गई। पैटमोर वास्तव में रहस्यवादी कवि थे परन्तु उन्होंने यथार्थवाद की ओर भी समुचित ध्यान दिया। 'दि एन्जिल इन दि हाउस' (१८५४-६) नामक एक औपान्यासिक वर्णनात्मक कविता में उन्होंने गार्हस्थ्य जीवन की सफलता के लिये आदेश दिये हैं। "दि अन्नोन ईरोस" रहस्यवादी कविता है जिसमें गीतों द्वारा कवि ने रहस्यवाद का पूर्ण परिचय दिया है। भाषा तथा उपमाओं में कवि ने विशेष क्षमता प्रदर्शित की है और अनेक स्थलों पर जटिल रहस्यवादी भावों को सरलतापूर्वक पाठकों के सम्मुख रखा है। पैटमोर कैथलिक धर्म के अनुयायी थे और इस धर्म का प्रभाव उनकी कविता पर है।

फ्रैंसिस टॉमसन—कैथलिक धर्मावलम्बी दूसरे कवि फ्रैंसिस टॉमसन, पैटमोर से अधिक काव्य-पूर्ण नहीं हैं। टॉमसन दरिद्र तथा दुःखी वंश के थे और अपने दुःखी जीवन के कारण उनको समाज से सान्त्वना भी अधिक मिली जिसके कारण उनकी कविता भी विशेष लोक-प्रिय हुई। टॉमसन की कविता में वाच्य आकर्षण अधिक है। शब्द तथा लय के माधुर्य के कारण उनकी कविता में एक अद्भुत आकर्षण है। 'दि हाइन्ड ऑव हेदिन' नामक कविता श्रवण और नर्व प्रिय है।

इस कविता में टॉमसन ने ह्यागवादी अनुभवों तथा उनके शक्तियों का गहन वर्णन किया है।

क्रमशः इस युग में कविता की ओर से लेखकों की रचना बढ़ती गई। इसका कारण यह था कि उपन्यास का आकर्षण साहित्य में बढ़ रहा था। कवि अथवा भी कविता लिखते थे परन्तु कुछ ही दिनों बाद उपन्यास लिखने की प्रेरणा उन्हें अपनी ओर ले जाती थी। जॉर्ज मेरिडिथ इसी श्रेणी के कवि थे।

जॉर्ज मेरिडिथ—मेरिडिथ (१८२८-१६०६) ने पहले पहले अत्यन्त भाव-पूर्ण तथा सरल गीतों की रचना आरम्भ की। प्रेम और तन्मयता उनके प्रधान विषय रहे जिसका प्रदर्शन उन्होंने "लव इन दि वैली" नामक कविता में किया। 'भाँड़न लव' (१८६२) में भी उन्होंने प्रेमी जीवन का विश्लेषण बड़ी सरलता से किया है। परन्तु उनकी कविता क्लिष्ट तथा जटिल होती गई। 'पोयेम्स ऐन्ड लिरिकम्' में यद्यपि नैतिकता तथा जीव-विज्ञान का समुचित विश्लेषण है तो भी भाषा जटिल और भाव दर्शन के द्रोक्ष से अस्फुट हो गये हैं।

जॉर्ज मेरिडिथ का दार्शनिक विश्वास था कि मनुष्य की आत्मिक तथा आध्यात्मिक प्रगति में पदार्थवाद तथा जड़वाद बाधक है। इन्हीं बाधाओं और अपनी दुर्बलताओं के कारण मनुष्य आत्मिक पथ पर नहीं चल सकता। यदि मनुष्य को उसका मानसिक तथा सामाजिक दुर्बलताओं का ज्ञान हो जाय तो उसे आध्यात्मिक पथ पर चलने में सहायता मिलेगी। कविता में यह आध्यात्मिक निदेश कठिन था। उपन्यास में यह सरल तथा रोचक हो सकता था। फलतः मेरिडिथ ने हर्ष पूर्ण नाटक को उच्च स्थान दिया और इसी सिद्धान्त को प्रमाणित करने के लिए वे स्वयं हर्ष पूर्ण उपन्यास लिखने लगे।

मेरिडिथ दार्शनिक कवि थे परन्तु इसके विपरीत टॉमस हार्डी यथार्थवादी थे। उन्होंने जीवन के कठ अनुभवों का प्रदर्शन करने के लिए अनेक गीत लिखे। इन गीतों के कई संग्रह उन्होंने प्रकाशित किए और सभी में हार्डी ने अपने यथार्थवादी विचार प्रगट किए हैं।

टॉमस हार्डी—टॉमस हार्डी (१८४०-१९२८) का विश्वास था कि मानव-जीवन दुःख मय सन्तापमय तथा दम्बान्त है। मानव की

टै निसन, आरनल्ड, ब्राउनिंग, फिट्जे रेल्ड स्विनबर्न, मेरिडिथ, हार्डी क्रूरता के शिकार हैं। वह शक्ति जिस हम ईश्वर के नाम से पुकारते हैं क्रूर, अमानुषिक तथा कुचक्र रचने वाली है। मनुष्य इसी ईश्वर के चक्रव्यूह में पड़ कर दम तोड़ देता है। इन्हीं विचारों को उन्होंने अपने छोटे गीतों में सरलता तथा तीव्रता के साथ प्रगट किया है। ये गीत-चित्र हृदयग्राही तथा स्पष्ट हैं।

परन्तु हार्डी ने अपने यथार्थवादी अनुभवों का सत्र में स्पष्ट तथा हृदय-विदारक चित्रण अपने उपन्यासों में किया है, जो कालचक्र द्वारा मानव की अमानुषिक हत्या के ज्वलन्त उदाहरण हैं। हार्डी ने 'डाइ-नैस्ट्स' (१९०४-८) नामक एक नाटक भी लिखा जिसमें उन्होंने नेपोलियन के समय के यूरोपीय राज्यों तथा सामाजिक द्वन्द्वों का अद्भुत चित्रण किया है। यद्यपि यह नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत करने योग्य नहीं फिर भी इसके अनेक स्थल जहाँ मानवी भावनाओं का विवेचन हुआ है चित्ताकर्षक हैं।

सी० एम० डाउटी—'दि डॉन इन ब्रिटेन'—'डाइनेस्ट्स' की श्रेणी में रखने वाले ऐतिहासिक काव्य बहुत कम रचे गए। सी० एम० डाउटी (१८४३-१९२६) ने 'दि डॉन इन ब्रिटेन' नामक कविता में प्राचीन काल की सभ्यता के चित्र प्रदर्शित किए। वर्णनात्मक कविताओं में इसकी श्रेष्ठता का कारण इसकी नवीनता तथा इसकी सरल तथा स्पष्ट भाषा शैली है। कवि को न तो भाषा ही सौन्दर्य पूर्ण है और न उममें काव्य का लालित्य ही है। केवल विषय-नयन और विविध स्थलों के सामंजस्य की दृष्टि से ही यह कविता श्रेष्ठ है।

रॉबर्ट ब्रिजेज—'दि टेस्टामेंट ऑव व्यूटी'—रॉबर्ट ब्रिजेज ने भी एक विशाल कविता 'दि टेस्टामेंट ऑव व्यूटी' १९२६ में प्रकाशित की जिसमें उन्होंने आध्यात्मिक रूप से सौन्दर्य शक्ति की व्याख्या की है तथा तर्क का स्थान निर्धारित किया है। ब्रिजेज की यह कविता दर्शनात्मक है। यद्यपि उन्होंने अनेक गीत बहुत से विषयों पर लिखे हैं परन्तु "टेस्टामेंट ऑव व्यूटी" ही लोक-प्रिय हो सकी। इस कविता का छन्द अतुकान्त तथा भाषा प्रज्ञाहर्षण है।

ऑस्कर वाइल्ड, अरनेस्ट डाउसन, लायने लु जॉनसन, ए० ई० हाउज़मन—रॉबर्ट ब्रिजेज के श्रेणी के कवि भी इस ज्यॉर्जियन युग में कम हुए। ऑस्कर वाइल्ड ने कविता अवश्य लिखी परन्तु उनकी रूपाति

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

उनके नाटकों तथा गद्य के ही कारण विशेष हुई। अर्नेस्ट डाउसन ने प्राचीन काव्य-संकेतों को कविता में नवीन रूप दिया; लॉयनेल जॉनसन ने सरल, संक्षिप्त तथा रिनग्वे गीतों की रचना की तथा ए० ई० हाउज़मन ने केंब्रिज विश्वविद्यालय में लैटिन भाषा के आचार्य के पद पर रह कर अनेक यथार्थवादी अनुभवों को काव्य में स्थान दिया।

हाउज़मन ने "श्रॉपशियर लैंड" १८६६ ई० में प्रकाशित किया। इसके प्रकाशन से साहित्य में एक नवीन जागृति हुई। 'लास्ट पोयेम्स' (१८२२) में भी हाउज़मन ने नवीनता की ज्योति जगाई। उनकी भाषा तथा उनकी शब्दावली वही है जो समाज में स्वभावतः व्यवहृत होती है। उन्होंने उन्हीं लयों, छन्दों तथा यतियों का प्रयोग किया जिनका मनुष्य स्वभावतः व्यवहार करता है। परन्तु हाउज़मन की सरलता के पीछे जीवन की कद्रता तथा उसकी विपमता के अनेक चित्र हैं। हाउज़मन में महान विद्वत्ता थी और यदि वे काव्य-रचना में अपने काव्य गुणों का पूर्ण व्यवहार करते तो उनकी गणना कदाचित् श्रेष्ठ साहित्यिकों में होती।

रुपर्ट ब्रुक—व्याजियन कवियों में अन्तर्गत हाउज़मन पर आलोचकों की नकद दृष्टि तो कम रही परन्तु रुपर्ट ब्रुक के ~~चतुर्दशी~~ (मॉनेट) गीतों की उन्होंने तीन अलोचना की। समालोचकों का कथन था कि इस वर्ग के कवियों में न तो काव्य की प्रतिभा और न मानव हृदय की ज्ञान ही है। ये कवि केवल नमकालीन आन्दोलनों, अस्थिर भावों तथा अनुपयुक्त विषयों के आचार पर काव्य रचने के प्रयत्न के तल्लान थे। उनमें न तो भाव की सद्भाव थी और न आदर्श-मिश्रता जिससे वे श्रेष्ठ काव्य-रचना कर सकते। रुपर्ट ब्रुक की कविता भी इसी श्रेणी की है। उन्होंने प्रथम सदायुक्त के विषय लेकर राष्ट्रीयता, देश-भक्ति, तथा कर्त्तव्य पर आधारित गीत लिखे। ब्रुक के लिये युद्ध एक ऐसी महान् योजना है जिससे एकदम अपने को जीवन तथा निर्मल बना लेना है। इस प्रकार के गीतों के आदर्शों से लेना जमना तो युद्ध की क्रूरता, अमानुषिकता तथा इस युद्ध के नतीजे भी कोई गन्तोप न था सकती थी। इस युग के कवियों में सर्वोपरि वे कावेर अतिरिक्त सर्व श्रेष्ठ थे।

रुपर्ट ब्रुक के काव्य-रचना में स्वयं-देश की रक्षा का आदर्श अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कदा-कदा

टै निसन, आरनल्ड, ब्राउनिंग, फिट्जेरेल्ड, स्विनबर्न, मेरेडिथ, हाडी

रहस्यवाद की हलकी छाया उनकी कविताओं तथा गीतों पर है परन्तु माधुर्य की कमी कहीं भी नहीं है।

जेम्स एलरॉय फ्लेकर—माधुर्य की दृष्टि से जेम्स एलरॉय फ्लेकर की कविताएँ अधिक श्रेष्ठ हैं। फ्लेकर फ्रांसीसी तथा ईरानी भाषा के विद्वान् थे। उन्होंने फ्रांसीसी तथा ईरानी कविता की मधुरिमा अंग्रेजी कविता में स्थापित करना चाही और उन्हें सफलता भी मिली। फ्लेकर की कविता में लय की प्रधान विशेषता है जिसके कारण उनकी पक्तियों में विचित्र हृदय ग्राहिता है।

जॉर्जियन वर्ग के कवियों पर यह मुख्य लान्छन था कि वे काव्यों में न तो नवीनता ला सकते थे और न हृदय-ग्राहिता। बहुत से कवियों का भी यह मत था कि कविता जितनी यथार्थ जीवन के निकट आ सके उतनी ही सर्व प्रिय होगी। जो कविता यथार्थ जीवन से दूर स्वप्नों का जगत बसाती है श्रेष्ठ कविता नहीं हो सकती है।

जॉन मेसफ्रील्ड—इसी आदर्श को सम्मुख रख जॉन मेसफ्रील्ड ने काव्य रचना प्रारम्भ की। मेसफ्रील्ड पहले समुद्री जीवन से सम्बन्ध रखने वाले नाविकों के जीवन-विषयक गीतों की रचना करते थे परन्तु इस नवीन आदर्श को अपनाने के पश्चात् उन्होंने आधुनिक जीवन के कटु तथा विषम अनुभवों को सम्मुख रख कर काव्य रचना की। “दि एवर-लास्टिंग मर्सी” तथा “टैफ्रोडिल फ्रील्ड्स” में कवि ने उन शब्दों का प्रचुरता से प्रयोग किया है जिनका प्रयोग दलित समाज को, धृष्ट तथा आवेश में करता है। उन्होंने दलित वर्ग के दुःख, शिथिल तथा अपवित्र और गन्दे जीवन के विषय पर कविता की और यथार्थवाद को संपूर्ण रूप से निभाया। छन्द तथा लय भी कवि ने वही चुने जो इसी यथार्थ-वादी जीवन में मेल खाते और उसकी आत्मा के परिनायक थे।

जेरेल्ड मैन्ली हॉफकिन्स—यथार्थवादी साहित्य की धारा में सहयोग देने वाले कवियों में जेरेल्ड मैन्ली हॉफकिन्स उल्लेखनीय हैं। १९११ में प्रो. मैन्ली हॉफकिन्स ने आधिकारिक रूप से यथार्थवाद का परिचय-दिया है। यद्यपि हॉफकिन्स ने अधिक कविताएँ नहीं लिखीं तो भी जो कविताएँ हैं उनमें अपूर्व मौलिकता, नवीनता तथा काव्य शक्ति है। उन्होंने अपनी कविता में अपने आधुनिक तथा धार्मिक और आध्यात्मिक भावों का अत्यन्त विस्तृत परिचय दिया

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

हे। सत्रहवीं शताब्दी के पश्चात् कदाचित् ही कोई कवि ऐसा होगा जो हॉकिन्स की मौलिकता तथा उनके गहरे अनुभव की समानता कर सके।

हॉकिन्स ने अनेक युवा कवियों को काव्य मार्ग दिखलाया और इन कवियों ने उनके निर्दिष्ट पथ को ग्रहण कर महत्वपूर्ण काव्य-रचना की जिसमें आधुनिक युग की विपमता तथा उसकी जटिलता का पूर्ण चित्रण है।

विल्फ्रिड ओवेन—आधुनिक जीवन की विपमता के चित्रण में विल्फ्रिड ओवेन श्रेष्ठ हैं। युद्ध-जनित युग के मानव का अपूर्व चित्रण कर उन्होंने इस युग की कुत्सितता तथा क्रूरता को काव्य-रूप में पाठकों के सामने रखा है।

टी० एम० इलियट—आधुनिक कवियों में इलियट तथा येट्स का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। टी० एम० इलियट ने अपनी कविता तथा गद्य से आधुनिक साहित्यिक क्षेत्र में क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। इलियट अत्यन्त विद्वान व्यक्ति हैं। प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य का उन्हें प्रगाढ़ ज्ञान है। क्रांतीय साहित्य तथा जैम्स के समय के नाटक कारों तथा कवियों की कविताओं ने उन्होंने अपनी भाषा-शैली ग्रहण की है।

इलियट की प्रथम कविताएँ १९१० ई० में 'प्रक्राक' नामक संग्रह में प्रकाशित हुईं। इन कविताओं में नाट्य-युग नाटकीय रूप से निहित है। इलियट न अनावादा ध्वनि नहीं हैं। 'प्रक्राक' में कविने आधुनिक कवयिता का शौक-शक्ति की कटु आलोचना कर जटिल उपमाओं द्वारा अपने विचारों की पूर्णता की है। 'वेम्बलेन्ड' में कवि ने अधिक विस्तार तथा गहनता से इस युग के अज्ञानजनित तथा अंधाधुंधिता का पूर्ण चित्रण किया है। प्रथम महायुद्ध के पश्चात् यूरोप में नवीन काव्य-धारा प्रकटित हुई थी जिसमें मानव जीवन का अशांति, शोक, हय तथा दुःख का चित्रण था। इसी जीवन का समुचित उल्लेख 'वेम्बलेन्ड' में है। इस कविता का यह अर्थ उल्लेखित है। इलियट ने 'मर्टर इन दि टाइम' नामक संग्रह में अनेक आदर्शों का प्रतिपादन नाटकीय रूप में किया है। इन कविताओं पर आधुनिक इन्द्र और द्विविधा का प्रभाव स्पष्ट है। टी० एम० इलियट की काव्य-धारा तथा उनकी

दो निगल, आरनल्ल, काउगिग, फिटजे रेल्ड, म्बिनवर्न, मेरिटिथ, शार्डी
 के अनेक स्थल माधारगण पाठकों को समझ में पड़े हैं। काव्य की अपेक्षा
 गद्य क्षेत्र में इनिवट का स्थान अधिक बेहतर है।

दृश्यल्यु० जी० येट्स—आधुनिक युग की विविध काव्य-धागाओं का
 नामंजस्य यदि किसी आधुनिक कवि में है तो वह दृश्यल्यु० जी० येट्स में है।
 येट्स (१७६५-१९३६) की कविता में प्राचीन तथा नवीन दोनों युगों
 का सामंजस्य है। प्राचीन युग की सख्त मिनश्चता, मध्य कालीन काल्पनिकता
 तथा आधुनिक बंधार्थवादिता, सभी की लया येट्स की कविता पर है।
 'दि लोक आरल ऑव आरनिशक्री' गीत में काल्पनिक जीवन की बड़ी
 मधुरिमा है जो संगैटिक कवियों में भी। येट्स का यह विश्वास था कि
 काव्य को र्भाषी तथा ज्ञानत र्गवने के लिये नवीनता की बड़ी आवश्यकता
 है और इसके लिये यह आवश्यक नहीं कि प्राचीन काव्य-धारा का
 निरन्कार किया जाय।

इसी मितान्त को लेकर कवि ने चार संगत 'दि वाटल्ट स्वान्मू एंड
 कूल', 'मिकेल रावर्ट्स एन्ड दि टान्मर', 'दि ज्वर', तथा 'दि वाटल्टिंग
 स्टैयर' प्रकाशित किये। येट्स ने इन कविताओं में किंवदन्तियों, लोक
 गाथाओं तथा हिनोउदेशात्मक कहानियों के सामंजस्य में मौन्दर्य प्रसा,
 कल्पना मय तथा भावुक गीतों का सुन्दर काव्य संगार निर्माण किया है।

येट्स की कविता में प्राचीन, मध्य तथा नवीन युग के चिन्तों का
 केलन समन्वय ही नहीं वरन् उनकी कल्पना में बड़ी विस्तार है जो स्पेन्सर
 तथा शेक्सपियर में था, और मानवता में उनका वैसा ही विश्वास है
 जैसा चॉसर में था। नास्तव में येट्स अंग्रेजी काव्य की बहुमूर्ती प्रतिभा
 के श्रेष्ठ परिचायक हैं।

दूसरा खण्ड
नाटक

पहला अध्याय

धार्मिक नाटक

मार्लो, लिली

आरम्भ-काल—ग्रैको नाट्य-रचना के प्रारम्भिक काल के सम्बन्ध में अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। इतिहास लेखकों का कथन है कि ईगलिप्तान में रोमन आक्रमणकारी अपने साथ रंगमंच तथा नाटक भी लाए थे और ईगलिप्तान में उन्होंने विशाल रंगशालाएँ स्थापित की परन्तु उनके ज्ञान ही थे रंगशालाएँ नष्ट हो गईं।

भाट—मध्य-युग में नाटकों का कोई स्थान न था। परन्तु जनता ने अपने आनन्द के लिये विदूषकों, गायकों, भाटों तथा नटों को अपना लिया था। इनमें भाट सर्व प्रिय रहे। गज्यटवारी, युद्धस्थलों, अखाड़ों, विवाहोत्सवों तथा राजारों में उनके गीतों, कहानियों और वीर गाथाओं को लोग बड़े चाव से सुनते थे। माधारणतः भाट निर्धन होते और हीन समझे जाते थे परन्तु जिन पर राज्य कृपा होती थी अथवा जिनमें गायन प्रतिभा होती थी वे धनी भी हो जाते थे।

भाटों की मनोरंजन प्रियता से यात्रियों का भी विशेष मन बहलावा होता था। धार्मिक स्थानों तथा तीर्थों को जाते हुये यात्री अपनी नारस यात्रा को इनके साथ सहज ही फाँट लेते थे। यद्यपि ये भाट तथा नट, समाज का इतना सफल मनोरंजन करते थे तो भी ईसाई मिर्जों के पादरी तथा धार्मिक पुरोहित इनके विरुद्ध रहा करते थे। वे इनकी मनोरंजन प्रियता का पाप और इन्हे नारकीय समझते थे। प्रत्येक मिर्जे में कुछ न कुछ भिक्षु भी रहते थे। ये भिक्षु भी पहले तो इन विदूषकों के विरुद्ध रहे किन्तु क्रमशः वे लोग भी इनकी मनोरंजन-प्रियता से प्रभावित हुए।

भाँड़-अप्रतिभ कर दिया करती थीं। पादरियों की वह श्रमदा था इसलिये उन्होंने इन विनोदी टोलियों का चर्चा में भी बहिष्कार कर दिया।

परन्तु इन विनोदी टोलियों का अर्थ एक बड़ा वर्ग बन गया था। उनका अपना एक अलग अस्तित्व था। ग्रान्थ प्रदान एक तरह से उनका व्यवसाय ही माना था। उनके द्वारा अभिनेताओं का एक जति ही अलग बन गई।

नाटक-संछलियों—उस तरह से अभिनेता गिर्जे के ग्रन्थ नीला करते और पादरियों का सहयोग प्राप्त करने से उस समय तक व लीटिन भाषा ही प्रथम व्यवहार में लाने लीं। पादरी वर्ग को लीटिन ही में धर्मोपदेश करता था। परन्तु जब ये विनोदी टोलियाँ स्वयं अपना कथानकों को प्रस्तुत करनी लीं श्रमजी का प्रयोग करनी भी। सामाजिक दृष्टि से ये टोलियाँ अब अभिनेताओं का एक वर्ग ही गईं। अब इस वर्ग में पादरियों का कोई स्थान न रह गया। इस प्रकार स्वाभाविक रूप में अनेक अभिनय टोलियाँ बन गईं। इन टोलियों ने अपनी सहायक मण्डलियों भी बना लीं और धार्मिक पर्वों तथा उत्सवों पर जगह-जगह अपना अभिनय करने लगीं। ये अभिनय विशेषतः ईसा तथा अन्य सन्तों की जीवना के उद्धरण मात्र होने थे और बीच-बीच में निरूपक अपनी विनोद, पिता का परिचय देना जाना-ता-—

प्रत्येक गाँव तथा कस्बे में ये अभिनय लोक प्रिय थे। किन्तु एक ही मण्डली सबको एक ही समय पर गन्तुष्ट नहीं कर सकती थीं। फलतः पारस्परिक सहयोग हुआ जिससे ये सब जगह पहुँच जाते थे। इन मण्डलियों के पास अभिनय सामग्री, पोशाक तथा नलता-फिरता रंग-मंच भी जिन पर ये अभिनय-प्रदर्शन करते होता था। नाटक साहित्य के इतिहास में इन मण्डलियों तथा जिसे रंगमंचों का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि आधुनिक मंच का प्रारम्भिक रूप इन्हीं मण्डलियों में पाया जाता है।

ऐतिहासिक ग्रन्थों में अनुमान होता है कि उस समय अनेक मण्डलियाँ रही होंगी और अनगिनत अभिनय प्रदर्शित होते रहे होंगे। यद्यपि उस समय के जो नाटक मिलते हैं वे संख्या में कम हैं तो भी इसमें सन्देह नहीं कि ये नाटक प्रत्येक स्थान में प्रिय रहे।

नाटक-संग्रह—उस समय के चार नाटक-संग्रह सुरक्षित हैं। पहला

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

चेस्टर, दूसरा यॉर्क, तीसरा ट्राउली अथवा वेकफ़ोल्ड और चौथा कॉवेटी हैं। यॉर्क संग्रह ही सम्पूर्ण है और उसमें ईसाई धर्म-पुस्तक बाइबिल के प्रथम परिच्छेद-संसार-रचना से लेकर प्रलय के अन्तिम दिन तक की गाथाएँ नाटक रूप में हैं।

इन चारों संग्रहों में नाट्य-कला की भी अभिव्यक्ति हुई है। लेखकों ने इनमें नाटकीय तत्वों का परिचय दिया है। परन्तु इनमें कुरुण रस की प्रधानता है। यद्यपि मूल कथा से लेखक विमुख नहीं हुए तो भी उन्होंने विनोदों का उपयोग भी किया है।

मिरेकिल्स तथा इन्टरलूड्स—जिन नाटकों में सन्त जीवनी तथा उनके अद्भुत धर्म कार्यों का वर्णन किया गया है वे मिरेकिल्स नाम से प्रख्यात हुए। विनोदों को इतिहास लेखकों ने इन्टरलूड्स नाम दिया है।

कुलु समय के बाद इन धार्मिक नाटकों ने एक दूसरा ही रूप अर्पण कर लिया। अनेक नाटकों में नाटककार मानव पात्रों का रंगमंच पर प्रयोग न कर के केवल पाप और पुण्य के आध्यात्मिक स्वरूप लेकर ही पात्र रचना किया करते थे। नायक प्रायः मानव अथवा समाज का प्रतीक होता था और अन्य पात्र-पाप और पुण्य के प्रतीक। इन्हीं दोनों के द्रव्य स्वरूप पुण्य की सनत विजय दिखलाई जाती थी। ये नाटक बहुत दिनों तक लोक प्रिय रहे। इन तथ्य का प्रत्यक्ष उदाहरण 'एवरी मैन' नामक नाटक है जिसका लोक प्रियता पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त तक चली रही। इस श्रेणी के नाटकों की 'मोर्गेलिटीज' नाम मिला है।

मोर्गेलिटीज—मोर्गेलिटीज में यद्यपि पात्र केवल आध्यात्मिक प्रतीक, मानव ही नहीं, लेखकों ने उन्हें अनेक मानवी गुणों से विभूषित किया है। उनका प्रधान उद्देश्य तो नैतिक अथवा धार्मिक शिक्षा प्रदान करना था। इन दृष्टि से ये नाटक सरली रचनाएँ हैं। इनमें वास्तविकता है, अर्थ-वादिता है, सरली है तथा आगे लिये जाने वाले नाटकों का

धार्मिक नाटक

विनोदाकों का रंगमंच पर अभिनय करते थे। इन नाटकों में नाते की मात्रा कम परन्तु हास्य की मात्रा विशेष रूप में रहती थी। ये केवल पात्रों के संवादों द्वारा ही हास्य प्रस्तुत करते थे। कभी कभी वे नाट्य पूर्ण स्थलों में हास्य प्रस्तुत करते परन्तु संवाद ही प्रधान माध्यम थे। इन्टरलूड्स तो केवल दो तीन पात्रों को एकत्रित कर हास्य युक्त संवाद द्वारा दर्शकों का मनोरंजन करते थे। उनमें न तो कोई कथानक और न कोई द्रन्द ही था। नाट्य साहित्य में महत्वपूर्ण इन्टरलूड्स हेनरी गेट्वेल लिखित 'फ़्लजेन्स एन्ड लूकर्स', हेडुड रचित 'दि ग्ले ऑव दि वेटर' तथा १५२० में लिखित 'गेरी ग्ले विट्वीन दि पार्टनर एन्ड दि फ़ायर, दि क्युरेट एन्ड 'दि नेवर प्रेट' तथा १५३३ ई० में विरचित 'जॉन दि हसवेन्ड ट्रिप हिज़ वाइफ़ एन्ड सर जॉन दि प्रीस्ट' हैं।

इन महत्वपूर्ण विनोदाकों में हास्य युक्त संवाद के साथ-ही-साथ नाटक के कुछ आवश्यकीय अंग भी पाये जाते हैं जैसे कथावस्तु और पात्र विशेष: जिनमें कर्कशा स्त्री, भोला पति तथा कपटी पादरी उल्लेखनीय हैं। कही-कही इनमें नैतिकता का भी संकेत है।

इस समय युरोप में एक नवीन जागृति हो रही थी जिसका कारण ऐतिहासिक था। प्राचीन शास्त्रों तथा अग्र्यान्व विद्याओं के अंगों के अध्ययन का प्रधान स्थान यूनान था। कविता तथा नाटक, ज्योतिष तथा विज्ञान, शिल्प तथा चित्रकला सभी के विद्वान् तथा मर्मज्ञ मग्न पहले यही हुये थे। इसी समय तुर्कों ने यूनान पर आक्रमण किया। यूनानी विद्वान अपनी रचनाएँ लेकर तितर-बितर हो गये परन्तु उनमें से बहुत से कुस्तुनतुनियों में जाकर वहीं बस गये। इन्हीं विद्वानों ने विद्या प्रसार में बड़ी सहायता पहुँचाई। कुस्तुनतुनियों एक प्रकार का ज्ञान तीर्थ बन गया। यूनानी ज्ञान की ज्योति सारे युरोप में फैल गई। लेखकों, कवियों, राजनीतियों समाज सुधारकों धार्मिक महन्तों आदि सभी पर इस नवीन जागृति का प्रभाव पड़ा।

इंगलिस्तान भी इस जागृति के प्रभाव से वंजित न रह सका। अग्रेजी लेखकों के सम्मुख यूनान तथा रोम के सारे काव्य तथा महाकाव्य थे। वे उन्हें चाव से पढ़ते और उनसे प्रभावित होकर नवीन काव्य रचना में संलग्न होते थे। नाट्य-साहित्य, रोम तथा यूनान के लेखकों से पूर्णतया प्रभावित तो न हो सका तो भी कुछ न कुछ प्रभाव उम पर अवश्य पड़ा।

अंग्रेजी नाट्य-साहित्य जातीय रूप से ही उन्नत होना रहा। लैटिन नाटकों ने अंग्रेजी नाटककारों को शक्ति दी और कथानक दिए, परन्तु उनकी रचनाओं में आत्मा इंगलिस्तान की ही रही।

जॉर्ज गैस्कार्यन—अंग्रेजी नाटककारों ने दुःखान्त तथा सुखान्त दोनों प्रकार के नाटकों के लिखने में अपने सम्मुख लैटिन नाटकों का ही सांचा तथा आदर्श रखा। जॉर्ज गैस्कार्यन ने 'जॉर्ज कैस्टा' नामक दुःखान्त नाटक का लैटिन से अनुवाद किया परन्तु सुखान्त नाटक लैटिन से प्रभावित होने पर भी अपनी नवीन जानीयता रखते हैं।

निकोलस उड्डल—लैटिन साहित्य में दो सुखान्त-नाटककार हैं—टेरेन्स तथा प्लॉटस। इन दोनों का कुछ न कुछ प्रभाव अंग्रेजी के सबसे पहले लिखे हुए नाटकों पर है। १५५३ ई० के लगभग रचित 'रैल्फ रवायस्टर उव्यास्टर' पर लैटिन का छाप है। निकोलस उड्डल ने इस नाटक को पहले के विनोदकों के हास्य के साथ साथ एक सम्पूर्ण नाटक रूप दिया है। 'गैमर गर्टन्स नीडिल' जो लगभग १५५० ई० में लिखी गई अंग्रेजी साहित्य की प्रथम हर्ष प्रधान कृति है।

'गैमर गर्टन्स नीडिल'—'गैमर गर्टन्स नीडिल' की विशेषता उसके कथानक, कथोपकथन, यथार्थनादिता तथा सफल चरित्र चित्रण में है। कथानक छोटा तथा स्पष्ट तो अवश्य है फिर भी ग्रामीण जीवन के प्रतीक हॉज के चरित्र-चित्रण में पूर्णता है।

दुःखान्त नाटक शैली एक प्रकार से लेखकों की अपनी ही रही। लैटिन नाटक-लेखकों में केवल सेनेका के ही आदर्श उनके सम्मुख थे। सेनेका रोमन सम्राट नीरो के समय के श्रेष्ठ दार्शनिक थे। वे अपने नैतिक व्याख्यानो के लिये मान्य थे। उन्होंने अनेक नाटकों की रचना भी की जिनके कथानक यूनानी गाथाओं से लिये गए हैं। यूनानी नाटकों में देवी और देवता तथा अन्य पात्र नैतिक आदेश देने और धार्मिक वानावरण को पुष्ट करते थे। सेनेका ने नाटक के तीनों स्थलों में परिवर्तन किया। देव-पात्रों के स्थान पर उन्होंने मानव-पात्र रखे, नैतिक आदर्शों के स्थान पर सामाजिक उन्नति का आदर्श और धार्मिक वानावरण को हटाकर सामाजिक तथा राष्ट्रीय वानावरण प्रस्तुत किया। नाटक रचना में सबसे बड़ा परिवर्तन उन्होंने जो किया वह भाग्य अथवा होनी का प्रधान स्थान देना था जो पात्रों से उनके

धार्मिक नाटक

दुष्कर्मों का प्रतिशोध लेती हैं। इस प्रतिशोधी शक्ति के प्रयोग के कारण सैनेका के नाटकों में हत्या, दुर्घटना और विषमता अधिक है। कथोप-कथन में केवल नैतिक वक्तुत्तार्ण ही है।

वास्तव में सैनेका ने नाटककार की शक्ति नहीं। उन्होंने यद्यपि हत्याओं, वक्तुत्तार्णों तथा प्रतिशोध के स्थलों का उपयोग तो किया है तो भी उनमें न तो चित्रण का ज्ञान था, न पात्र-सामग्रस्य की शक्ति थी और न जीवन पर अट्टट टाट्ट। इसी कारण अंग्रेजी नाटककारों का कार्य और भी दुष्कर था। अच्छे नाटक रचना के प्रथम को कोई महान कलाकार ही हल कर सकता था। १५५६ ईसवी में १५८३ ईसवी तक अंग्रेजी लेखक केवल सैनेका के ही नाटकों का अनुवाद करते रहे। १५६२ ईसवी में प्रथम दुःस्वप्न नाटक की रचना हुई।

टॉमस मैकविल तथा टॉमस नॉर्टन—टॉमस मैकविल तथा टॉमस नॉर्टन दोनों ने मिल कर 'थार्थोड्यूक' नाटक लिखा था। इसकी विज्ञापना कथानक के अंग्रेजी जीवन में सम्बन्धित होने में है। इसका कथोपकथन शुक तथा नॉरम और कथा वस्तु शिथिल है : यद्यपि गजद्वारों में इसके प्रेक्षी विलमान थे निम पर भी यह नाटक लोक प्रिय न हो सका।

अंग्रेजी जनता को अभिनय देखने का बड़ा चाव था इसी कारण बहुत से नाटकों की लोक-प्रियता रही। इनमें ऐतिहासिक नाटक विशेष रूप में उल्लेखनीय हैं क्योंकि इन्हीं प्राचीन नाटकों के आधार पर ही श्रेष्ठ नाटकों की रचना हुई। १५८८ ई० में लिखित 'दि फ्रेम्स विक्टोरिज़ ऑव हेनरी दि फिफ्त', १५६० ई० में रचित 'दि ड्रुल्लसम् रेन ऑव जॉन, किंग ऑव इंग्लैन्ड' तथा १५६४ ई० में विरचित 'किंग लियर' की अत्यधिक प्रसिद्धि रही।

टॉमस किड—अंग्रेजी लेखकों के सम्मुख ज्ञातीय नाटक को गतिशील करने तथा सैनेका के नाटकों की क्रमता और रक्तपात हटाकर उन्हें ज्ञातीय भावनाओं के उपयुक्त बनाने का दुष्कर कार्य था। इस साहित्यिक क्षेत्र में टॉमस किड तथा क्रिस्टोफर मार्लो ने प्रथम प्रयास किया।

टॉमस किट (१५५७-६५) ने सैनेका को ही अपना आदर्श
 उन्होंने 'सैनिश-ट्रैजेडी' में भयावह कथानक चुना, वास-युक्त

धार्मिक नाटक

जीवन की मार्गकता समझना है। इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकार का दर्शनशास्त्र तथा इस प्रकार का अज्ञेय नायक, धार्मिक दृष्टि से हेय तथा नास्तिकता प्रचार करने वाला हुआ। परन्तु उस नायक के शौर्य और उसकी अज्ञेयता में प्रस्तुत्य को एक उच्च स्थान मिला जो पिछले युगों के साहित्य में कहीं भी न था।

टेम्बरलेन की विशेषता केवल नवान् आदर्श का नायक प्रस्तुत करने में ही नहीं बरन् एक नवान् शैली में भी है। यह शैली छन्द दीन भाषा की है। मुक्त छन्द में मॉर्लों ने ओज का विशेष संचार किया है और अपने पात्रों के उद्देश में उद्देश तथा आवेशपूर्ण भावनाओं को इसी शैली में पूर्णतया व्यक्त किया है। इन पक्तियों में हृदयग्राहिता तथा उद्वेग है; उनमें अनेक स्मरण रखने योग्य स्थान हैं।

डॉक्टर फाउस्टस—मॉर्लों ने टेम्बरलेन में पार्थिव शक्ति की महानता प्रतिपादित की है। इसके विपरीत उन्होंने डॉक्टर फाउस्टस में आत्मिक शक्ति की उच्चता प्रदर्शित की है। डॉक्टर फाउस्टस का कथानक जर्मन लोक गायन के आधार पर है। फाउस्टस विशाल बुद्धि का कीमियागर है जो मावलौकिक विद्या पर विजय पाना चाहता है और इसी सफलता के लिये वह अपनी आत्मा शैतान के हाथों बेच देता है।

नाटक की दृष्टि में 'फाउस्टस' अधिक सफल रचना नहीं है; यद्यपि अनेक स्थलों पर लेखक आत्म-विश्लेषण, आध्यात्मिक शक्ति की महानता तथा उसके मर्म को समुचित रूप में प्रगट करता है। शुरू के अङ्कों में फाउस्टस की आत्मा का कथ अद्भुत रस से प्रसू है। अन्तिम अङ्कों में बलिदान के प्रतिशोध में प्रगाढ़ कदमुरम की व्याख्या है जो कदाचित् मॉर्लों के अन्य नाटकों में नहीं है। मर्यादों में शिथिलता है और कुछ अङ्कों में लेखक की प्रतिभा का किञ्चित् परिचय भी नहीं मिलता क्योंकि इन अङ्कों में अपरिपक्व, अशिष्ट तथा प्रहसन के भावों के होने से विषय की महानता स्पष्ट नहीं होती।

'गडवर्ड से केण्ड'—मॉर्लों के नाटकों में एटवर्ड में केण्ड ही श्रेष्ठ प्रजात होता है। यद्यपि इस नाटक में न तो लेखक का पुराना आवेग है और न ओज तो भी अङ्कों के सामंजस्य तथा चरित्र-चित्रण की विविधता इसमें अन्य नाटकों से कहीं अधिक है। लेखक ने प्राचीन ऐतिहासिक

तो केवल नाटककार थे परन्तु उनके समकालीन रॉबर्ट ग्रीन (१५६०-६२) कवि, उपन्यास लेखक तथा पत्रकार भी थे। उन्होंने मॉर्लों के नाटकों की लोकप्रियता के कारण समझ कर उन्हीं का अनुकरण आरम्भ किया। परन्तु उन्हें इस अनुकरण में सफलता न मिली। इसी कारण उनके प्रमुख नाटक 'एलफ़ॉन्सस' तथा 'अरलैन्डो फ्यूरिओजो' केवल स्थूल ही नहीं बरन् अनुकरणात्मक ही रह गए हैं।

जिन हर्षात्मिक नाटकों में ग्रीन को विशेष सफलता मिली वे 'फ़ायर बेकन-एन्ड फ़ायर बंगे' तथा 'जेम्स फ़ोर्थ' थे। 'फ़ायर बेकन' के कथानक में राजा तथा दवारी, जादूगर तथा अन्य श्रेणी के लोग एकत्रित होते हैं और परस्पर वार्त्तालाप करते हैं। 'जेम्स' के कथानक में राजकुमार, एक ग्रामीण कन्या से प्रेम-संवाद करता है। इस प्रकार के पात्रों का एकत्रीकरण कर ग्रीन ने एक नवीन प्रणाली स्थापित थी। इसी पात्र-समन्वय को सबसे सुन्दर रूप शेक्सपियर ने दिया।

जॉर्ज पील—रॉबर्ट ग्रीन के साथियों में जॉर्ज पील ने भी नाटक रचना की। जॉर्ज पील (१५५८-६८) का प्रथम नाटक 'एरेनमेंट ऑव पेरिस' था जो राज-महिषी तथा दवारियों के सम्मुख अभिनीत होने के लिये लिखा गया था। इसका कथानक भी गौराणिक है और लिली की ही नाट्य परम्परा का अनुकरण इसमें हुआ है। यद्यपि इस नाटक में शिथिलता तथा अस्वाभाविकता है, तो भी इसमें काव्य, कला तथा गीत-माधुर्य विशेष माना मे है। 'मोरेलिट्री' नाटकों की परम्परा भी पील ने 'डेविड एन्ड बेथशिव' में जीवित रखा। यद्यपि उन्होंने ईसाई धर्म-पुस्तक बाइबिल के कथानक चुने, परन्तु अपनी धर्म-कला तथा व्यंग-पूर्ण शैली के प्रयोग से उसे अत्यन्त रोचक बना दिया। पील का सबसे रोचक तथा सर्व-प्रिय नाटक 'दि थ्रोल्ड वाइव्ज़ टेल' है जिसमें कल्पना तथा व्यंग का अपूर्व सम्मिश्रण है।

नाटकों का विरोध—सोलहवी शताब्दी के अन्तिम भाग में इंग्लिस्तान में नाटकों का बहुत प्रचार हुआ। लोकमत भी इसके पक्ष में था, परन्तु इसके विरुद्ध कुछ प्यूरिटन लोग थे जो अपने धर्म में किसी प्रकार की रंगरतियाँ नहीं चाहते थे। वे नाट्य-शालाओं की कार्यवाहा से अत्यन्त असन्तुष्ट रहते थे। वे उन्हें अधार्मिक तथा शैतान-ग्रह समझते थे, और समय-समय पर सरकारी नियमों की सहायता से अभिनेताओं को बहिष्कृत

करना चाहते थे। लन्दन में नाटक खेलने वालों की संस्थाएँ बन चुकी थीं, परन्तु शहर के नेता तथा नागरिक सभाओं के सदस्य अपना विरोध प्रगट करते ही जाते थे। उनका यह विश्वास था कि ये नाटक-मण्डलियाँ जनता को पाप मार्ग पर ले जाकर उनका चरित्र भ्रष्ट कर अधर्म की स्थापना करती हैं परन्तु जन-समाज में मनोरंजन की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप में होती है और वह नागरिक नियमों तथा सरकारी विधानों से बहिष्कृत नहीं हो सकती। इसी कारण जैसे-जैसे सरकारी नियम अभिनेताओं के विरुद्ध चलते गये उन नियमों के उलंघन की चेष्टा भी वैसे ही वैसे होती गई।

नाटक-मण्डलियाँ विशेषतः राज-दरबारों के सम्मुख अपने नाटकों का अभिनय किया करती थीं। जन-समाज की इच्छा भी उन्हें देखने की रहती थी। इधर अभिनेता भी अपनी सफलता से उत्साहित हो जनता के सामने भी नाटक खेलने का प्रयत्न करते थे। किन्तु वहाँ उन्हें सरकारी-विरोध का सामना करना पड़ता था। इस विरोध को हटाने के लिये मण्डलियों ने शहर के बाहर नाटक खेलने का आयोजन किया। पहले पहल सरायों में इन मण्डलियों ने नाटक अभिनीत किये। परन्तु १५७६ इसवी में उन्होंने शोरडिच नगर के बाहर एक नाट्य-शाला बना ली। नगर के अन्दर केवल एक ही नाट्य-शाला थी, जो 'ब्लैक फ्रायर्स' के नाम से प्रख्यात थी। परन्तु इस नाटक शाला में केवल बाल अभिनेता ही नाटक खेलते थे। सरकारी विधान के अनुसार नाट्य-शालाओं के अभिनेता किसी भी समय बन्दी बना लिये जा सकते थे। सरकार उन्हें हुपटों, लम्पटों तथा आवारों का श्रेणी में रखती थी।

नाटक मण्डलियों का संरक्षण—इस सरकारी विरोध से ह्युटकारा पाने के लिये अभिनेताओं ने एक विचित्र युक्ति सोची। उन्होंने अपनी मण्डलियों को दरवार के प्रसिद्ध व्यक्तियों के शरणागत कर दिया। और इसी भेदक रूप में शहर के अन्दर अभिनय करने लगे। इस व्यवस्था से ये मण्डलियाँ अब सरकारी कानून से मुक्त हो गईं और स्वतन्त्रता-पूर्वक स्थान-स्थान पर अपने नाटक खेलने लगीं। प्यूरिटन वर्ग के सदस्य उन्हें अब कोई क्षति न पहुँचा सकते थे। स्वतन्त्रता पूर्वक अभिनय करने के उद्देश्य से ही एलिज़बेथ के समय की मण्डलियों ने 'क्वीन्स मेन', 'लॉर्ड ऐडमिरल्टी मेन', 'लॉर्ड चैम्बरलेन्स मेन', नाम ग्रहण किये।

रंगमंच—इस शताब्दी में यद्यपि नाटक खेलने की स्वतन्त्रता तो

भारिक नाट्य

मिल गई थी परन्तु रंगमंच के आकार में अभिक नवीनता न आ सकी थी। इस समय का रंगमंच आधुनिक रंगमंचों में बिलकुल भिन्न था। यह रंगमंच मैदान में स्थित रहता और परिमित के अनुसार उभर-उभर

हटाया जा सकता था। इसके लिये कोई मकान अथवा नाट्य शाला निश्चित न थी। खुले आकाश के नीचे लकड़ों के लम्बे चौड़े मंच पर अभिनय होता था। मंच के सामने न तो कोई पर्दा होता था और न मंच का कोई माग ही पदों में छिपा रहता था। मंच का अगला भाग सर्वथा खुला रहता था और पिछले भाग के दीनों-दीनों एक कोठरी भी होती थी जिसके सामने एक छोटा बगमदा होता था। इसी पर एक लकड़ी की छत रहती थी। यह छत खंभों पर स्थित रहती थी। इसी छत के ऊपर एक ऊँचा भरोवा होता था जहाँ से नाटक आरम्भ होने की सूचना विगुल बजाकर कर दी जाती थी। इसी कारणों पर नाट्य-शाला का भंडा पहनाया करता था जिससे अभिनय की सूचना मिला करता था।

परन्तु ये अभिनय केवल दिन ही में हो सकते थे, क्योंकि वहाँ प्रकाश की कोई व्यवस्था नहीं रहती थी। सूर्य के उदते उदते नाटक भी समाप्त हो जाता था। दूसरे दिन फिर नाटक आरम्भ होता और गलिया तक समाप्त हो जाता।

इस रंगमंच के खुले होने के कारण पिछले भाग को छोड़ शेष तीनों ओर दर्शक बैठ सकते थे। मंच के तीनों ओर छुड़ते हैं जिन पर दर्शक नहकर अभिनय देखते थे। मंच के अग्रभाग को वेग कर दर्शक बैठते थे। बहुत में सम्पन्न तथा प्रभावशाली व्यक्ति तो मंच पर ही आ बैठते थे।

मंच के ऊपर के मंच के लिये कोई समन्वित सुविधा न रहती थी। वही मंच नगर का दृश्य था, वही गाँव का, वही समुद्र का तथा वही जङ्गल का। इस अभाव के कारण दर्शकों को दृश्यों का और स्थानों का जान करना अत्यन्त कठिन था।

परन्तु इस प्रकार की सभी असुविधाओं तथा अङ्गुणों का प्रतिरोध नाटककार बड़ी सरलता से कर लिया करते थे। दिन में नाटको का अभिनय कर उन्होंने कृत्रिम प्रकाश की सुविधा को हटा ही दिया था, और चलाता-पिरता रंगमंच बना कर नाट्य-शाला भी कमी पूरी कर ली थी। अब रही दृश्यों की व्यवस्था तथा पाय-सकेत की सुविधा। इनका भी

उन्होंने प्रतिरोध एक नवीन दृष्टि में किया। नाटककार ने दृश्यों को पृष्ठ-भूमि के परिचय अपनी काव्य-प्रतिभा में देना प्रारम्भ किया। जल, थल के सुन्दर दृश्य नाटककार काव्य-रस में रमने लगा। वह अपनी वर्ग-नात्मक प्रतिभा से उम स्थान का सम्पूर्ण वातावरण उपस्थित कर देता था।

नाटककार पात्र संकेत वेश भूषा के जल पर कल्पे रहते थे। नाटक के पात्र जैसे राजा, रानी, राजमन्त्री, सेनापति, विदूषक, नागरिक, ग्रामीण आदि अपना स्पष्ट परिचय अपनी विशेष वेशभूषा में देते थे। इस प्रकार दृश्यों की न्यूनता तथा वातावरण के अभाव की पूर्ति वे काव्य-प्रतिभा तथा वेश-भूषा से करते थे।

सत्रहवीं शताब्दी में क्रमशः नाट्य शालाओं की व्यवस्था हुई। कुछ प्रभावशाली व्यक्ति अपनी निजी नाट्य शालाएँ बनाकर अभिनय देखते थे, और सन्ध्या से ही कृत्रिम प्रकाश में नाटक खेला जाता था। चार्ल्स द्वितीय के समय में रंगमंच पर दृश्यों की व्यवस्था हुई, शालाओं का निर्माण हुआ और ये नाट्य शालाएँ नाटक भाषणी में भी परिपूर्ण हो गईं।

—:—

दूसरा अध्याय

शेक्सपियर, वॉन जॉनसन, काँग्रिय, शेरिडन

सोलहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में जब इंगलिस्तान की जनता में नाटक की रुचि बढ़ रही थी, नाट्य-शालाएँ चले रही थी और राज्य के प्रभावशाली व्यक्ति इस नये साहित्य की रक्षा कर रहे थे, उस समय एक महान् कलाकार का जन्म हुआ। यह कलाकार था विलियम शेक्सपियर।

विलियम शेक्सपियर—विलियम शेक्सपियर का जन्म स्ट्रैटफ़र्ट ऑन एवन नगर में १५६४ ईसवी में हुआ था। उनके पिता पहले सम्पन्न व्यापारी थे। नगर की पाठशाला में थोड़ी बहुत लैटिन तथा यूनानी भाषा सीखने के बाद ही पिता की आर्थिक अवस्था बिगड़ जाने के कारण बालक शेक्सपियर की शिक्षा स्थगित हो गई। १५७८ ईसवी से लेकर १५८६ ई० अर्थात् आठ वर्ष तक त्रीनिकोगार्जन के लिये शेक्सपियर ने

क्या-क्या किया इस संबंध में मनभेद है। सभ्यतः वे किसी क्रमाई की दृष्टान की देखभाल करते रहे, अथवा शिक्षक रहे, अथवा किसी बर्काल के साथ गेरे परन्तु यह निश्चित है कि उन्होंने १५८२ में अटान्ह वर्ष की अवस्था में अपने से आठ वर्ष बड़ा एन हेथे में विवाह कर लिया और जॉविकोपार्जन के लिये लन्दन का राह ली।

लन्दन नगर में शेक्सपियर नाटक गैलने वालों की टोलियों में शामिल होकर एक मजाल अभिनेता बन गए। अभिनय कार्य के साथ-साथ वे नाटकों के संशोधन तथा मौलिक-नाटक भी लिखने लग गए थे। उन्होंने बीग वर्ष की अवस्था में संशोधन कार्य तथा नाटक रचना की। इसी समय उन्होंने कविताएँ भी लिखीं और राज्य-महिषी एलिज़-बेथ तथा जेम्स प्रथम के कृपा-पात्र बन गए। लन्दन में उन्होंने ख्याति और धन-संनय कर ग्यारह वर्ष के पश्चात् वे फिर स्ट्रटफ़र्ट लौट आए। वहाँ उन्होंने अपना घर बनाया और राज दरबार में सम्पन्नता सूचक अधिकार प्राप्त कर स्वयं नाटकों का निदेशन करने लगे और 'ग्लोब' अभियेटर के सार्वाधिकार भी हो गए। इस समय शेक्सपियर सम्पन्न ही नहीं बरन् सुखी रहे। १६१६ ईसवी के निकट स्वस्थ विगड़ जाने के कारण एप्रिल मास में उसकी मृत्यु हो गई।

शेक्सपियर का रचना काल चार भागों में विभाजित किया जाना है। इस सम्पूर्ण काल में उन्होंने ३७ नाटकों की रचना की। इनमें सुवान्त, दुःस्वान्त, ऐतिहासिक तथा रोमैन्टिक नाटक हैं। परन्तु यह विभाजन शेक्सपियर का किया हुआ न होकर आलोचकों का किया हुआ है। उन्होंने नाटकों का गम्भीर अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि शेक्सपियर के नाटक उनके सम्पूर्ण अनुभव के स्पर्शकरण हैं। इसमें एक कृतिनाई और भी थी। नाटकों का रचना-काल निश्चित रूप से ज्ञात न होने के कारण आलोचकों ने अनेक प्रकार के प्रमाणों से उनका रचना-काल स्थिर करने की चेष्टा की है।

आलोचकों ने जिन प्रमाणों का सहारा लिया वे आन्तरिक तथा बाह्य प्रमाण हैं। आन्तरिक परीक्षा में उन्होंने छन्द, यति, नाटकीय कौशल तथा प्रौढ़ चरित्र-चित्रण का ध्यान रखा तथा बाह्य परीक्षा में समकालीन लेखों तथा मुद्रकों के सच्ची पत्रों का सहारा लिया है। उन्होंने इन्हीं

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

दोनों प्रकार के प्रमाणों से समस्त नाटकों की रचना विधियाँ निर्दिष्ट की हैं।

रचनाएँ—प्रथम काल (१५८८-६३) की रचनाओं में यह पता चलता है कि लेखक अपना मार्ग ढूँढ़ रहा था। उसमें जीवन की ओर रुचि थी और नाटकीय दृष्टि में उसमें उमंग, आवेश तथा शब्दाटम्वर और अलंकार-प्रियता थी। इस काल की निम्नलिखित रचनाएँ हैं :—

ऐतिहासिक	हर्षप्रधान नाटक	दुःस्वान्त
हेनरी प्रथम—३ भाग	कॉमेडी ऑव एर्स	टीस एन्ट्रॉनिकस
रिचर्ड—तृतीय	लब्ज लेवर लॉस्ट	रोमियो ऐण्ड जूलियेट
रिचर्ड—द्वितीय	टू जे न्टिलमें न ऑव वे रॉना	
	मिडसमर नाइट्स ड्रीम	

द्वितीय काल १५६४ ई० से १६०० ई० तक अर्थात् ६ वर्षों का है। इन रचनाओं में विदित होता है कि इस समय लेखक संसार को सांगठने का यत्न कर रहा था। जीवन के दुख-सुख में उसे विशेष रुचि थी और उसे अब न तो अलंकार और न काल्पनिक जगत का वातावरण ही रुचिकर रह गया था। अब उसकी दृष्टि वास्तविक जगत पर तथा उसकी आशा, निराशा, पृष्ठा तथा आग्रह और दुराग्रह पर थी। इस काल के अन्तर्गत निम्नलिखित नाटकों की गणना भी जाती है :—

ऐतिहासिक—	सुखान्त
फ्रिग जॉन	मरचेन्ट ऑव वीनिम
हेनरी चतुर्थ—२ भाग	टैमिंग ऑव दि श्रू
हेनरी पंचम	मच एंड एन्नाउट नथिंग
	ऐज़ यू लाइक इट
	में री वाइज ऑव विन्ड्सर
	टू वेल्फ़थ नाइट

इस काल के उत्तरार्ध में उन्होंने फ्रांसीसी तथा लैटिन भाषा के कथानकों का पूर्णरूप में सहारा लिया और कुल नाटक तो उनके संशोधित तथा संयोजित रूप मात्र थे।

शेक्सपियर का तीसरा काल १६०१ ई० से १६०८ ई० तक अर्थात् ७ वर्ष तक रहता है। इस काल में उनकी निम्नलिखित रचनाओं की गणना भी जाती है :—

शेक्सपियर, बेन जॉनसन, कॉफीन, शेरिडन

दुःखान्त

चुलियम गोजर

हेमलेट्ट

थ्रोथलो

किंग लियर

मेकवेथ

टाइमन आन एथेन्स

एन्टनी एन्ट क्रियोपाट्रा

शेरियोवानस

सुखान्त

ऑल इज़ वेल डेट एन्ड्स वेल

ट्रायलम एन्ट केसिटा

मोजर फॉर मेजर

नाट्य-कला—इस काल की रचनाओं में लेखक का अद्भुत नाट्य शक्ति का परिचय प्राप्त होता है। स्वयं उनके जीवन में बहुत सी दुःखद घटनाएँ घटित हुई थीं। स्वजनों की मृत्यु तथा वियोग में उन्हें योग मानसिक पीड़ा हुई थी। पग-पग पर उन्हें जीवन, मरण, भाग्य, दुर्भाग्य, क्लेश, और शांति के प्रश्न साक्षर होते दिव्यलाई दिये। इन्हीं मृद प्रश्नों को हल करने के लिये उन्होंने जीवन की गहराइ में बैठकर सत्य की खोज की। उनके नाटकों के नायक कर्तव्य परमपरा हैं, भाग्याधान हैं, प्रताड़ित हैं तथा प्रतिभाशाली हैं। उन सब में जीवन की सम्पूर्णता नहीं बरन निकलता है। इसके दो कारण हैं। सब प्रकार ने सम्पन्न होने हुए भी उनमें एक कर्मा है और वह कर्मा है—उनका अस्थिर मानसिक अवस्था। इस अधिरूपा का कुछ उन्मत्तादित्त तो उनके मानसिक आधम तथा उद्दमनता पर है और कुछ भाग्य पर जो नैतिक भिन्न पर आधारित होने हुए जीवन को उर्ता प्रकार आच्छादित किये हुए है जिस प्रकार आकाश पृथ्वी को।

दुःखान्त नाटकों के विषय मानव जीवन के विषम स्थल, मानव हृदय की ज्ञान और उसकी गहराई का अनुसंधान है। इन नाटकों के हेमलेट्ट, थ्रोथलो, मेकवेथ, लियर, टाइमन इत्यादि नायक अपनी मन की एकान्त लगन के कारण, भाग्य चक्र में फँसकर प्रताड़ित होते हैं, हत्या करते हैं तथा स्वयं भी आत्म-हत्या कर बैठते हैं। ठीक उर्ता समय वृत्तपुनी वृत्ति और अपने जीवन की अपूर्णता का अनुभव कर, शांति एवं श्रद्धा का पाठ पढ़ाकर आत्मिक और आध्यात्मिक सत्य उपोषित करते हैं।

१६०८-१२ तक के चौथे काल में शेक्सपियर ने निम्नलिखित नाटकों की रचना की :—

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

ऐतिहासिक
हेनरी अष्टम

द्वितीय प्रधान नाटक
पे गिल्फीज़
सिम्वे लीन
थिन्टर्स टेल
ट्रेम्पेस्ट

इन नाटकों से प्रतीत होता है कि इस समय लेखक जीवन की विपमताओं और उसके जटिल चक्र तथा भाग्य की प्रताड़ना में ऊपर उठकर दैवी शान्ति प्राप्त कर चुका था। स्थावर जगत् की कुटिलता तथा मनुष्य की असफलता के कारणों को समुचित रीति से समझ कर, वह उस स्थान पर पहुँच चुका था जहाँ क्लेश के पश्चात् शान्ति, दुःख के पश्चात् सुख, द्वेष और घृणा के पश्चात् क्षमा और प्रेम की ज्योति प्रज्वलित रहती है। जिस प्रकार भङ्गावात में समस्त जगत् उद्वेलित तथा अस्त-व्यस्त हो अन्धकारमय हो जाता है, परन्तु समय बीतते ही काल रात्रि व्यतीत हो जाती है और प्रातः उषा की लालिमा से आकाश प्रकाशमान हो उठता है और सूर्य रश्मियाँ फिर से नवजीवन का संचार करती हैं, उसी प्रकार लेखक जीवन की भङ्गा के बाद पूर्ण शान्ति प्रतिष्ठापित करता है।

तीसरे काल की रचनाओं में पुरुष नायक है। जीवन-नौका की पतवार उसके हाथ है। उसी के हाथों जीवन-नौका काल-भँवर में चकर ग्याकर जल राशि में विलीन हो जाती है। परन्तु चौथे काल में स्त्रियों पर दायित्व है। ये पुरुषों का स्थान तो नहीं लेती, वरन् जीवन शासन की एक चागडोर अपने हाथों में रखती हैं। यह शासन है प्रेम का, क्षमा का, श्रद्धा का और ईर्ष्या के सहारे ये जीवन को सफल, शान्ति पूर्ण तथा सुखमय बनाती हैं।

इन नाटकों की आइमोजेन, परडिटा, भिरैन्डा नायिकाएँ प्रेम, क्षमा और श्रद्धा की प्रतिमूर्ति हैं। ये अपनी कोमलता, भावुकता तथा शालीनता से जीवन पर शान्त रस सरसती रहती हैं और एक ऐसे नवीन युग की ओर संकेत करती हैं जिसकी नींव है क्षमा और प्रेम।

शेक्सपियर के समस्त नाटकों पर एलिज़बेथ के युग की पूरी छाप है। एलिज़बेथ के समय का इंगलिस्तान इन नाटकों में पूर्णतया प्रति-विम्बित है। उस समय के अंग्रेजी समाज, उसकी रीति-नीति, व्यवहार,

प्रभाएँ, राजनीति के प्रश्न, लोकाचार तथा लोक-विश्वास सभी इनमें प्रदर्शित हैं।

ग्रैमेजी इतिहास में एलिज़बेथ का युग स्वर्ण-युग कहा गया है। इस युग में राष्ट्र ने बड़ी उन्नति की। उसकी नाविक शक्ति ने मारे यूरोप में अपनी सत्ता बना ली थी। राष्ट्र के योद्धाओं ने दूर देशों में अपनी फाका फहराई और यात्रियों तथा नाविकों ने नये सामुद्रिक मार्ग खोज निकाले। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवजागृति तथा नवजीवन था और इन्हीं वातावरण में प्रेरित हॉकर शेक्सपियर के महान् नाटक लिखे गए।

ये नाटक पहले तो मौखिक ही रहे, परन्तु बाद की पात्रों के पास में ये हस्तलिखित प्रतियाँ जुगाटे गईं और आगे चल कर मुद्रित हुईं। पहले पहले शेक्सपियर के नाटक १५६७ ई० में छाटों अथवा चौपेजी रूप में प्रकाशित हुए, परन्तु शेक्सपियर की मृत्यु के पश्चात् १६२३ ईसवी में उनके मित्रो हेमिन्ज तथा कॉन्डेल ने मिलकर उन्हें फ़ोलियो (दुहरे मुड़े हुए पत्र) के आकार में प्रकाशित किए। इसके अनन्तर जनता की रुचि के अनुसार अनेक संस्करण निकलने लगे।

शेक्सपियर की प्रतिभा में इस युग के अन्य नाटककारों की तुलना करना कठिन है। परन्तु इसी युग में अन्य नाटककार भी हुए जिनकी रचनाएँ मजबूत तथा पुष्ट हैं। इनमें वेन जॉनसन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

वेन जॉनसन—वेन जॉनसन (१५७३-१६३७) प्रतिभाशाली लेखक थे। उनका व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण था। प्रतिभा तथा कला की दृष्टि में वे शेक्सपियर के विपरीत थे। वे न रूढ़िवादी, प्राचीन ग्रन्थों के विद्वान्, नीतिज्ञ-तथा नाट्य-कला के सुधरक थे। उन्होंने प्राचीन रूढ़ियों के अनुसार रचना प्रारम्भ की और सुव्यान्त नाटकों में देश-काल का ध्यान रखा। इसी देश काल की परिधि में उनके समस्त नाटकों की रचना हुई है। उन्होंने लन्दन के सामाजिक जीवन का वास्तविक परिचय दिया है। उन्होंने अपने नाटक शेक्सपियर के काल्पनिक नाटकों के विरोध में लिखे और प्रत्येक नाटक की भूमिका में अपने नाटकों की श्रेष्ठता तथा उनकी यथार्थवादिता के संबंध में अपने विचार प्रकट किए हैं।

वेन जॉनसन के समय में, इंगलिस्तान में एक नया वर्ग बन रहा था। वह वर्ग नये सामाजिकों का था जो अपनी कौशल-शक्ति-सम्पत्तियों में परिचित

हो उद्घा-या । जॉनसन की तीव्र दृष्टि इन्हीं लोगों के चरित्र पर पड़ी और उन्होंने बथार्थ रूप में उनका चित्रण किया । वेन जॉनसन का मत था कि मनुष्य के मानसिक जीवन में किसी न किसी प्रकार की ऐसी त्रुटि होती है जिससे वह समाज के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर सकता। ऐसे मनुष्यों की बनावट में कोई ऐसा पदार्थ उत्पन्न हो जाता है जिससे उनके चरित्र में दुग्ध, आटुम्बुर, क्रोध, घृणा, इत्यादि मानसिक रोग हो जाते हैं । अपने नाटकों में इन्हीं मानसिक रोगों से ग्रस्त चरित्रों को पात्र बना कर, वे नुवारक की दृष्टि से, उन्हें हास्यास्पद रूप में चित्रित करते हैं ।

वेन के समस्त नाटकों में मानसिक रोग से ग्रस्त अनेक पात्र हैं जो उपद्रव और नाट्य-कला की दृष्टि में मरलता पूर्वक जन शिक्षा के लिये प्रदर्शित किये जा सकते हैं । यद्यपि शेक्सपियर ने भी मनुष्य की मानसिक अग्नि और सामाजिक त्रुटियों को हास्यास्पद बनाया, परन्तु वेन की शैली नुवारक की है । इनके पात्र समाज के जीवित अंश हैं और उनका उपद्रव स्वामी है ।

रचनाई—इस नुवारक दृष्टि से लिखा उद्घा, उनका प्रथम सफल नाटक 'पेनार्थ मैन इन टिज लूम' है । इस नाटक में वेन ने पात्रों के भीतर चरित्र को अनेक कृत्रिमियों की ओर संकेत किया है । अनेक स्थलों पर उनका उपद्रव कटोर तथा कट्टु हो गया है । इसका कारण लेखक की नुवार प्रियता है । वेन जॉनसन के अन्य चार नाटकों में उनका सम्पूर्ण चरित्र प्रकटित हुई है । 'पेनार्थ मैन' में लेखक ने लोगों के जीवन को मरल-समस्त हास्यास्पद बनाया है: 'दि पैलेटोमिस्ट' में कदाचित् लेखक ने अपने सम्पूर्ण प्रविष्ट प्रदर्शित की है और इस नाटक का हास्य तथा उपद्रव 'दि रिजल्ट ऑफ प्रिन्सिपल' में नहीं मिलती । आर्मीण तथा - निम्न पैसा के 'पेनार्थ मैन' तथा 'पेनार्थ मैन' में, तथा 'दि माइलेन्ट' में है । 'पेनार्थ मैन' को नार दिनामों का मधुर हास्य के साथ चित्रित किया गया है ।

शेक्सपियर, वेंन जानसन, कॉर्ब्रीव, शेरेटन्

जॉनसन को सफलता ही नहीं वरन् ख्याति भी मिली। शेक्सपियर की सर्व-प्रियता के कारण ही वेंन के नाटकों की लोक प्रियता आगे न बढ़ पाई।

जॉर्ज चैपमन—विद्वता की दृष्टि में जॉर्ज चैपमन (१५५६-१६३४) किसी प्रकार कम नहीं। वे अपने नाटकों के लिये तो कम परन्तु यूनान के महाकाव्य लेखक होमर के महाकाव्यों के अनुवाद के लिये अधिक प्रसिद्ध हैं। चैपमन ने एलिजबेथ के समय की नाट्य-शालाओं में अनेक कार्य किए। अभिनेताओं में भी वे प्रिय रहे।

रचनाएँ—केवल तीन ही ऐतिहासिक नाटकों के कारण चैपमन की विशेष ख्याति हुई: 'बुसी टैम्ब्राय', 'दि रिवेन्ज ऑव बुसी टैम्ब्राय' तथा 'ट्रैजेडी ऑव विरॉन'। इनके कथानक फ्रांसीसी इतिहास से लिये गये हैं, परन्तु वातावरण समकालीन इंगलिस्तान का है जिसमें लेखक ने अपनी ओर से नवान् स्थलों का निर्माण कर उन्हें इतिहास में समन्वित कर लिया है। ये तीनों नाटक मॉर्लो के अनुकरण मात्र हैं। बुसी भी मॉर्लो के नाटकों के नायक के समान उद्दण्ड तथा शूर है। वह मॉर्लो के नायकों की भाषा का भी उपयोग करता है। भाषा में वही आवंग, वही आवेश तथा वही शब्दाटम्बर है। चैपमन ने अत्यधिक अलंकृत भाषा का प्रयोग किया है और बड़ी बड़ी उपमाओं तथा रूपकों के प्रयोग में पात्रों का कथोपकथन अत्यन्त कृत्रिम बना दिया है। इन नाटकों में न तो चरित्र-चित्रण है और न मॉर्लो की भाषा की मृदयता है। छन्दों में केवल रूपक तथा अन्य अलंकारों की अल्प छटा है। इसमें चरित्र-चित्रण तथा कथानक को आपात पहुँचा है। नत्कालीन दर्शक इन नाटकों को शायद ही समझ सकें होंगे। परन्तु यदि देखा जाय तो इस शब्दाटम्बर के अन्तर्गत चैपमन का तत्वज्ञान तथा दर्शन-प्रियता विदित है।

टॉमस डे कर—सत्रहवीं शताब्दी में अन्य नाटककारों ने भी विशिष्ट नाटकों की रचना की। यथार्थवादी शैली और यथार्थपर्या नाटकों की सर्व-प्रियता भी प्रचलित रही। वेंन जानसन ने यथार्थवादी शैली ही अपनाई थी। अन्य यथार्थवादी लेखकों में टॉमस डे कर (१५७२-१६४१) का नाम प्रसिद्ध है।

टॉमस डे कर ने यद्यपि यथार्थवादी शैली ग्रहण की तो भी उन्होंने अपने नाटकों में भावुकता तथा काल्पनिक मृत्यों का विशेष ध्यान रखा है। डे कर ने 'दि शू मैकर्स हॉलिडे' में लन्दन के निम्न वर्ग के लोगों

का बड़ा सज्जन चित्रण किया है। उन्होंने इस वर्ग के मनुष्यों की सामाजिक दृष्टि में गहन मानवता दर्शाई है। उनमें कृति में प्रयोग के लिए किया है। इस पुस्तक का नायक सादमन कायर प्रतीत होता है। प्रसिद्धि पाता है। अपने दूसरे नाटक 'द गैर-वेल्थी' में 'दोस्त' के यथार्थवादिता को वास्तविक बनाया है और उसे केवल चित्रण में कौशल दिखाया है। 'दोस्त' निम्नलिखित नाटकों के नाटककार हैं।

टॉमस हेवुड—इंगलिस्तान के नवान्तरकाल के मनुष्यों के नाटककार टॉमस हेवुड (१५७५-१६४१) हैं। उन्होंने अपने नाटकों में भावुकता तथा आन्तरिक नैतिक उलझनों का आशय लेकर 'ए यूमन किल्ड विद काइन्डनेस' में इसी भावुकता तथा नैतिक विश्लेषण को सफल दिया है। हेवुड के नाटकों में न तो शेक्सपियर की महानता है और न उनका गांभीर्य।

इस समय के नाटककार दो वर्गों में विभक्त थे। एक तो नए जो राजदरबार पर दृष्टि रखते हुए अपनी रचना करना था और दूसरा नए जो मध्यम श्रेणी के मनुष्यों की वृत्तियाँ तथा उनकी सामाजिक दशा का चित्रण करता था। **जॉन फ्लोचर** तथा **फ्रेन्सिस ब्रोमन्ट** ने दरबारी जीवन पर ही दृष्टि रखी और संयुक्त रूप से रचना प्रारम्भ की।

जॉन फ्लोचर तथा **फ्रेन्सिस ब्रोमन्ट**—जॉन फ्लोचर (१५७६-१६२५) तथा फ्रेन्सिस ब्रोमन्ट (१५७४-१६६६) को तीन प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। 'फ्लैलैस्टर' में उन्होंने मिश्रित भावों का चित्रण किया और सुखान्त तथा दुःखान्त दोनों प्रकार के भावों को सफलतापूर्वक जनता के सम्मुख रखा। 'ए मेड्स ट्रेजेडी' तथा 'ए किंग ऐन्ट नो किंग' पृथक् तथा दुःखान्त हैं। परन्तु इन नाटकों का वातावरण अस्वाभाविक तथा उनके भाव-प्रदर्शन में अतिरंजना है। यद्यपि इन नाटकों का आधार दरबारी जीवन है तो भी कृत्रिमता की मात्रा अधिक है। इसमें सन्देह नहीं कि कथानक सरल तथा विस्तारपूर्ण है और छन्दों में गति तथा कोमलता है, परन्तु शेक्सपियर के नाटकों की तुलना में ये हेय हैं। शेक्सपियर की तुलना में तो कदाचित् ही कोई अन्य नाटककार सरल हो। इसका कारण यह है कि इन नाटककारों ने न तो जीवन को सूक्ष्म दृष्टि से देखा है और न उनकी लेखनी में जीवन की महानता चित्रित करने की शक्ति है। फिर भी यदि, शेक्सपियर से

उनको नुलना न की जाय तो भी इनमें अनेक साहित्यिक गुण तथा नाटकीय तन्त्र मिलेंगे जो अन्य नाटककारों में नहीं हैं।

सत्रहवीं शताब्दी के इन चालीस वर्षों में साधारणतया ऐसे ही नाटककार हुए, जिन्होंने सुखान्त तथा दुःखान्त दोनों प्रकार के नाटक लिखे और जिनमें नैतिक मन्त्रों का प्रतिपादन भी हुआ है, परन्तु सभी में अन्वामाधिकता तथा कृत्रिमता है। ये नाटककार जीवन से दूर, कला की संभोगता में दूर और जीवन के तन्त्र तथा इसके अनुभवों से भी दूर हैं। इस वर्ग के नाटककारों में सर्वसे अधिक विख्यात जॉन वेन्स्टर हैं।

जॉन वेन्स्टर—जॉन वेन्स्टर (१५७५-१६२५) ने दो दुःखान्त नाटक लिखे जिन पर उनकी ख्याति निर्भर है। पहला 'दि हाइट डे विल' है और दूसरा है 'दि ड्रिचज आउट मैल्फी'। इन दोनों नाटकों का कथानक प्रतिशोध विषयक है। लेखक का यह विश्वास है कि मानव जीवन कुटिल तथा क्रूर है जिसमें न तो मानवता की सफलता है और न उसमें विश्वास। उनके पात्र घोर से घोर नारकीय यातनाएँ भोगकर भी अपनी शक्ति, अपना वैभव, अपनी लिप्सा और अपनी कृता नहीं छोड़ते। इसी में उनकी विजय है और संसार की हार। कहीं कहीं वेन्स्टर का दृष्टिकोण अनैतिक प्रतीत होता है परन्तु उसके पीछे मानव-जीवन की अजयता एवं विशालता छिपी हुई है।

वेन्स्टर के कथानक शिथिल है। नाटकों का कार्य-व्यापार तीव्र आवेश तथा भावावेश के द्वारा सम्पादित होता है। हिंसा तथा क्रूरता कार्य-व्यापार के स्तम्भ हैं। परन्तु ये श्रुतियाँ संगमन पर प्रदर्शन के समय विदित नहीं होतीं। पढ़ने पर ही वे स्पष्ट होते हैं। इसका कारण वेन्स्टर की नाट्य-कला है। वेन्स्टर कवि भी है और अपनी कविता के बल पर पात्रों का सफल चित्रण करते हैं। उनकी काव्य शक्ति से ही उनके पात्र जीवित तथा महत्वपूर्ण बने रहते हैं। उनके प्रति श्रुणा न होकर सम्मान होता है ; उनकी हार में भी मन्तोष प्राप्त होता है। अन्य लेखकों में हमें ये बातें नहीं मिलतीं।

सिरिल टर्नर—सिरिल टर्नर (१५७५-१६२६) का नाट्य-जगत में वेन्स्टर के नाट्य जगत से कम अस्वाभाविक नहीं है। 'दि रिवेजर्स ट्रेजेडी' तथा 'दि एथ्याम्स ट्रेजेडी' का बानावरण भी क्रूरता, हिंसा तथा रक्तपात में रंजित है। कथानक में टर्नरी जीवन की झलक तथा कार्य

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

चीजें थीं। परन्तु मनुष्य की आनन्द-प्रियता की निर्जीव कर देना समय के लिये भी अत्यन्त कठिन था। इसीलिये स्मूथर्ट युग में फिर मनोरंजनकारी साधनों का प्रादुर्भाव हुआ। चार्ल्स प्रथम के समय में भी कुछ मौलिक नाटकों की रचना हुई। ये नाटक द्वारों में अभिनीत होते थे। इन नाटकों में कविता, कल्पना, तथा प्रेम का समुचित सामंजस्य रहता था और इन्हें उच्चवंश के अथवा राजवंश के व्यक्ति ही चहरे अथवा (मास्क) लगाये रंगमंच पर खेलने आते थे। ये नाटक 'मास्क' कहलाते थे और इनका प्रचार राज्य प्रासादों तथा द्वारों में विशेष रहा। 1616

१६६० ईसवी के लगभग इंगलिस्तान में नवीन युग का जन्म हुआ। चार्ल्स प्रथम के वध के पश्चात् प्यूरिटन वर्ग की विजय हुई थी और अनेक वर्षों तक प्यूरिटन समुदाय के मनुष्यों का राज रहा। क्रॉमवेल ने अपनी अपार शक्ति लगा कर प्यूरिटन आदर्शानुसार देश पर राज्य किया, परन्तु अंग्रेजों को बहुत काल तक यह राजनीतिक परिस्थिति प्रिय न रही। क्रॉमवेल की मृत्यु के पश्चात् देश में खलबली मच गई। जनता में स्मूथर्ट राजाओं के लिये एक नवीन श्रद्धा उत्पन्न हो चली और कुछ ही समय पश्चात् जनता ने क्रॉमवेल के शासन को उलट कर चार्ल्स द्वितीय को राज्य सिंहासन पर बैठने के लिये आमंत्रित किया। अव्यवस्थित अथवा पुनः राज-शासन का युग आया। चार्ल्स द्वितीय ने अंग्रेजी शासन की बागडोर हाथ में लेते ही नाट्यशालाओं पर से प्रतिबन्ध हटा दिये। नाट्यशालाएँ अब दुगने उत्साह से काम करने लगीं और नाटककारों की फिर से जीवन दान मिला। उन्होंने पहले पुराने कलाकारों के नाटकों को प्रदर्शित करना आरंभ किया। वेन् जॉनसन तथा शेक्सपियर के नाटक फिर रंगमंच पर खेले जाने लगे।

नाटकों की लोकप्रियता बढ़ते ही लेखकों ने मौलिक रचनाएँ भी आरम्भ कीं। इन रचनाओं में हर्ष प्रधान नाटक ही, समय की गति के कारण लोकप्रिय हुए। यद्यपि अनेक विषयों पर रचनाएँ होती रही परन्तु जिस विषय पर मौलिक तथा महत्वपूर्ण रचनाएँ हुईं वह सामाजिक विषय था। सामाजिक आचरण ही नाटकों के विषय बने और तीन लेखकों ने मुख्य-रूप से यही विषय अपनाया। ये तीन लेखक एथिंग्टन, दावन्नी तथा क्राफोर्ड थे।

एथिंग्टन—मर जॉन एथिंग्टन (१६३५-६१) ने ही यह नवीन

प्रणाली निराली ! उन्होंने साहित्यकार की दृष्टि से देखा कि पुरानी कल्पनापूर्ण तथा काव्यपूर्ण रचनाएँ न तो सम्भव ही हैं और न सर्वप्रिय हो पाएँगी। इसलिए उन्होंने समकालीन समाज के आचार-नवचारों को ही कथानक रूप में ग्रहण किया और नाटको में संशुद्ध तथा सुंदर स्त्रियों के प्रेम-व्यापार तथा उनके प्रेमियों के अर्थेष प्रेम और कटु-युक्तियों को ग्रहण कर प्रदर्शित किया। उनके नातालाप में सम्स परिहास, संस्तोक्तियाँ तथा तीव्र विनोद रहता था जिसे मुनकर दृशक लोट-पोट हो जाते थे और उनकी लोकप्रियता बढ़ती थी। 'दि मैन अवि मोड' उनका सफल नाटक है।

विलियम वाइकली—इसो सामाजिक विषय पर विलियम वाइकली (१६४०-२७१६) ने भी रचना की। यद्यपि उन्होंने तर्ज पथिरिज की शैली अपनाई, परन्तु उन्होंने व्यंग और हास्य को अधिक स्थान दिया और प्रत्येक स्थल पर जहाँ वातालाप तथा संस्कृत उक्तियाँ हैं तीव्र व्यंग और तीव्र उपहास भी उगरे साध्य हैं। वाइकली ने जानसन तथा फ्रांसीसी नाटककार मुलियर का समुचित अध्ययन किया था और इन दोनों लेखकों का अनुकरण कर उन्हीं के कथानकों को ले नाटको की रचना की है। परन्तु ये अनुकरण असफल हैं। वाइकली में नाटक लिखने की शक्ति थी और जब उन्होंने अपने निजी कथानकों को ग्रहण कर उन्हें नाटक रूप दिया तो वे शीघ्र ही सर्वप्रिय हुए।

रचनाएँ—वाइकली के चार नाटकों में उन्हें विशेष ख्याति प्रदान की। 'लव उन ए बुट', 'दि वे न्टिलमन डार्निंग मास्टर', 'दि कर्टी वाइक' तथा 'दि प्लेन डीलर' में उनकी पूर्ण प्रतिभा विकसित हुई है। उनकी दृष्टि अपने पात्र जगत पर सदैव रहती है और अपने पात्रों पर उन्हें पूर्ण विश्वास भी है कि वे उनके आदर्श समुचित रूप में प्रदर्शित कर सकेंगे। चित्रण में प्रौढ़ता तथा पूर्णता, व्यापकता तथा रोचकता है, परन्तु इन सब के अतिरिक्त उनमें उपहास और व्यंग की इतनी प्रचुर मात्रा है कि दर्शक केवल उपहास और व्यंग ही में संतुष्ट होकर पात्रों में विभूय हो जाते हैं। उनका व्यंग नैतिक आदर्शों में प्रेरित न होकर उनके विराग तथा मानव-द्वेष से प्रेरित है। मोह तथा आनन्द के दृष्टजाल में पड़े हुए उनके पात्र, अन्त में उस उपहास की दशा पर पहुँचते हैं जो उन्हें कारणिक ही नहीं बरन वोभन्नु बना देती है।

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

विलियम कॉर्ग्रीव—विलियम कॉर्ग्रीव (१६७०-१७२६) के नाटकों में न तो वाइकली की तीव्रता ही है और न उनका द्वेषमय उपहास । उन्होंने अनेक सफल तथा लोकप्रिय नाटक लिखे और केवल पचास वर्ष की अवस्था में ही वे एक प्रसिद्ध नाटककार कहलाने लगे । उन्होंने केवल पांच ही वर्ष तक नाटकों की रचना की और ३० वर्ष की आयु में रचना करना छोड़ दिया ।

रचनाएँ—कॉर्ग्रीव की प्रशंसा 'दि थ्रोल्ड चैचलर' लिख कर हुई । १६६३ में यह पुस्तक प्रकाशित हुई और इसके छपते ही कॉर्ग्रीव की प्रसिद्धि बढ़ने लगी । इसके पश्चात् उन्होंने 'दि डब्लू डालर' (१६६४), 'लव फॉर लव' (१६६५) तथा 'दि वे ऑव दि वल्ड' तीन वर्ष प्रधान नाटक लिखे । एक दुःखान्त नाटक 'दि मोर्निंग ब्राइट' भी उन्होंने लिखा । १६६७ ई० में उन्होंने साहित्य रचना स्थगित कर दी ।

कॉर्ग्रीव की नाट्य-कला में कई विशेषताएँ हैं । उनके विषय वे ही हैं जिनकी प्रणाली एथिरिज ने चलाई थी । सामाजिक आचार-विचार लौकिक आचरण तथा मित्रों का सामाजिक आदान-प्रदान, इन्हीं को उन्होंने अपने नाटकों का विषय बनाया है । इन्हीं विषयों को उन्होंने इतनी पूर्णता तथा स्पष्टता से दर्शकों के सम्मुख रखा कि उस समय के समाज का सम्पूर्ण चित्र सामने आ जाता है । यह समाज प्रेमियों तथा प्रेमिकाओं का, उन वर्गों का और उन वर्गों के सफल जीवन का है जो साधारण मनुष्य के क्लेशों, दुर्भाग्यों तथा विपत्तियों से दूर अपना एक अलग लोक बनाये रहते हैं जहाँ प्रेम की सम-ग्नियाँ और समाज की अष्ट-शैलियाँ हैं । कॉर्ग्रीव के कथानकों में द्वन्द्व भी है, परन्तु वह द्वन्द्व, पाप-पुण्य, धर्म अधर्म में न होकर सामाजिक शिष्टता तथा अशिष्टता, सार्मागुता तथा नासार्मिकता, बुद्धि तथा मूर्खता, उपहास तथा रुद्धि में है । लेखक नैतिकता तथा धार्मिकता की कसौटी का उपयोग नहीं करता । वह अपने तीव्र व्यंग्य-दाह तथा व्यंग्य का जियमें अपूर्व मानवता तथा मन्द हास्य है

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

रचनाओं से अच्छी ख्याति प्राप्त हुई। परन्तु नाट्य-रचना में उनकी प्रतिभा, विषय की अस्वाभाविकता तथा भाषा की कृत्रिमता के कारण, कंठित हो गई है।

गे—गे विरचित 'दि वेगर्स ऑफ़े रा' (१७२८) नाट्य-साहित्य में महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय रहा है। अन्य लेखकों ने इस कथानक का अनुकरण भी किया परन्तु गे की प्रतिभा न होने के कारण वे असफल रहे।

इस काल की रचनाओं में भावुकता की वृद्धि हो रही थी। चित्तवृत्ति के स्थान पर उमंग तथा आवेश का अस्वाभाविक प्रयोग नाटकों में हो रहा था जिसे लेखक भूल से अनुभूति समझने लगे थे। इस साहित्यिक प्रवृत्ति की इतनी वृद्धि हुई कि अच्छे-मे-अच्छे लेखक इसके प्रभाव से नहीं बच सके। यद्यपि समाज में इसका जन्म हुआ था तो भी इसने अन्य स्थलों को भी प्रभावित किया। इसकी छाया धर्म पर भी पड़ी जिसका विकास 'मिथडिज्म' नामक धार्मिक सुधार भाव में हुआ। साहित्य में इसकी प्रगति भावुकता में थी ही। परन्तु इसके अन्य अनेक अवगुण भी साथ-ही-साथ दिग्दर्शित दिये।

प्रमुख अवगुण अभ्यात्म-वाद के साथ इसकी समानता करना था, जिसके कारण भावुकता-पूर्ण काव्य लिख कर लेखक उसे अभ्यात्म-वाद समझते थे। इस धारा ने तर्क को कंठित किया और सुधार का स्थान कर्मणा ने ले लिया। मानव-जीवन की यथार्थता के स्थान पर स्वप्र-देश की प्रतिच्छाया का लेखकों ने सृजन किया।

रिचर्ड स्टील—इस विचार धारा के अन्तर्गत बहुत से लेखक भी हुए। रिचर्ड स्टील ने इसका विशेष विवेचन किया है। 'दि टेन्टर हम्बेन्ट' में उन्होंने घरेलू जीवन का कोमल चित्र खींचा है।

जॉर्ज लिग्लो—जॉर्ज लिग्लो (१६६३-१७३६) ने 'दि लन्दन मर्चेन्ट' और 'दि हिस्टरी ऑफ़ जॉर्ज बार्नेवेल' में उच्च तथा निम्न वर्गों का परिमिश्रण कर आवेशपूर्ण संवाद द्वारा कार्य-सम्पादन किया है। इस परिमिश्रण ने नाटक के कथानकों को नवीन विस्तार मिला और उसकी विशेष प्रगति हुई। नाटकों में अब विस्तार तथा पूर्णता आ रही थी। यथार्थवाद की प्रियता बढ़ने लगी और कलाकारों को अपनी कला प्रदर्शन का समुचित अवसर मिला।

भावुकता की सबसे प्रगाढ़ छाया ह्यू केवेली तथा रिचर्ड कम्बरलैन्ड

ने अभिनय सुसंगठित किया और यथार्थवादी रूप में अपने नाटकों में, जीवन का विश्लेषण किया। चार्कर अच्छे नाटककार थे और उन्होंने अपने नाटकों में आधुनिक जीवन की समस्याओं को अत्यन्त हृदयग्राही रूप में प्रस्तुत किया।

उनके 'दि व्याथर्जी इनहेरिटेंस' (१९०५) और 'वेस्ट' (१९०७) यथार्थवादी नाटक रंगमंच पर सफल रहे। 'दि मैरीडज ऑव ऐन लीड' तथा 'पुनेला' में उन्होंने भयावह भावनाओं का सहारा लिया और वे भी लोकप्रिय रहे।

जॉन गॉल्सवर्दी—आधुनिक समाज की समस्याओं ने अनेक लेखकों का ध्यान आकृष्ट किया। जॉन गॉल्सवर्दी (१८६७-१९३३) ने यद्यपि अधिक ख्याति उपन्यासकार के रूप में पाई, तो भी उन्होंने कई नाटक लिखे जिन पर आधुनिकता की पूरी छाप है। गॉल्सवर्दी ने सामाजिक जीवन की समस्याओं का विश्लेषण करता ही अपना ख्य ब्रनाया। 'स्ट्राइफ' (१९०६) में उन्होंने प्रायोगिक जीवन के द्वन्द्वों, तथा 'जस्टिस' और 'लायल्टीज' में सामाजिक जीवन के कार्मिक द्वन्द्वों को चित्रित किया।

गॉल्सवर्दी के पात्र आधुनिक जीवन के वर्गों के प्रतिनिधि स्वरूप हैं। वे ही अनेक समस्याओं के नायक भी हैं और उन्हीं के चरित्र-चित्रण में वे समाज के अन्यान्य द्वन्द्व-पूर्ण स्थलों पर गहरा प्रकाश डालते हैं। नाटकों की कथा वस्तु सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक तथा औद्योगिक समस्याएँ हैं। लेखक बड़े कौशल से इन्हीं द्वन्द्वों का विश्लेषण कर, अपनी कसौटी के सकेत द्वारा भले-बुरे, पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक और न्याय-अन्याय का ज्ञान कराता है। उसका विश्लेषण मार्मिक तथा हृदय ग्राही होता है, और एक कुशल मध्यस्थ तथा सरकारी वकील की भाँति दोनों पक्षों का वह उचित प्रतिपादन करता है। इस दृष्टि से गॉल्सवर्दी उच्च कौशल के नाटककार है।

जॉन मेसफ्रील्ड—जॉन मेसफ्रील्ड ने भी यथार्थवादी परम्परा के अनुसार ही नाट्य-रचना की। 'दि ट्रेजेडी ऑव नैन' (१९०८) में उन्होंने परिवारिक समस्या प्रस्तुत की है, और कवि होने के कारण अपने नाटकों में काव्य का विशेष पुट दिया है।

सेन्ट जॉन अरवाइन—तीसरी शताब्दी के प्रारम्भ में ही सेन्ट जॉन अरवाइन की ख्याति यथार्थवादी नाटककारों में बढ़ रही थी।

उन्होंने 'जेन क्लॉग' (१६१३) तथा 'जान फरगुसन' (१६१३) में समाज की समस्याओं पर प्रकाश डाला । उनके साथ कुछ और ले भी इसी परम्परा का अनुकरण कर रहे थे । वे आयरिश लेखक इन्होंने अपनी रचनाओं में अंग्रेजी साहित्य को यथेष्ट जति का और समय नाट्य-साहित्य की जो प्रगति हो रही थी वह इन्हीं लेखकों ने प्र का फल था । इन लेखकों द्वारा निर्मित नाटक ऐवों थियेटर, डबलिन, अभिनीत होते थे । लेडी थिगरी ने इस रंगशाला का प्रतिनिधित्व किया । लेडी थिगरी स्वयं नाटककार थीं । उनके साथ अन्य लेखकों नाट्य-साहित्य को सँवारने का प्रयत्न किया ।

येट्स—डबल्यू० वी० येट्स ने काव्य-प्रसंग नाटकों की रचना की । उनके लिखे हुए नाटकों में 'दि क्राउनडस कैथलिन' (१८६२) तथा लैन्ड ऑव हाट्स डिजायर' (१८६४) सर्वप्रिय हुए । इन नाटकों आयरलैन्ड की आत्मा को प्राण प्रतापी का गई है और इसमें आ लैंड के निवासियों की मानवी कल्पना का अच्छा परिचय मिलता है ।

जे० एम० सिंज—जॉन मिटिलटन सिंज (१८०१-१६०६) अनेक लोकप्रिय नाटक लिखे । उनमें उच्च कोटि की कला है । य उनमें यथेष्ट उपहास प्रियता है, तो भी उनका सर्वश्रेष्ठ नाटक 'रा. दु दी सी' रहा जो एक छोटा नाटक होने हुए भी अत्यन्त कारुणिक आयरिश चरित्रों के चित्रण में उनका पटुता इतिहास लेखकों ने हैं । सिंज की मृत्यु हो जाने के कारण 'डायरेड्रें ऑव दि सैरोज' अ ही रह गया । उस समय उनकी अवस्था चार्लिस वेप की भी न थी ।

सीन ओ कैसी—थिगरी, येट्स तथा सिंज ने विशेषतः आ जीवन के कुरूप दृश्यों पर प्रकाश डाला, परन्तु नागरिक जीवन अछूता न-रहा । सीन ओ कैसी ने 'मूनो ऐन्ड दि पकोक' तथा शैटो ऑव ए गनमैन' में डबलिन नगर का वातावरण उपस्थित नागरिक पात्र चुने हैं ।

जेम्स बैरी—आयरिश जीवन के पौराणिक कथानकों को लेकर बैरी ने एक दिव्य लोक का निर्माण किया जिसकी हृदय आहिता कदा सदा के लिए बनी रहेगी । 'पीटर पैन' (१६०४) 'दि ऐडमिरे क्रिकटन' (१६०२) तथा 'डियर वूट्स' (१६१७) उनके स

नाटक केवल कथा वस्तु की ही दृष्टि से ही नहीं बल्कि नाट्य कला तथा ध्वन्यात्मिकता की दृष्टि से भी श्रेष्ठ है।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ—परन्तु इन सब लेखकों की तुलना में आधुनिक नाट्य-साहित्य में जॉर्ज बर्नार्ड शॉ का उच्च स्थान है। शॉ का साहित्यिक जीवन १८६२ ई० में आरम्भ हुआ। उस समय उन्होंने 'विडोअर्स हाउसेंज़' प्रकाशित किया था। उनकी रचनाएँ अब तक प्रकाशित होती जाती हैं।

शॉ ने पहले-पहल नाट्य साहित्य के आलोचक के रूप में साहित्य जगत में पदार्पण किया। 'अवर थियेटर इन दी नाइन्टीज' नामक पुस्तक में उन्होंने अपनी आलोचना-शक्ति का प्रथम परिचय दिया। उन्होंने समकालीन समाज का गहरा अध्ययन किया था। उन्हें न से उन्हें प्रगाढ़ प्रेम था। इन्होंने के समान ही अपने नाटकों को भी विचारों के साहक बनाने की उनकी दृष्टि थी। यही नाटक का न्येय भी होना चाहिए। शॉ विद्वान हैं और उन्होंने युरोपीय साहित्य का यथेष्ट अध्ययन किया है। उनकी उत्कृष्ट दृष्टि ऐसे नाटकों की रचना करने की थी जिसमें समाज की तीव्र हिल उठे और उनके आडम्बर क्षिप्त भिन्न हो जाये।

उन्होंने स्वतन्त्र तथा प्रत्यक्ष रूप से समाज का अध्ययन किया था। समाज की भित्तियाँ, उसके अवयव, उन अवयवों की अमामंजूर्यता, उनकी विपमता, इन सब को उन्होंने अपनी तीव्र बुद्धि से पार्श्वतया समझा। इसके साथ ही उनमें एक और विशेषता है। व्यंग और उपहास के साहित्यिक उपयोग में वे निपुण तथा अभ्यस्त हैं। इन्हीं दो गुणों के कारण उन्होंने नाट्य-साहित्य में एक नवीन क्रान्ति उत्पन्न कर दी है।

बीसवीं शताब्दी की अंग्रेजी नाट्य-शालाओं में शॉ बहुत अग्रगण्य थे। वे उनके नाट्य-प्रदर्शन और नाटक-लेखन को तीव्र आलोचक की दृष्टि से देखते थे। उनकी घुणा दिन पर दिन बढ़ती ही गई। इस समय के नाटकों में नाट्य-स्थलों के सामंजस्य की कमी थी। रचनाओं के विधान में इनकी अस्तव्यस्तता थी कि वे दर्शकों पर अपना पूर्ण प्रभाव भी न डाल सकती थीं।

एक ओर तो नाटकों की दशा शोचनीय थी और दूसरी ओर दिन प्रतिदिन नवीन आविष्कार हो रहे थे और नए आदर्श, नए

नर्क और नवीन दृष्टिकोण जन्म ले रहे थे। राजनीतिक आदर्शों में लागूवाद का बोल बाला हो रहा था। सामाजिक आदर्शों की पुरानी रूढ़ियों पर नवयुवक कुठाराघात कर रहे थे। स्त्री-पुरुष के नैतिक तथा अनैतिक सम्बन्ध पर नवीन प्रकाश पड़ रहा था। धर्म की नींव हिल रही थी। ऐसे वातावरण में शॉ का मानसिक पोषण हुआ। अपने नाटकों में वर्नरु शॉ ने इस नवीन वातावरण का पूर्ण समावेश किया है। अपने पात्रों में यह नवीनता उन्होंने कूट-कूट कर भर दी है। पुरानी रूढ़ियों के अनुसार प्राच्य-निर्माण का उन्होंने अन्त और रूढ़िवादी कथा वस्तुओं का निरुत्कार किया। इसमें शॉ की मौलिकता विशेष रूप से प्रदर्शित हुई है।

इसके न के समान ही उन्होंने अपने सम्मुख केवल एक आदर्श रखा है। यह आदर्श नाटकों को विचारों का वाहक तथा पोषक बनाना है। इसी कारण प्रत्येक नाटक शॉ के विचार अथवा दृष्टिकोण का प्रतिबिम्ब तथा प्रमाण-पत्र है। इसीलिए पात्रों की गुरुता तथा महत्व की अपेक्षा उनके नाटकों में विचारों का महत्व ही अधिक है।

कृत्रिम नाटकों में तो कोई कथावस्तु ही नहीं है। उनमें उन्होंने केवल अपने विचारों, नहीं तथा आदर्श-प्रतिपादन को ही कथावस्तु का अनन्त-मूल्य दिला है। अपने प्रत्येक नाटक के आरम्भ में शॉ एक महत्वपूर्ण प्राक्तयन करते हैं। उनमें वे अपने विचारों तथा आदर्शों का सामग्री विस्तृतपण पर नाटकों को अपने नर्क और विवाद से मनुष्य कर विचार प्रवेश करते हैं।

रचनाएँ—शॉ के नाटकों की संख्या यथेष्ट है। उनके पहले के नाटकों में 'दो प्लेज फ़ॉर युंग्लिंग्स' तथा 'प्लेज फ्लेजेन्ट प्लेज अन-सेन्सिबल' में कथावस्तु से नर्क और नवीन आदर्श का प्रतिपादन है। इसके बाद के निर्दिष्ट नाटकों में 'कथावस्तु तथा वाद्य-विवाद दोनों का सम्बन्ध बयान है। 'मेयर जस्टिस', 'द शोटिंग अप ऑव थ्रॉटो पॉन्सट' 'दो प्लेज फ़ॉर युंग्लिंग्स' भी उही श्रेणी के हैं। 'एन्ट्राइज प्लेज ऑफ़ थ्रॉटो पॉन्सट' नर्क केवल आरम्भ में ही है। परन्तु बुद्ध के यह एक निर्दिष्ट नाटकों में 'दर्ट प्रेक शटम (१६२०), 'द रिपब्लिकन' (१६२१), 'द डू टू द गेट' (१६२२), 'द मिलीयनर्यर' (१६२३) तथा 'दो प्लेज फ़ॉर युंग्लिंग्स' (१६३३) में नर्क और प्रमाण का आधिक्य

डॉ. नरी जोन्स, ऑस्कर वाइल्ड, गॉल्सवर्दी, शॉ

और कथावस्तु की न्यूनता है। 'मैन ऐन्ड गंपर मैन' और 'बैंक टु मे थु ज़ीला' उनके सबसे अधिक दार्शनिक नाटक हैं यद्यपि लेखक ने 'मैन्ड जोन' तथा 'पिगमैलियन' में विशेष ख्याति पाई।

शॉ की महत्व पूर्ण विशेषता उनका उपहास और तीक्ष्ण व्यंग है। उनके समस्त नाटक शाब्दिक तथा आर्थिक व्यंग से ओत प्रोत हैं। इस कारण कुछ पाठकों और समालोचकों को यह भ्रम हो जाता है कि शॉ केवल आधुनिक समाज के विद्वेषक हैं जो अपनी व्यंगोक्ति के सहारे जीवित हैं।

वर्नर्ड शॉ के नाटकों में एक नवीन आदर्श का समावेश है और उनके नाटकों में एक मौलिक दार्शनिक विचार-धारा सन्निहित है। प्रत्येक नाटक में उन्होंने इस धारणा को पुष्ट किया है कि यदि मनुष्य को संसार में जीवित रह कर अपनी सत्ता बनाए रखना है तो उसे प्रगति के रास्ते पर अग्रसर होना पड़ेगा; अन्यथा संसार की 'जीवन-शक्ति' चाहे हम उसे किसी भी नाम से सम्बोधित करें, हमें भी उसी तरह नष्ट कर देगी जिस तरह संसार के प्राचीन युग के मनुष्य नष्ट हो गए हैं। यह विचार उन्होंने अपने समस्त नाटकों द्वारा प्रकट किया है।

शॉ वास्तव में इस युग के महान् कलाकार हैं। वैसे किसी भी सामयिक लेखक के विषय में भविष्य चार्णा करना निरर्थक ही नहीं वरन् असाहित्यिक है। आगामी युग के पाठकों द्वारा ही उनका महत्व और उनकी साहित्यिक गुणता समझी जा सकती है।

टी० एस० इलियट—आधुनिक युग में यद्यपि अन्य नाटककार भी हैं तो भी साहित्यिक दृष्टि से उनका अधिक महत्व नहीं है। टी० एस० इलियट लिखित 'मर्डर इन दि केथीड्रल' (१९३५) काव्य-प्रधान दुःस्वान्त नाटक है। जिसमें प्राचीन 'मौरैलिटीज़' की छाया है।

ऑडिन तथा आइशर वुड—डब्ल्यू० एच० ऑडिन तथा क्रिस्टोफ़र आइशरवुड लिखित क्रमशः 'दि डान्स ऑव डेथ' तथा 'दि एमेन्ट ऑव एफ सिक्स' (१९३६) में नाटक गद्य शैली तथा तर्क शैली से विमुक्त होकर नृत्य तथा भाव प्रदर्शन से ही अपना कार्य साधन करते हैं।

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

उम समय इंगलिस्तान का नाट्य-साहित्य केवल व्यापारिक तथा आर्थिक लाभ का वस्तु हो रहा है। परन्तु अब भी ऐसे नाटककार और नाट्यशालार्थ विद्यमान हैं जो देश के नाटकों की महान् परम्परा को नीधित रगने के प्रयास में दत्त चित्त हैं।



तीसरा खण्ड

पहला अध्याय

सिड्नी, वनियन, डिफ़ा

कथा-साहित्य का जन्म आदि मनुष्य से कदाचित्त हुआ होगा परन्तु उपन्यास-साहित्य के जन्म के बहुत दिन नहीं हुए। कथा का अंश तो साहित्य के प्रत्येक अंग में है परन्तु उपन्यास साहित्य का एक प्रमुख अंग है। महाकाव्यों, स्फुट काव्यों, गीतों, रोमैस, सभी में कथा-साहित्य का प्राण रहता है और हम एक प्रकार से उपन्यास को भी कथा का विशाल-रूप कह सकते हैं।

सर फिलिप सिड्नी 'आर्केडिया'—ऐतिहासिक दृष्टि से, उपन्यास का जन्म सर फिलिप सिड्नी लिखित 'आर्केडिया' (१५८०) में हुआ। समालोचकों की सम्मति में, इसमें उपन्यास के यथेष्ट गुण भी विद्यमान हैं। परन्तु चॉसर के 'कैन्टरबेरी टैल्स' तथा 'ट्रायलस ऐन्ड क्रैमिड' भी कथा उपन्यास का स्थान ले सकते हैं, इसमें सन्देह है। इसका कारण यह है कि चॉसर की कथाएँ लुन्द-बुद्ध ह और उपन्यास का प्रधान गुण है उसका गद्य-माध्यम। आचीग युग के अनेक लेखकों ने गाथाएँ पद्य में लिखी हैं और इसी कारण उनकी गणना उपन्यास साहित्य में न हो सकी। प्रत्येक युग में कुछ न कुछ लेखक पद्य-मय गाथाएँ लिखते रहे और उन्नीसवीं शताब्दी में सर वाल्टर स्कॉट तथा वायसन ने इस प्रणाली को लोक प्रिय बनाया परन्तु फिर भी साहित्यिक दृष्टि से ये उपन्यास न कहला सके।

नाटक-साहित्य की चर्चा में हम देख चुके हैं कि नाटक के अंगों में प्रमुख हैं-कथावस्तु, पात्र, संवाद, संघर्ष तथा वातावरण। और ये अंग थोड़े बहुत परिवर्तित रूप में, उपन्यास में भी पाए जाते हैं। उपन्यास वास्तव में 'पाकेट थियेटर' अथवा 'जिन्नी नाट्यशाला' है जो गद्य में पात्रों द्वारा, जीवन से सम्बन्धित कथावस्तु का संघर्ष पूर्ण वर्णन प्रदर्शित

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

करता है। नाटक का क्षेत्र संकीर्ण है, कथावस्तु भरल है तथा संवाद के ही द्वारा उसके आदर्श की पूर्ति होती है, परन्तु उपन्यास में इस प्रकार का सम्बन्ध न होने से उसका क्षेत्र विशाल हो सकता है और लेखक के निजी कथन-द्वारा भी उद्देश्य-पूर्ति होती रहती है।

जीवन के किन्हीं भी अंगों को लेकर और देश-काल का वातावरण-परिधान में स्थित हुए उपन्यास रचना की जा सकती है। उसमें व्यक्तिगत अनुभव तथा उच्च विभिन्न वर्गों के विचार-संघर्ष का स्पष्टीकरण होता है। इस कारण उसमें अत्यन्त परिभाषा काष्ठन है। राजनीतिक,

रचना थी। उन्होंने 1881 में एक ठो कानून में ए सन्दर्भ-पूर्ण लोकाप्रिय कथाओं की लिस्ट प्रस्तुत करवा लीर। एत लेखों में एहो नया समुदाय वा संभवता ओर ध्यान से कहाए ई।

दॉमस लॉज 'रोसेलिनट' डिली या कथानुसंगी देश में विशेष प्रिय हो चली थी। एसे में दामस लॉज (1847-1894) ने भी उमें कामनाए। उन्होंने 'रोसेलिनट' (1880) में लिखी ए अत्यन्त प्रिया और प्रिय कथा की लिस्ट लिरी। परन्तु लॉज स्वयं लोकाप्रिय न हो सके। दॉमस डिलीनी (1848-1890) श्री हा लोकाप्रिय भिला।

दॉमस डिलीनी—दॉमस डिलीनी ने 'जैम प्रॉन न्यूवर्स' में जुलाहो के जीवन वा कथा की, 'गोल्डन क्राइस्ट' में जूने बनाने वाले जन-समुदाय का इतिहास कथा में लिखण किया। एन कथाओं में भयंकर तथा कथार्थ पादिता ई। दॉमस डिलीनी ने भी कानून के निम्न वर्ग का चित्रण 'थ्रू द एनिलिफ' नामक पुस्तक में किया था। परन्तु एन कथाओं में कोई सन्निहित विचार नही ई। कथाओं के सजी स्थल श्रम-संघर्ष के और कथा में भी मानव-संघर्ष नहीं ई।

दॉमस जैस 'जैक थ्रिल्टन'—दॉमस जैस (1848-1894) ने कथाओं की सभसभ्य प्रदान किया। 'जैक थ्रिल्टन' में उन्होंने शर गीतों की कथानुसंग कथाओं का संवाद किया और कृष्ट में अपने निज अनुभवों को रखा। एन पुस्तक का कृष्टीय गायक, जैसरी श्रमिक के समय का है और एसे प्रत्येक पूर्ण जीवन कथा में एह वदुन में मनुष्यों ने गोल जाल बढ़ाता है। एह कथानुसंग विधान कथाचित उपन्यास की दृष्टि में मान्य है और मोलहवा शताब्दी की कथाओं वादी उपन्यास-शैली की यह पहली पुस्तक है।

सांसातिक नृविधाओं तथा श्रमिक कलाकारों के होने हुए भी ऐलिजबेथ के युग में उपन्यास साहित्य की प्रगति न हो सकी। एमेंका भांग्य समाज की नाट्य-प्रियता तथा इसमें लिये जागीर उन्नाह था। परन्तु सधर्मी शताब्दी में भी उनकी प्रगति न हुई। इसका कारण था भासिक इच्छा, राजनीतिक कानून तथा गृह-युद्ध। विवाद-पूर्ण लेखों के लिखने में साहित्यकार इतने व्यस्त थे कि कथा साहित्य की ओर न तो उनकी मुर्ति थी और न उन्नाह।

सधर्मी शताब्दी के उत्तमर्ध में मैमुएल पीपल तथा जॉन एवलिन ने

शौपन्यासिक कथा वस्तु को नवीन रूप प्रदान किए। इन लेखकों ने अपनी जीवन चर्चा को पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया। दिन चर्चा के इन कथानकों ने कथावस्तु को मौलिक रूप दिया और उन्हें यथार्थवादी बनाया।

जॉन वनियन—सत्रहवीं शताब्दी के सबसे श्रेष्ठ उपन्यासकार जॉन वनियन हैं (१६२८-८८)। वनियन वेडफ़ोर्ड-शियर नगर के एक व्यापारी के पुत्र थे। अपनी युवावस्था में उन्होंने मैनिक शिक्षा पाई, मेना में निवासी हुए, परन्तु मैनिक जीवन शीघ्र ही समाप्त कर वे धर्मोपदेशक बन गए। कुछ दिनों वे बन्दी रहे और अन्त में अत्यात्म वादी बने और साहित्य-रचना आरम्भ की।

रचनाएँ—वनियन का प्रथम ग्रन्थ उनका जीवन चरित्र था जो 'ग्रेस एन्वाउन्डिंग' के नाम से १६६६ ई० में प्रकाशित हुआ। १६७८ में उनकी दूसरी विख्यात रचना 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' जो उनके बन्दी जीवन के दिनों में लिखी गई थी प्रकाशित हुई। इस पुस्तक का दूसरा भाग, ६ वर्ष बाद १६८४ ई० में प्रकाशित हुआ। 'दि लाइफ ऐन्ड डेथ ऑफ मिस्टर वैंडमन' जो १६८० में लिखी गई 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' ही के समान एक दूसरी रचना थी। परन्तु लेखक की सम्पूर्ण प्रतिभा 'होली वार' नामक पुस्तक में प्रकट है। इसकी रचना १६८२ ईसवी में हुई थी।

रूपक लिखने में वनियन सिद्ध हस्त थे और इसी में 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' एक अत्यन्त लोकप्रिय रूपक है। लेखक ने जीवन को एक यात्रा का रूपक मानकर मार्ग की अनेक कठिनाइयों को पार्थिव स्वरूप दिया है। अपनी पुस्तक में उन्होंने बहुत से उपाख्यान तथा कथाएँ सम्मिलित कर प्रत्येक स्थल का विस्तृत वर्णन किया है। उनकी वर्णनात्मक शक्ति अपूर्व थी और उन्होंने अनेक स्थान पर रोचक भाषा में प्रकृति के सुन्दर स्थलों का वर्णन किया है। परन्तु वास्तव में 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' एक रोचक कहानी है जिसमें आध्यात्मिक शिक्षा के साथ सनकालीन जीवन की भाँकी मिलती है और जिसमें यथार्थ जीवन का समुचित परिचय है।

उपन्यास को यथोचित रूप देने में वनियन में अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा का प्रयोग किया परन्तु उनकी बनाई हुई परम्परा को जीवित रखने के लिए अनेक साहित्यिकों की आवश्यकता थी। ऐसे साहित्यिक उस समय नहीं थे। इसलिए उपन्यास-साहित्य को अठारहवीं शताब्दी के लेखकों की प्रतीक्षा

करना गद्दा और प्रकृति के माननों में ही उसने अपना जीवन व्यतीत बनाया। डिफो ने यह कथा प्राचीन यात्राओं के वर्णन में से बहुत निकाली थी जिसका रूपान्तर उन्होंने 'क्रूमो' में किया। इसके साथ-साथ उन्होंने निजी अनुभवों को भी इस पुस्तक में जहाँ जहाँ कथा रूप में रखकर उसकी रोचकता बढ़ाई।

'कैप्टेन सिगिलडन' सामुद्रिक डाकुओं की कथा है और भ्रमपूर्ण कथानक में अफ्रीका का वातावरण है। 'मॉल लैकैन्डम' में कुटिल नियो के जीवन है, परन्तु 'रॉक्साना' इन दोनों रचनाओं में अधिक सौष्ठवपूर्ण और रोचक है। इतना होते हुए भी 'रॉक्साना' लोकप्रिय न हो पाई परन्तु 'ए जर्नल ऑव दि प्लेग इयर' की ख्याति इतनी बढ़ी कि पाठक रॉक्साना का अस्तित्व ही भूल गए। वह पुस्तक एक प्रकार की दैनिकी अथवा डायरी है और लेखक ने इसमें प्लेग-असित घरों, सड़कों, तथा गावों का अत्यन्त यथार्थ-चित्रण किया है। जब ईंगलिस्तान में प्लेग फैला तब डिफो बालक थे परन्तु उन्हें उस समय की स्मृति भूली न थी। अपनी अद्भुत कल्पनाशक्ति में उन्होंने अपनी ममग्ण शक्ति को जाग्रत कर अत्यन्त चिन्तार्थक तथा कारुणिक वर्णन किया है। उस डायरी का कथानक वास्तव में नहीं के बराबर है परन्तु लेखक की वर्णन और कल्पना शक्ति के कारण इसकी लोकप्रियता बहुत काल तक बनी रही।

डिफो में उपन्यास कला समुचित रूप में है। पहले तो उन्होंने ऐसा

- 1) कथानक चुना जो सामाजिक-रुचि के अनुकूल था। तत्पश्चात् उन्होंने
- 2) ऐसे स्थल निर्मित किए जिन पर कल्पना की पूरी छाप पड़ सकती थी।
- 3) उन्होंने यथार्थ तथा कल्पना का हृदय ग्राही सामंजस्य स्थापित किया जिसके कारण यह पुस्तक सर्व प्रिय रही। डिफो में कथानक के स्थलों को मंगटित करने की शक्ति है और साथ ही साथ उसे रोचक बनाने की कला भी विशेष रूप में है। निम्नूत वर्णन में डिफो की अत्यन्त रुचि थी जिसमें उनकी रचनाओं में रोचकता की मात्रा अधिक है और रोचकता उपन्यास कला का प्रधान गुण है। डिफो की रचनाएँ आद्योपान्त रोचकता लिए रहती हैं और जब तक कथा समाप्त नहीं होती पाठकों की उत्सुकता जाग्रत रहती है। परन्तु डिफो केवल कल्पना-प्रधान कलाकार हैं जिन्होंने उपन्यास के केवल दो ही गुण समझे थे—रोचकता तथा काल्पनिक वास्तविकता। अन्य गुणों के लिए हमें दूसरे कलाकारों को देखना है।

एक महिला की रक्षा करने हैं परन्तु विवाह के दूसरी महिला में करते हैं। इस कार्य से यद्यपि वे समस्त समाज को सम्पूर्ण रूप से सम्बुद्ध नहीं कर सके परन्तु उनकी आलोचना नहीं होती।

रिचार्डसन के कथानक मध्यम वर्गीय जीवन के हैं क्योंकि उस जीवन से उनका पूर्ण परिचय था। प्युरिटन सम्प्रदाय में जन्म लेने के कारण उन्होंने अपनी पुस्तकों में नैतिक आदर्श ही प्रमुख रखा। परन्तु आलोचकों ने इन दोनों प्रवृत्तियों की बड़ी बड़ी आलोचना की है और उनको निम्न श्रेणी का ही कलाकार समझा है। इससे सन्देह नहीं कि रिचार्डसन के पात्र मध्यम-वर्गीय हैं और अन्य वर्गों की और उनका ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ परन्तु केवल इसी कारण उन्हें निम्न कोटि का कलाकार कहना अनुचित है। यद्यपि प्युरिटन आदर्शों का प्रतिपादन उन्होंने सरलता पूर्वक किया है तिस पर भी आलोचकों ने उनके नैतिक आदर्शों को कृत्रिम बनलाया है। बहुत कम आलोचकों ने उनकी कला को समझने का प्रयत्न किया है।

रिचार्डसन उच्चकोटि के कलाकार थे। उनकी कला न तो थी उनके पात्र वर्ग में और न उनके नैतिक आदर्शों में बरन् वेह थी उनके कथा-वस्तु-संमटन तथा भावनाओं के-संवेप में। पत्र-प्रणाली के आचार पर उपन्यास रचना में वे नितान्त मौलिक कलाकार थे। रिचार्डसन की दृष्टि सूक्ष्म तथा विस्तृत थी। मानव हृदय के संघर्षों का उन्हें यथोचित ज्ञान था; भावद्वक के स्पष्ट करने में उनकी विशेष पटुता थी और मध्यमवर्गीय जीवन के सूक्ष्म में सूक्ष्म स्थलों का उन्हें विस्तृत अनुभव था। इसके साथ ही साथ कथोपकथन में भी उनकी विशेष कला थी। यद्यपि लेखक के कथानकों की प्रगति मन्द रहती है परन्तु बीच-बीच के सुकविपूर्ण स्थलों तथा हास्य युक्त कथोपकथन से रोचकता में बाधा नहीं पड़ती।

हेनरी फ्रीलिंग—रिचार्डसन की साहित्यिक ख्याति को हानि पहुँचाने में उनके समकालीन हेनरी फ्रीलिंग (१७०७-५४) का दायित्व अधिक था। फ्रीलिंग का जन्म एक कुलान तथा श्रेष्ठ वंश में हुआ था। इटन तथा लीडन में उन्होंने शिक्षा पाई और यूनायन तथा इटली के प्राचीन-साहित्य का अच्छा अध्ययन किया था। फ्रीलिंग ने बहुत समय तक बर्कल तथा न्यायार्थाश का कार्य किया और कुछ समय तक पत्रकार रहे। इसी बीच में उन्होंने कई नाटक भी लिखे थे जो सरकारी नियमों के विरोध के कारण समाप्त पर ज्वेल न जा सके।

रचनार्थ—क्रॉलिडन को रिचार्डसन ने रचनाकार के रूप में धृष्टा थी। उन्होंने शीघ्र ही उन्हें उपन्यासक बनाने का प्रयत्न करना लिया। दूसरी उद्देश्य से १७४२ ई० में 'जॉन्स, एच. ए.' नामक पुस्तक लिखी गई जिसमें उन्होंने रिचार्डसन की अत्यंत 'मानेला' की रचनाओं को पश्चिमिंत कर दिया। जॉन्स, एच. ए. का प्रयत्न करना कि वह एक सफल रचनाकार बन सके है। नेटो धृष्टा अपने लेखकों को जीवन के प्रथम करने का प्रयास करती है जिसमें प्रथम का जॉन्स का प्रयत्न ही माना जाता है। परन्तु शायद चालक के रिचार्डसन का मानेला या नलकर, स्थानक की मौलिक रूप में बहाने है। उन्होंने अपने उपन्यासक रचनाकारों का निर्माण कर और कई स्थानों पर जॉन्स का नाम मना तथा दुर्लभ कार्यों का वर्णन कर पुस्तक को रोचकता प्रदान की है। 'जॉन्स एण्ड जू' के मुख्य पात्र प्रासन एण्डरस भी है जो मुख्यतः का चालक है, मगल चित्र के पाठकों है और जॉन्स के मार्माक हाथों में सम्भोग देत है।

व्यंग्यात्मक उपन्यास के क्रॉलिडन की प्रथम प्राकृतिक रचना श्रौं उन्होंने 'द दिस्टेंट ग्राय जेनेशन वायल्ड रिचर्ड' (१७४३) में एक मार्माक प्राकृतिक तथा चौर का जीवन चरित्र लिखा। उस पुस्तक में लेखक ने यह कल्पना प्रकृत करने का प्रयत्न किया कि प्राकृतिक तथा योद्धा श्रौं राजनीतिक में बहुत ही कम भेद है; वास्तव में इन दोनों के समान है।

क्रॉलिडन की अपने कल्पना कृति 'द्रीम जोर्ज' (१७४६) है और अपने 'प्रादर्श-वार्ता 'प्रामीलिया' (१७५१)। 'द्रीम जोर्ज' उपन्यास साहित्य का श्रेष्ठ नायक है और 'प्रामीलिया' पुस्तक में चानावर्ण की रमा है जिस भी नायक के चरित्र की महानता 'प्रामीलिया' है। प्रामीलिया प्रादर्श नागी का चित्रण है परन्तु कल्पना उस के बाहुल्य में चित्रण में स्पष्टता नहीं आ सकी है।

इसमें मन्देह नहीं कि क्रॉलिडन श्रेष्ठ उपन्यास-कार थे। हर्ष पूर्ण, व्यंग्यात्मक तथा सामाजिक उपन्यास, दोनों के लिखने में उन्हें अपूर्व सफलता मिली। उन्होंने समकालीन जीवन का अन्धका अनुभव किया था और अपने ग्रन्थों में गाँवों के सरल तथा शहरों के कृत्रिम जीवन के बहुत से चित्र उन्होंने चित्रित किये। क्रॉलिडन ने उपन्यास की नई परिभाषा भी बनाई और इसे 'हर्ष-प्रधान व्यंग्यात्मक गद्य महा-काव्य' नाम दिया।

फ्रीलिंग की रचनाओं में कुल अस्पष्ट आदर्श निहित हैं। त्याग, सहानुभूति, सरल प्रेम तथा निष्कपट व्यवहार के आदर्श हमारे सम्मुख आते हैं। रिचार्डसन का नैतिक आदर्श सामाजिक नृदिवाट से दबा हुआ है परन्तु फ्रीलिंग का नैतिकता नृदि से विलग, मानवता की पूर्ण परिचायक तथा स्वतन्त्र है। भले बुरे का संघर्ष चित्रित करने में उन्हें विशेष आनन्द आता था और सामाजिक दृष्टि से बुरे लोगों में आन्तर्भावता, प्रेम, सहानुभूति तथा त्याग की कृपा प्रदर्शित करने में उन्हें अत्यधिक रुचि थी।

टोविया स्मॉलेट्—फ्रीलिंग के समकालीन लेखकों में टोविया स्मॉलेट् (१७२१-७१) ने भी ख्याति पाई। स्मॉलेट् का जन्म स्कॉटलैन्ड में हुआ था। उन्होंने चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन कर नाविक सेना के जहाजों पर चिकित्सक का कार्य आरम्भ किया। 'गैडरिक रैन्डम' (१७४८) उनकी प्रथम पुस्तक है। इस पुस्तक का नायक दुष्ट तथा लम्पट है परन्तु अन्त में एक श्रेष्ठ पतिपरायणा सुन्दरी से उसका विवाह होता है। 'पेरीग्रीन पिकिल' (१७५१) का भी नायक कुटिल तथा दुष्ट है और उसका भी विवाह एक कर्तव्य-निष्ठ सुन्दरी से होता है। 'फ्रिडेन्ड काउन्ट फ्रैटम' (१७५३) नामक पुस्तक में उन्होंने पुनः एक अद्भुत तथा साहसिक लम्पट को नायक बनाया। स्मॉलेट् की अन्य रचनाएँ लोकप्रिय नहीं थीं। 'मर लॉन्सलॉट ग्रीव्ज' (१७६२) स्पैनिश भाषा में रचित 'डॉन क्विजोट' का रूपान्तर मात्र है और 'हर्फी क्रिकर' में रिचार्डसन की पत्र-प्रणाली की पुनरावृत्ति है। स्मॉलेट् के नायकों का एक विशेषता है—विवाह के पश्चात् वे गजन तथा आदर्श-वादी बन जाते हैं।

स्मॉलेट् की रचनाओं का श्रेष्ठता केवल वातावरण से है। उनकी मुख्य रचनाएँ नाविकों के जीवन से सम्बन्ध रखती हैं। इस जीवन का साहस, कृता, दुष्टता, लम्पटता, ग्रामीण हास्य प्रवृत्ति का इनमें पूर्ण परिचय मिलता है। कहीं-कहीं लेखक ने अपने निजी अनुभवों को भी कथानकों में रखा है परन्तु यत्र-तत्र हमारे सम्मुख अठारहवीं शताब्दी के शही वेदों के जीवन की भाँकी आती है और इस भाँकी के पीछे समुद्र की उन्नाल तरंगों तथा तूफान का आन्दोलन रहता है। इसी वातावरण के चित्रण में स्मॉलेट् की विशेषता है। यद्यपि न तो उन्होंने उपन्यास

की नवीन रूप ही दिया. न नवीन नायक और न नवीन कथानक परन्तु उनकी साहित्यिक कल्पनियों तथा उनके निभीक नायक बहुत काल तक लोकप्रिय रहे ।

लॉरेन्स स्टर्न—अठारहवीं शताब्दी के लेखकों में लॉरेन्स स्टर्न (१७१३-६८) का स्थान विशिष्ट है । लॉरेन्स के पिता सिपाही तथा प्रियतामह पादरी थे । यद्यपि उनकी प्राथमिक शिक्षा घर पर ही हुई परन्तु अपने अध्ययनाय में वे केंभ्रिज गये और एम० ए० की उपाधि लाये । उनके मार्कशिचर के गिरजे में पादरी का स्थान मिला था और अपने साव-काश में उन्होंने ग्रन्थ रचना आरम्भ किया । (१७६० ५) में 'लाइफ़ रेन्ड ऑपिनियन्स ऑवि ट्रिड्रम शेन्डी-जेन्ट' लिखी गई और १७६१ में 'सेन्टिमेन्टल जर्नी' प्रकाशित हुई ।

लॉरेन्स स्टर्न में अपूर्व प्रतिभा थी और उन्होंने फ्रांसीसी लेखक विलेन की व्यंग्यात्मक रचनाओं तथा स्पेन के लेखक सरवान्टिज़ की पुस्तकों का विस्तृत अध्ययन किया था । इन्हीं दोनों लेखकों की आत्मा तथा शैली में विशेष रूप से वे प्रभावित हुए थे । फिर भी वे अन्यन्त मौलिक और उच्च श्रेणी के कलाकार हैं । यदि माधारण नियमों से देखा जाय तो उनके उपन्यास असंगठित तथा अरोचक प्रतीत होंगे परन्तु साहित्यिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उनमें श्रेष्ठ कला है । 'ट्रिड्रम शेन्डी' में नायक का जन्म पुस्तक के तीसरे खण्ड में होता है और अन्त तक उसका जीवन स्पष्ट नहीं होता । प्रत्येक अध्याय में, अनेक कथानक खण्ड, अस्पृश्यत कथोपकथन, अन्यान्य विषयों पर दार्शनिक विचार, अधूरे वाक्य, विशेष चिन्ह, रिक्त पृष्ठ, दास्य-युक्त अश्लील भाव तथा भावुक विचार मिलते हैं जिनके कारण पुस्तक का मर्म समझना अत्यन्त कठिन हो जाता है । परन्तु इस परेस्ली के पीछे लेखक का साहित्यिक आदर्श है । स्टर्न का विश्वास था कि मनुष्य का मस्तिष्क कमजोर विचार नहीं करता और न उसके अनेक विचार-धाराओं में सामंजस्य ही रहता है । जिन रचनाओं में मनुष्य मस्तिष्क की क्रम-पूर्णा विचार धारा रहता है उनमें कृत्रिमता और अस्वाभाविकता होती है । इसी लिए स्टर्न ने अपनी रचनाओं में मनोवैज्ञानिक सत्य का प्रति पालन किया । जीवन की अस्तव्यस्तता, उसकी निरसारता, उसकी प्रवचना, उसकी मृग तृष्णा उनके ग्रन्थ में हमें हर स्थान पर मिलती है । यदि हम केवल सूक्ष्म दृष्टि से तथा निर्लिप्त होकर

देखें तो मानव जीवन में बढ़ कर हास्य युक्त कोई और चरित्र प्रतीत होगी। यह सत्य स्टर्न ने पूर्णरूप में समझ लिया था। यद्यपि स्टर्न मानव जीवन की प्रवृत्तियों पर व्यंग्य वाण्य छोड़ते रहते हैं फिर भी दुर्गम मानव के प्रति उनकी सहानुभूति सदैव रहती है। अपने हास्य से वे मानव को उठाते, गिराते तथा संभालते रहते हैं। इसी में उनकी कला है।

जॉनसन—'रिसेलेस'—गिचार्डसन, फ्रांस्टिंग, स्मॉलेंट तथा स्टर्न की रचनाओं ने उपन्यास-साहित्य की विशेष प्रगति की। इन चारों कलाकारों ने जो जो धाराएँ निकालीं उन्हीं के अन्तर्गत अन्य लेखक रचना करते रहे। कुछ लेखक स्वतन्त्र-रूप से इन कलाकारों से बिना प्रभावित हुए उपन्यास लिखते रहे। इन लेखकों में सैमुयेल जॉनसन प्रथम हैं। १७५६ ईसवी में उन्होंने 'रिसेलेस' की रचना की जिसमें अविश्वसितिया के राजकुमार को नायक बनाया और एक दार्शनिक सिद्धान्त की स्थापना की। जॉनसन ने इस पुस्तक में अठारहवीं शताब्दी के आशावाद को हाम्यास्पद बनाया था।

गोल्डस्मिथ—'विकार ऑव बेकफ्रील्ड'—ऑलिवर गोल्डस्मिथ का 'विकार ऑव बेकफ्रील्ड' भी स्वतन्त्र रचना है जिसमें चरित्र चित्रण तथा हर्ष युक्त भावनाओं की प्रचुरता है। गोल्डस्मिथ हर्ष पूर्ण परिस्थितियों के निर्माण में कुशल थे और दुर्गम मानव के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति थी।

फ्रैनी बर्नी—इस युग के कलाकारों में फ्रैनी बर्नी (१७५२-१८४०) की रचनाएँ बहुत काल तक लोक प्रिय रहीं। फ्रैनी, चार्ल्स बर्नी नामक गायक की सुपुत्री थीं और महारानी कैरोलीन के साथ रहती थीं। उनकी प्रथम रचना 'इवलीना' १७७८ ई० में प्रकाशित होने ही सर्वप्रिय हुई। लेखिका की नायिका इवलीना ग्रामीण घर से निकल कर लन्दन के नागरिक समाज में आकर गार्हम पूर्ण कार्य करती हैं। अनेक स्थलों के वर्णन में लेखिका ने पूर्ण सफलता पाई है। परन्तु उनकी अन्य रचनाएँ इतनी सफल न हुईं। 'मेमीलिया' १७८२ ई० में, 'कैमिल्ला' १७८६ ई० तथा 'दि वॉन्डर' १८१८ ई० में रचे गए। लेखिका की अन्तिम रचना—'दावरी' तथा 'लेटर्स' थीं जिसमें उनकी आकर्षक विवरण तथा वर्णन कला है। जॉनसन ने अपने पत्रों में फ्रैनी की बड़ी प्रशंसा की थी जो

भर रचने थे। बॉलपोल के रचित 'कामिल ऑव ओटरेन्टो' का जन्म भी इन्हीं काव्यनिक विचार धाराओं के अन्तर्गत हुआ।

'कामिल ऑव ओटरेन्टो' १७६२ ई० में प्रकाशित हुआ और यूरोप की पाठकों ने उसे अपनाया। पुस्तक का कथानक मध्ययुग के इटली में लिया गया है और स्थल-स्थल पर भयावह घटनाएँ घटित होती हैं। कभी देवी प्रकोप, कभी मनुष्य क्रूर भयावह घटनाओं, कभी गुप्त स्थानों में मृत्यु का संदेश आता है। यह रचना लोकप्रिय थी। यद्यपि डॉरिस बॉलपोल के रचित पद्यों की संख्या बहुत है और उनमें समकालीन जीवन का स्पष्ट प्रतिबिम्ब मिलना है परन्तु 'कामिल ऑव ओटरेन्टो' की प्रियता के कारण अनेक लेखकों ने केवल उसका ही अनुकरण किया।

विलियम डे कूकर्ट—भयावह उपन्यास शैली के प्रथम अनुकर्ता विलियम डे कूकर्ट थे। वे भी पुर्तगाल में रचित रचने थे और उन्होंने भी अनेक लोगों के समान पृथ्वीचरम के लिए अपना अलग यह निर्माण कर लिया था। यही यह 'वार्डो' की भी रचना हुई। वार्डो का कथानक और भी भयावह है। इसमें प्रार्थम बाल के एक ग्लौका अपनी माता तथा जैसा के सन्तोस से -कामिल, डॉरिस आदि, तथा तीमस दृश्य

अपनी आय से दूना व्यय करते थे इसलिए उन्हें धन की सदैव आवश्यकता रहती थी। इसी आवश्यकता के कारण उन्होंने काव्य सेवा छोड़ कर उपन्यास रचना आरम्भ किया जिसके कारण उनके पास विशेष धन आया परन्तु अपने बढ़ते हुए व्यय को वे घटा न सके। इस प्रकरण का ब्योरा उनके लिखे हुए 'जर्नल' में है जिसमें उन्होंने अपना हृदय खोल कर रख दिया है।

रचनाएँ—स्काट ने बहुत से उपन्यास लिखे और एक नवीन शैली की नींव डाली। यह ऐतिहासिक उपन्यास लिखने की शैली थी। पहाड़-भ्रमण के समय उन्होंने अपने मस्तिष्क में लोक-गाथाओं तथा प्राचीन वृत्तान्तों की निर्मल स्मृति रख छोड़ी थी और अब उसके साहित्यिक प्रयोग का समय आ गया था। १८१४ ई० में उनका पहला उपन्यास 'वेवली' प्रकाशित हुआ जिसमें स्काट ने जेम्स के समय के राजनीतिक आन्दोलन का कथानक लिखा। इस आन्दोलन तथा युग के अन्य आन्दोलनों का कथानक वे बराबर चुनते रहे और उन्हीं के आधार पर कई ग्रन्थ लिखे। 'गाई मैनेरिंग' १८१५ ई० में, 'ओल्ड मोरिलिटी' तथा 'दि एन्टीकरी' १८१६ ई० में और 'गवर्नर' तथा 'दि हार्ट ऑव मिडलोदियन' १८१८ में प्रकाशित हुए। ये उपन्यास स्काटलैन्ड के हृदय में सम्बन्धित हैं और इनमें उम्र प्रवेश के प्रत्येक वर्ग का हमें यथार्थ परिचय मिलता है।

परन्तु मध्य युग के जीवन तथा उसके काल्पनिक इतिहास ने स्काट को विशेष रूप से आकर्षित कर रखा था। यद्यपि वे इस जीवन और इस वातावरण को पूर्ण रूप से अपने उपन्यासों में प्रयुक्त न कर सके तब पर भी अपनी नवीन और आकर्षक शैली के कारण वे लोकप्रिय हुए। इस श्रेणी के उपन्यास दो हैं—'आइवनहो' जो १८२० ई० में प्रकाशित हुआ और 'दि टैलिसमन' जो १८२५ ई० में लिखा गया। उन्होंने 'हिस्टरी ऑव दि क्रूसेड्स' भी लिखा परन्तु उसमें उपन्यास तत्व कम और नाटकीय-तत्व अधिक है।

इस इतिहास के लिखने के पश्चात् उन्होंने अन्य ऐंन कथानक लिखना आरम्भ किया जिससे जनता आकर्षित होती। यूरोप के नरेशों की और उनका ध्यान गया और 'किंगडम डरबर्ट' (१८२३) में उन्होंने फ्रांस के राजा लुई ग्यारहवें का चरित्र-चित्रण बड़ी मार्मिकता से किया। यह

उसका यथार्थ वातावरण उन्होंने चित्रित किया है। इसकी कथावस्तु सुगठित, चरित्र-चित्रण पुष्ट तथा वातावरण पूर्णतः ऐतिहासिक है।

वॉल्टर स्कॉट के समान थैकर भी अतिव्यथी थे। अपने पास धन न होते हुए भी उन्होंने केम्ब्रिज नगर में एक विशाल कोठी बनवाई और धन एकत्र करने के लिए डिकेन्स के समान इंगलिस्तान तथा अमेरिका में अपनी पुस्तकों को नाटकीय ढंग से पढ़ने के लिए भ्रमण किया। इससे उनकी वार्षिक आय १००० पाउंड तक हो गई थी परन्तु उनके बढ़ते हुए व्यय के लिए यह भी कम था। इन साहित्यिक भ्रमणों का उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा और १८६३ ई० में जब उनकी अवस्था केवल बावन वर्ष की थी वे परलोकवासि हुए।

यद्यपि इस शताब्दी में डिकेन्स तथा थैकर के समान अन्य श्रेष्ठ उपन्यासकार नहीं हुए परन्तु बहुत से कलाकारों ने अन्यान्य शैलियों उपन्यास रचना में प्रयुक्त कीं। कुछ लेखकों ने प्रचलित कथानकों तथा शैलियों को परिवर्तित कर नवीनता लाने का प्रयास किया। इस समय जनता की रुचि में परिवर्तन हो रहा था और ये लेखक कदाचित् इसी रुचि को समझने का प्रयत्न कर रहे थे।

थुलवर लिटन—थुलवर लिटन (१८०३-७३) की रचनाओं में यह प्रयास स्पष्ट है। स्कॉट के समान उन्होंने दो ऐतिहासिक उपन्यास 'दिलीस्ट डेज़ ऑव पॉम्पियाई' (१८३४) तथा 'रेन्जी' (१८३५) लिखे। हारोल्ड वॉलपोल के समान उन्होंने एक भयावह उपन्यास 'जेनोनी' (१८४४) भी लिखा। 'पॉलिक्लिफर्ड' (१८३०) तथा 'यूजिन एरम' (१८३२) में उन्होंने भयावह तथा सामाजिक कथानक का समिश्रण किया। यथार्थवादी उपन्यास भी उन्होंने प्रकाशित किए जिनमें 'द कैम्पटन्स' (१८२८) तथा 'माई नॉबेल' (१८५३) श्रेष्ठ थे। उनका सबसे सुव्यवस्थित उपन्यास 'पेलहम' था जो उनकी पहली कृति थी। अपनी अंतिम कृति 'द कॉमिंग रेस' में उन्होंने मौलिक कथानक चुना और कल्पित-देश-काल के उपन्यास की नवीन शैली प्रचलित की।

चार्ल्स किंग्सले—इसी प्रकार की विभिन्नता चार्ल्स किंग्सले (१८१६-७५) की रचनाओं में भी है। उन्होंने मन प्रचारक दो उपन्यास 'रोस्ट' (१८४८) तथा 'ग्लेडन लॉक' लिखे जिसमें साम्यवादी ईसाई धर्म की ओर संकेत किया। दो ऐतिहासिक उपन्यास भी उन्होंने

उन्होंने मर्शान-युग की क्रूरता तथा विषमता की कटु आलोचना की। मिसेज़ गैस्केल की प्रतिभा बहुमुखी थी। इसका प्रमाण 'क्रैनफ़र्ट' (१८५३) है जिसमें लेखिका ने प्रान्तीय जीवन का मधुर दान्य-युक्त वर्णन रोचक ढंग से किया है। अद्भुत रम में पूर्ण उपन्यास 'विल्की कॉलिन्स' (१८२४-८२) ने लिखे। 'दि वुमन इन हाइट' (१८६०) तथा 'दि मूनस्टोन' (१८६८) में उन्होंने काव्यात्मक ढंग में अद्भुत कथानक को लेकर अपनी बहुमुखी कला प्रदर्शित की। परन्तु यह समस्त लेखक वर्ग मौलिक नहीं हैं।

शार्लट तथा एमिली ब्रॉन्टी—ये दोनों लेखिकाएँ मौलिकता में श्रेष्ठ हैं। इन दोनों बहनों के कला के उद्गम की कहानी अत्यन्त गुम है। यार्क शायर के नगर से दूर हॉवर्थ गाँव में दोनों ने जन्म लिया। उन्हें न तो कोई साधन मिला और न कोई विशेष साहित्यिक शिक्षा किन्तु उन्होंने न जाने किस दैवी कृपा से प्रेरित हो ऐसे कलापूर्ण उपन्यासों की रचना की जिनका महत्व आधुनिक काल तक विदित है। एमिली ब्रॉन्टी (१८१४-४८) ने केवल एक ही उपन्यास लिखकर अमर ख्याति पाई है। उन्होंने 'वुदरिंग हाइट्स' १८४७ ई० में प्रकाशित की और अपनी अपूर्व कल्पना से ऐसे जगत का निर्माण किया जिसमें पात्रों की यथार्थता, भावों का आवेशमय दग्ध तथा कथानक इतना सत्य प्रतीत होता है कि कुछ लेखकों ने इसकी तुलना शेक्सपियर लिखित 'किंग लियर' के कुछ अंकों से की है। कदाचिन् इस काल का यह सर्वश्रेष्ठ मौलिक उपन्यास है।

शार्लट ब्रॉन्टी—शार्लट ब्रॉन्टी (१८१६-५५) की प्रतिभा बहुमुखी थी। उन्होंने कई ग्रन्थ लिखे थे। 'जेन आयर' १८४७ ई० में, 'शर्ले' १८४८, 'विले' १८५३ तथा 'दि प्रॉफ़ेसर' १८५७ ई० में प्रकाशित हुए। इन पुस्तकों में उन्होंने अपने जीवन से सम्बन्धित अनुभवों तथा घटनाओं का भी समावेश किया। इनमें यथार्थ जीवन के बड़े सरल, सुबोध तथा कर्षण चित्र हैं। इन रचनाओं में मानव जीवन की गहरी अनुभूति है परन्तु यह जीवन मध्यम वर्ग का जीवन है और इसी के वातावरण को प्रदर्शित करने में लेखिका की श्रेष्ठ कला है।

जॉर्ज डलियट—यद्यपि एमिली तथा शार्लट ब्रॉन्टी की श्रेष्ठता अब भी समालोचक मानते हैं परन्तु जॉर्ज डलियट (१८१६-८०) की महत्ता

अनुभव का प्रयोग उन्होंने जो 'जॉर्ज' (१८८५) तथा 'जॉर्ज' (१८८५) में किया। दूरस्थ का चित्रण उनकी 'सुखी' तथा 'सुखी' में १८८५ में प्रौढ़ता में है; परन्तु वे मौलिकता के लिए 'सुखी' में प्रौढ़ता की दृष्टि से जॉर्ज मेरिडियन तथा रामण का ही चित्रण है।

जॉर्ज मेरिडियन- जॉर्ज मेरिडियन (१८८८) के अनुभव के अनुसार रचे और उनका रचना क्षेत्र भी विस्तृत था। वे अपने समय के प्रमुख का कार्य करने लगे और उनका योगदान रचनाओं में भी महत्वपूर्ण। 'रिचर्ड फ्रेडरिक्स', 'एन्ड्रयू हेरिगटन' तथा 'जॉर्ज मेरिडियन' उनके नामों में उन्होंने अपने विद्वानों के प्रस्ताव जॉर्ज मेरिडियन के नाम पर उन्मुख स्थानों में मिली। 'गोदा कर्नाटिका' (१८६५) 'गोदा कर्नाटिका' (१८६५) तथा 'दायना शिव वि कर्नाटिका' (१८८५) के प्रकाशन के बाद उनका स्थिति बढ़ी। 'एंगोस्ट' जो उनकी सबसे महत्वपूर्ण कृति है १८७७ में प्रकाशित हुई। उनकी सबसे बड़ी रचना 'वन ट्रायल गेम ऑन-एन्ड्रयू' १८६१ में लिखी गई परन्तु इसके पहले ही उनका प्रौढ़ता गन्तव्योत्सवों में स्थापित कर दी थी।

वास्तव में मेरिडियन की रचनाएँ हृष्ट तथा दुःख हैं। उनका चरित्र-चित्रण जटिल तथा उनके विद्वान्ता दुर्भाग्य के नामों रचनाओं के पहले प्रकरण कठिनत्व के नाम चक्रवर्त दुःख रसों के अनेक कारण साधारण पाठकों का धैर्य हूट जाता था। उसी कारण उनकी रचनाएँ लोकप्रिय न हो सकीं। मेरिडियन का विश्वास था कि उपन्यास केवल रोचक कहानी ही नहीं बरन मानव आत्मा को संशोधित करने का साधन भी है। मनुष्य का शरीर, मस्तिष्क तथा उसके हृदय उनकी आध्यात्मिक प्रगति में बाधक हैं और इस अवरोध को हटाने में मेरिडियन की कला संलग्न रहती है। शरीर का स्वार्थ, मस्तिष्क का मन तथा हृदय की भावुकता प्रगति के प्रबल शत्रु हैं। मन, वचन, कर्म से इनके दमन करने में ही कल्याण है। कपटी तथा गर्वपूर्ण जीवन के मेरिडियन और विरोधी थे और अपने विरोध को वे कलापूर्ण हास्य से प्रगट करते हैं। मानव-आत्मा की दुर्बलता तथा उसके लाल का प्रतिकार उन्होंने अपनी प्रत्येक रचना में किया। आदर्श जीवन की और संकेत उनका ध्येय था और उन्होंने अपनी सभी रचनाओं में इस ध्येय की सार्थकता प्रदर्शित की है।

हेनरी जेम्स—साधारणतया: लेखकों ने हार्डी तथा मेरिडिथ की साहित्यिक तुलना की है परन्तु मेरिडिथ की तुलना हार्डी से नहीं वरन् हेनरी जेम्स से समीचीन है। हेनरी जेम्स ने अमरीका में जन्म लिया, वहीं शिक्षा पाई परन्तु युरोप को ही उन्होंने अपना घर समझा। उन्हें अमरीकी जीवन का विशाल अनुभव था और उन्होंने पहले पहल अमरीकी तथा यूरोपीय जीवन के कथानकों पर उपन्यास रचना की। उसके पश्चात् उन्होंने इंगलिस्तान के सामाजिक तथा आध्यात्मिक जीवन से सम्बन्धित कथानक चुन कर कई सफल रचनाएँ की। 'इर्ज़ी मिलर' अमरीकी तथा यूरोपीय जीवन के संसर्ग की कथा है जो १८७६ में प्रकाशित हुई। अग्रेज़ी जीवन की छाया से पूर्ण 'दि ट्रेजिक म्यूज' (१८६०), 'दि विंग्स ऑव डेव', (१६०२) 'दि एमबैसेडर्स' (१६०३) तथा 'दि गोल्डन बोल' (१६०४) नामक रचनाएँ हैं।

इन उपन्यासों में हेनरी जेम्स ने प्राचीन दुनियाँ, मध्ययुग के वातावरण, उसकी अविरल परम्परा, उसके प्रेम-पूर्ण जीवन का पुनः निर्माण करने का आदर्श अपने सन्मुख रखा था। अपने समकालीन जीवन में उस युग का प्रतिरूप वे देवना चाहते थे और जब उन्हें उसमें सफलता न मिली तो उन्होंने अपनी कल्पना शक्ति से उस संसार का निर्माण किया। मेरिडिथ के ही समान उनका चरित्र-चित्रण दुरूह तथा जटिल है। भावनाओं के सूक्ष्म स्थलों का प्रदर्शन और वर्ग संघर्ष का प्रौढ़ चित्रण उनकी विशेषता है। हेनरी जेम्स की भाषा अत्यन्त परिमार्जित है तथा उनके भाव पूर्णतया नैतिक हैं। उन्हें असंस्कृत भावों तथा असभ्य वातावरण से घृणा थी और इन्हीं कारण उनका भाषा, भावों के नग्न चित्रण तथा आवेश से दूर रहती है।

टॉमस हार्डी—हेनरी जेम्स के विपरीत टॉमस हार्डी इंगलिस्तान के कलाकार हैं। हार्डी (१८४०-१६२८) का जन्म वेमक्स प्रान्त में डॉरचेस्टर नगर में हुआ था। वे एक शिल्पी के घर में जन्मे और कुछ काल पैतृक व्यवसाय करते रहे। हार्डी की रचनाएँ दो भागों में विभाजित की जा सकती हैं: चरित्र-प्रधान तथा कल्पना-प्रधान। चरित्र-प्रधान रचनाओं में 'अन्डर दि ग्रीनवुड ट्री' १८७२, 'फॉर फ्रॉम दि मीडिंग क्राउड' १८७४; 'दि रिटर्न ऑव दि नेटिव' (१८७८); 'दि मेयर ऑव कैस्टरब्रिज (१८८६); 'दि बुडलैण्डर्स' (१८८७); 'दिस ऑव

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

डवीविल, १८६१, 'लाइफ्स लिटिल आयरनीज़' तथा 'जूड टि अन्सक्योर' श्रेष्ठ हैं। कल्पना प्रधान उपन्यासों में 'ए पेंयर ऑव ब्लू आईज़' (१८७३), 'दि ट्रम्पेट मेजर' (१८८०), 'टू ऑन ए टावर' (१८८२), 'ए ग्रुप ऑव नोविल डैम्स' (१८६१) तथा 'दि वेल विलवूड' (१८६२) की गणना है।

हार्डी की रचनाओं में शिल्पी की कला विदित है। उनके कथानकों के प्रत्येक स्थल में वही दृढ़ता तथा वही सामञ्जस्य है। चरित्र-चित्रण वे घटनाओं तथा पात्रों के संघर्ष से करते हैं और अन्यान्य घटनाओं के निर्माण तथा उनके प्रौढ़ औपन्यासिक प्रयोगों में वे सिद्धहस्त हैं। ग्रामीण जीवन का उन्हें निजी अनुभव था और वे अपने पात्र विशेष इसी जीवन क्षेत्र में चुनते थे। उनके पात्र प्रकृति के विशाल प्रांगण में विचरते हैं, घटनाओं के जटिल पाश में बद्ध होकर स्वतन्त्र होने के प्रयास में वे और भी जकड़ते जाते हैं और केवल मृत्यु से ही उन्हें छुटकारा मिलता है। हार्डी के पात्रों में प्रकृति भी एक पात्र विशेष है जो कुटिल, लूली, क्रूर तथा घातक है। लोनर की सभी रचनाएँ दुःखान्त हैं। इसका कारण हार्डी का साहित्यिक तथा दार्शनिक सिद्धान्त है।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में आशावाद की लहर उठी थी। मनुष्य को दुर्गम से दुर्गम स्थानों में तथा कठिन से कठिन समय में आशा की ज्योति दिखालाई देती थी। इस सिद्धान्त के हार्डी और विरोधी थे और इसी के प्रतिरोध में उन्होंने रचनाएँ की थीं। उनका विश्वास था कि मनुष्य भाग्य का शिकार है। भाग्य मनुष्य को घटनाओं के जटिल पाश में बांध कर आनन्दित होता है और उसको इसीलिये जन्म देता है कि वह वह बीभत्स आनन्द प्रदान करे। जन्म से प्रथम ही मनुष्य को अपने दुर्भाग्य की तालिका मिलती है और जो शक्ति मनुष्य को जन्म देती है वह अनैतिक, क्रूर तथा कुटिल है। हार्डी की समस्त रचनाओं में यही सिद्धान्त विदित है। ईसाई धर्म सिद्धान्तों में भी लोखक को शक्ति नहीं मिलती है और वे नर्क शक्ति में ईश्वरीय सिद्धान्त दिलाने का प्रयत्न कर अनीश्वरवाद की घोषणा करते हैं। उन्होंने जीवन को दुःखी, अकारण तथा निष्कल समझ कर ऐसे पात्रों का निर्माण किया है जो इस नियम को सिद्ध करने हैं। हार्डी के ग्रामीण जीवन के पात्रों में यूनान के दुःखान्त नाटकों की शक्ति है। उनमें साहस, गर्व, आवेश, मानवता, सभी कुछ है

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

उपन्यास एवं जिनमें 'न्यू एंग्लियन नाट्यूम्' (१८८२), 'किडनैपड' (१८८६), 'दि ब्लैक गेंगे' (१८८८), 'दि मास्टर ऑव वेल्सैंट्रे' (१८८९) तथा 'दि रॉग वॉकर्स' (१८८९) अति शीघ्र लोक-प्रिय हुए।

स्टीवेंसन का जन्म सम्बद्ध वंश में हुआ था। वे आजन्म रोग ग्रस्त रहे परन्तु इस अवस्था में भी वे निरन्तर साहित्य रचना करते थे। रचनाओं में कलापूर्ण वर्णन अथवा विवर्णन उनका ध्येय था। शब्द चयन, वाक्य समुच्चय, वातावरण का यथार्थ चित्रण उनकी कला के कृत्य विशेष अंग हैं। स्टीवेंसन के पत्रों, लेखों, उपन्यासों, सर्गों में उनकी वर्णन कला है। उन्होंने मनोवैज्ञानिक कहानियाँ भी लिखी थी जिनमें प्राणा तथा लोभ का संघर्ष और भले तथा बुरे का द्वन्द्व प्रदर्शित किया गया। इस कला में उनकी श्रेष्ठता प्रमाणित है।

स्टीवेंसन के समय में ही गल्प रचना की और पाठकों और लेखकों का अनुमान बढ़ रहा था। उपन्यास क्षेत्र में अनेक महत्त्व कलाकर रचनाएँ कर रहे थे। उनमें सर डेविड, कोनन डॉयल, मिसेज़ हर्मी यॉर्क, जॉन गेन, मार्स कैंडला, ग्राह्म स्मिथ तथा एडगर वॉलिंग लोकप्रिय हुए। इस क्षेत्र में 'रीडिंग बोर्ड' का लोकाप्रियता अधिक रही। उन्होंने 'द ग्रेट नॉर्थवेस्टर्न पाथ' में 'द एडवेंचर्स ऑफ़ रॉबर्ट ब्रॉडवॉटर' का नाम उल्लेख करने में शर्मिष्ठा नहीं की।

जार्ज गिबिंस, जॉर्ज कनाथर जैसे हुए भी जॉर्ज गिबिंस (१८५५-१९०३) अधिक प्रसिद्ध हो सके। उनके समकालीन समाज के चित्रण का यह एक नाम था जो उन्होंने समाज के लोगों की रूढ़ी कड़ी का तोड़ना सीखा। 'द गिबिंस वि विंग' प्रथम क्लास में उनके जैसी गल्प रचनाएँ हैं। 'द गिबिंस वि विंग' (१८८०), 'दीपार्थ' (१८८६) 'दि गेम्स ऑफ़ डी' (१८८७) तथा 'द ग्रेट स्ट्रीट' (१८८९) में समाज की चित्रण का एक नया विधा प्रारम्भ के समय प्रिय है। इसी कारण उनकी रचनाएँ समाज के प्रिय नहीं थीं। जार्ज की समाज गल्प प्रिय है और समाज के चित्रण के लिए समाज की चर्चा ही थी। इसे सोझ ही अपना नाम देना था। समाज के चित्रण का प्रारम्भ 'दि प्रिन्सिपल' प्रथम प्रिय केनरी (१८८०) में हुआ। 'द ग्रेट स्ट्रीट' (१८८९) में समाज की चर्चा प्रिय है।

दोनों समाज के चित्रण का प्रारम्भ समाज के चित्रण की लोकाप्रियता

प्रसन्न समाज में बहुत थी। उन्होंने समाज की रक्षा का ध्यान रख कर
 समाज-सुधारण का भी। उनके ही समाज-साक्षात्कार को धोर अधिन
 हो रहा था और समाज-सुधारण विचार उद्योग 'उद्योग-विद्य' था। विपत्तिग
 का जन्म भी १८२५ में हुआ था और विपत्तिगान् अमेरिका के लिए
 बढ़े वर्ष का विद्य था। वे छोटे कथानक तथा छोटे उपन्यास सम्बन्धित
 कथानक में विद्य सम्बन्धित थीं। इन कथानक को और भी अधिक पाठकों के
 समाधान हुए। विपत्तिग को प्रथम कथानक 'मेन टेल्स फ्रॉम दि इल्ल्स'
 १८८८ ई० में प्रकाशित हुए। इसके पश्चात् उन्होंने अनेक उपन्यास
 तथा कथानकों के सहित प्रकाशित किए। 'दि फाथर-दट फेन्ड' १८६६
 ई० में तथा 'गोल्ड' १८७६ ई० में रचे गए। पाठशास्त्रियों के जीवन में
 सम्बन्धित उनकी मौलिक रचना 'द्रीव्स फ्रॉम दि इल्ल्स' १८६६ ई० में, तथा
 सुविचारित 'विपत्तिग गेट्स' १८६८ ई० में छपी। सर्वप्रथम प्रान्त का
 कथानक संसार उन्होंने 'पंडु आदि पत्रिका' में प्रकाशित किया।

विपत्तिग के कथानक भारतीय जीवन में सम्बन्धित हैं। उनके इस
 जीवन का सम्बन्धित अनुभव था और भारत का पौराणिक कथाओं की
 संसार उन्होंने कुछ कथानक भी लिखे थे। अंग्रेजी समाज के लिये भार
 तीय जीवन के विषय मौलिक तथा रोचक थे और विपत्तिग ने अपनी
 अपूर्व धर्मान शैली में भारत के अनेक सामाजिक स्थलों का परिचय अपने
 देशवासी को दिया। उन्होंने साम्राज्यवादी पत्रकार बन कर प्रचारक
 रचनाओं में छोटे कथानक कालिदास जैसे जो भारतीयों की निरक्षरता,
 कृपा, सेवा कृति तथा लोभ का परिचय देने थे। उन्होंने भारत को 'गो
 लीको का भार' के रूप में प्रकाशित किया और साम्राज्यवाद की नीव दृढ़
 करने का साहित्यिक प्रयत्न किया। मसीह युग में उनके बहुत प्रेम था और
 उनकी रचनाओं में इस स्थल में अनेक उपमाएँ ही गई हैं। विपत्तिग
 की शैली में साहित्यिक सुसज्जता है परन्तु उनके भाव तीक्ष्ण, उनका
 धर्मान स्पष्ट तथा बहुत मार्मिक अपूर्व है। यद्यपि वे मकल चरित्र-चित्रण
 नहीं कर सकते थे कि पर भी उनकी रचनाओं में रोचकता विशेष है।
 उनकी श्रेष्ठता साम्राज्यवादी दृष्टि-दृष्टि में है और यह दृष्टि
 उन्होंने अपनी कविताओं में अधिक परन्तु अपनी गद्य रचनाओं में कम
 दिखाई।

गोल्डवर्डी—विपत्तिग के जन्म के दो-वर्ष पश्चात् १८६७ ई० में

इंगलिस्तान में एक श्रेष्ठ कलाकार का जन्म हुआ। ये थे जॉन गॉल्स-वर्दी (१८६७-१९३३)। गॉल्सवर्दी ने १९०४ ई० में अपनी रचना 'आइलैन्ड फ़ैरिसीज़' प्रकाशित की। तत्पश्चात् उन्होंने एक गद्य महाकाव्य की रचना अनेक पुस्तक श्रृंखलों में की। यह रचना 'फ़ोरमाइट सागा' नाम से प्रकाशित हुई। उन्होंने अनेक कहानी संग्रह भी प्रकाशित किये परन्तु सागा की समता कोई अन्य कृति नहीं कर सकती है।

गॉल्सवर्दी ने इस रचना में श्रेष्ठ मध्यम वर्ग का जीवन इस क्षमता से चित्रित किया है कि समालोचकों ने इसे विकटोरिया के समय के अंग्रेज़ी समाज का आध्यात्मिक इतिहास मान लिया है। फ़ोरमाइट का वंश समाज का विस्तृत प्रतिबिम्ब है। इस वंश के पात्रों में सौन्दर्य तथा लक्ष्मी का द्वन्द्व निहित है। यही द्वन्द्व विकटोरिया के समय के समाज का द्वन्द्व है। सौन्दर्य, सम्पत्ति-लिप्सा का प्रतीक है तथा आइरीश सौन्दर्य की। इन दोनों का आध्यात्मिक संघर्ष इस रचना का प्राण है। गॉल्सवर्दी श्रेष्ठ कलाकार थे। उन्होंने इस संघर्ष को निष्पन्न रूप से प्रदर्शित करने का प्रयास किया है और इसी निष्पन्न शैली में उनकी महानता है। परन्तु यह साहित्यिक सत्य है कि निष्पेक्षिता तथा कलाकार में आत्मिक सम्बन्ध अवश्य होता है, इसी कारण हम कहीं-कहीं गॉल्सवर्दी का पक्षपात देख लेते हैं। विकटोरिया के समय के पचास वर्ष का समाज गॉल्सवर्दी ने चित्रित किया है और इस चित्रण कला में कदाचित ही कोई अन्य लेखक उनकी समता कर सकता है।

जब गॉल्सवर्दी विकटोरिया के समय के श्रेष्ठ समाज का चित्रण कर रहे थे उसी समय आरनल्ड वेनेट (१८६६-१९३१) इंगलिस्तान के एक विशेष प्रान्तीय जीवन का चित्र खींच रहे थे। व्यापारी वर्ग ने शिल्प को विशेष प्रात्याहन दिया था जिसके कारण प्रत्येक प्रान्त में कुछ न कुछ शिल्पकला के कारखाने स्थापित हो गये थे। 'फ़ाइट टाउन्स' में भी चीनी तथा मिट्टी के बर्तनों का व्यापार था और इसके साथ ही साथ एक नया शिल्प समाज निर्मित हो रहा था। इसी समाज का सफल चित्रण उन्होंने 'एना आदि दि फ़ाइट टाउन्स' में किया है। 'दि ओल्ड वाइज़ टैल्स' उनकी सबसे मुख्यात रचना है जिसमें उन्होंने दो बहनों के विनेयी चरित्रों का अत्यन्त यथार्थ पूर्ण चित्रण किया है। तीन खण्डों की विस्तृत रचना में उन्होंने 'क्लेईंगर' (१९१०), 'हिल्डा लेसवेज़'

शुभ्र तथा लय पूर्ण भाषा में रगते हैं। जिस प्रकार चित्रकारों के मापेजस्य से हृदयग्राही चित्र बना लेते हैं उसी प्रकार शौनरे चित्रण करते हैं। मानव चित्त-वृत्ति के उत्थान और पतन व उनके उपन्यासों में चित्रित हैं। उनकी गद्य शैली में काबुरिमा तथा उनकी कला में अप्रबं विश्लेषणशक्ति है।

जॉर्ज मूर—इस समय ग्रन्थ युगोंपर लेखकों की छाया हित्य पर पड़ रही थी। इन प्रभावों ने कदाचित् ही कोई लेखक। जॉर्ज मूर (१८२२-१९३३) पर फ्रांसीसी लेखकों का गम्भीर प्रभाव डाला, मोपांसा तथा गान्कोर्ट्स की रचनाओं का उन्होंने अध्ययन किया था। उनका जन्म आयरलैण्ड में हुआ परन्तु उनकी रस में हुई और अनेक उपन्यासों की कथावस्तु उनकी के जीवन सम्बन्धित हैं। 'कनफेशन्स ऑफ ए यंग मैन' (१८८८), 'ट्रु परवेल्' (१९११), 'नान्स' (१९१२), 'वेल' (१९१४), उर्म हैं। उनकी सुविख्यात तथा लोकप्रिय रचनाएँ केवल 'एस्त्र (१८६४) तथा 'ग्वीलॉट पेन्ड हिलॉय' (१९२१) ही हैं। उन्होंने धार्मिक उपन्यास 'दि ब्रुक केरिथ' १९१६ में प्रकाशित किया त्रिभर्ष शैली सुन्दर तथा सुनिश्चिपूर्ण है।

डब्ल्यू. गार्सिसे ट मॉम—डब्ल्यू गार्सिसे ट मॉम (१८५५-१९३३) फ्रांसीसी लेखकों विशेषतः मोपांसा-से प्रभावित हैं। उनकी रचना में लन्दन के सामाजिक जीवन के चित्र हैं जिनमें पहली 'लिजा मैन्वेथ' है जो (१८६७) ई० में प्रकाशित हुई। उन्होंने चीन मलाया के वातावरण और पृष्ठ भूमि को लेकर कई उपन्यास लिखे जिनमें 'दि ट्रेम्पलिग लीक' (१९२१) तथा 'दि पेन्टेड वेल' (१९२३) सुविख्यात हुए। अनेक कहानी संग्रह तथा उपन्यास उन्होंने लिखे परन्तु समालोचकों ने उन्हें समुचित सम्मान नहीं प्रदान किया उनकी वर्णन शैली भावुकता से दूर है और उनका शब्द चयन पूर्ण है। उनकी श्रेष्ठता वास्तव में स्त्री पुरुष के प्रेम सम्बन्धी संयथार्थ तथा नग्न चित्रण में है। कदाचित् इसी कारण वे अंग्रेजों में लोकप्रिय नहीं हुए। मॉम अपनी रचनाओं में सुभार मन्देश नहीं परन्तु वे केवल जीवन के कट से कट अतुल्यों को चित्रित करते हैं।

ई० एम० कॉर्सेटर—समालोचकों ने ई० एम० कॉर्सेटर :

यथोचित सम्मान नहीं दिया है। यद्यपि उनकी रचना 'हॉवर्ट्स पन्थ' (१९११) लोक प्रिय थी परन्तु 'ए पेंसज द्र टान्टवा' (१९२४) लिखने के पश्चात् ही उन्हें ख्याति मिली। उन्होंने भारतीय जीवन के सरल तथा रुचिकर स्थलों का चित्रण कर क्विपलिंग की साम्राज्यवादी रचनाओं की असत्यता प्रमाणित की है। फ्रांसिस में अनुपम वर्णन कला है परन्तु वातावरण के प्रदर्शन में ही उनकी विशेषता है। वह नदानुभूति सूचक रचना शैली अन्य लेखकों ने भी ग्रहण की। इसी के आधार पर डा० एफ० पॉविम ने अपनी रचना 'मिस्टर वेस्टन्स गुड वाइन' १९२८ ई० में तथा मिस रोज में काले ने 'आर्कन आइलैन्ड' १९२४ ई० में प्रकाशन की।

सर ह्यू वॉलपोल—इस समय के उपन्यासकारों की संख्या बहुत बड़ी है। कुछ अब भी लिन रहें हैं और उनकी ऐतिहासिक नमीक्षा असम्भव है। इन लेखकों में शक्ति है और कला है परन्तु उनका साहित्यिक स्थान-निर्देश कठिन है। सर ह्यू वॉलपोल रचित 'दि बुडेन हॉस' तथा 'दि कैथीड्रल' (१९२२) में अंग्रेजी समाज के निच हैं और उनमें वयार्थ वादिता के साथ-साथ आदर्शवादिता भी है। १९३० ई० में उन्होंने एक ऐतिहासिक उपन्यास 'रोम हेरिस' की रचना की। वॉलपोल का ज्ञान विस्तृत है तथा उनकी वर्णन शैली आकर्षक है।

प्रीस्टली—१९२६ ईनवी में मिस्टर प्रीटस्ली ने 'दि गुड कम्पैनियन्स' नामक ग्रन्थ से लोकप्रियता पाई। एक ही वर्ष पश्चात्, 'एन्जिल पेचमेंट' (१९३०) के प्रकाशित होते ही वे सर्वप्रिय लेखक हो गए। उन्होंने समकालीन जीवन के हृदयग्राही चित्र खींचे हैं। अपनी मानवता तथा राष्ट्रीयता के कारण उनकी रचनाएं सर्वप्रिय हुईं। इस युग के पाठकों को प्रीस्टली ने बहुत साहित्यिक आनन्द प्रदान किया है।

डी० एच० लॉरेन्स—जिन लेखकों ने उपन्यास के कथानक को नवीनता प्रदान की उनमें सुविख्यात डी० एच० लॉरेन्स १८८५-१९३० हैं। उनका जन्म नॉटिंगम के खान खोदने वालों के घर में हुआ था और बाल्यावस्था से ही उनका जीवन त्रस्त रहा जिसका परिचय उन्होंने अपने प्रबंधों में विशेष रूप से दिया है। उनके प्रकाशित तथा प्रतियन्धित उपन्यासों में 'दि रेन-बो' (१९१५), 'विमेन इन लव' (१९२१), 'एरान्स राड' १९२२, 'कल्लोस' १९२३, 'दि लुम्ड सरपेन्ट' १९२६ तथा 'लेडी चैटर्लीज़ लवर' १९२८ विख्यात हैं।

टी० एच० लॉरेन्स को स्वदानों में आम करने वाली जे नाचन का विशाल अनुभव था। उनकी स्त्रियों, उनके बालकों, उनकी नारकीय अवस्था, उनकी क्रूरता तथा उनके पतित जीवन से वे भली-भांति परिचित थे। आधुनिक सभ्यता के प्राक्वण्ड पूर्ण तथा कृत्रिम जीवन में उन्हें घृणा थी। वे इस सभ्यता को मानव पतन का कारण समझते थे। मनुष्यों की क्रूरता, कुटिलता तथा विषमता का कारण भी वे आधुनिक वातावरण को ही मानते थे। वे इस जीवन से उदासीन होने लगे और प्रथम युरोपीय युद्ध में जब वे लड़ाई पर न जा सके तो और भी निराश हुए। उन्होंने रुढ़िवाद को निकाल फेंका और असर्वाधिक प्रेम की सराहना की। अपनी सभी रचनाओं में उन्होंने शारीरिक सौन्दर्य तथा दैहिक प्रेम का विस्तार पूर्ण वर्णन किया है। प्रेम के अतिरिक्त प्रवाद में, स्वाभाविक रूप से उभरते विगने एवं पुरुषों की भावनाओं को प्रदर्शित करने में उनकी विशेषता है। इस जीवन की विशालता तथा उनकी अपूर्व आध्यात्मिकता को उन्होंने शार्सनिक विद्वान्त का रूप दिया। कदाचित ही किसी और लेखक में शार्सनिक गमकों का उतना गहन परिचय दिया हो परन्तु इन गमक तथा व्यापक जीवन के विषय में उन्होंने शार्सनिकता तथा सत्यवाद का पट्ट देकर अपने वर्णन को उच्च स्तर पर रखा है। यद्यपि लॉरेन्स ने अपने उपन्यास विगने परन्तु उनके उपन्यासों का शैली तथा उनके रूप में कोई मौलिकता नहीं है। उन्होंने बुद्धि तथा तर्क को स्वाभाविक प्रेम का शत्रु समझ कर देश निराशा दिव्य और स्वाभाविक तथा शार्सनिक प्रेम के भावस्थलों को स्पष्ट रूप में प्रकट किया। इन्हीं शार्सनिक प्रेम स्थलों को स्पष्ट करने के कारण उनकी अनेक रचनाओं पर सरकारी प्रतिबन्ध लगाए गए। लॉरेन्स का प्रभाव अत्यन्त लेखकों पर दार्शनिक रूप से पड़ा है।

अल्टिम ट्वेन्थे—अल्टिम ट्वेन्थे जो टी० एच० लॉरेन्स की कल्पना से प्रभावित हुए हैं। उनकी बुद्धि अत्यन्त परिमार्जित थी तथा उनकी शिक्षा देश के श्रेष्ठ विद्यालयों में हुई थी। विक्टोरिया के बाल के लक्ष्मण परिवर्तनों से प्रभावित होकर उन्होंने उपन्यास रचना का प्रारम्भ किया। विद्वान् में उनको विभिन्न विश्लेषण का प्रति प्रधान की कृति एक मौलिक कलात्मक के रूप में उन्होंने इन रचनाओं को प्रकट किया। उनकी रचनाओं में 'प्लेन पर्व' (१९२१), 'वेस्ट' (१९२३)

श्रावणता है ।

ऑल्टिडस जर्मनी के राजा काय फर्माना केसरी के नाम से प्रसिद्ध हुए थे । वे मानव भावना को जगाने के लिये प्रयत्न करते थे और उन भावना समूहों के माध्यम से समाज में सुधार लाने का प्रयत्न करते थे । मानव भवित्वाक के इस समूह की श्रेणी को हम 'मिसेज' कहेंगे । डॉ. रोथो रिचार्डसन ने 'मिसेज बुल्क' (१९६५) में यह शब्द प्रयोग किया है । परन्तु उन्हें इतनी गहरी नस मिली चितनी मिसेज चरित्रों को बुल्क को मिली । मिसेज नजनिर्मा की वर्णनात्मक कला उन गौडि का है । उन्होंने अपनी पुस्तकों में सरल तथा सरल सुभा के द्वारा जापान में विश्लेषण अपूर्ण रूप से किया है । उनकी श्रेष्ठ पुस्तकों में 'दि नॉयज आउट' (१९२५), 'नारट ऐन्ड डे' (१९६६), 'चैम्पस रंग' (१९२२), 'मिसेज डैलोवे' (१९२५), 'दु डि लाइट हाउस' (१९२७) 'ग्रॉस लैन्डो' (१९२८), 'दि वेल्थ' (१९३१) तथा 'दि ट्वेन्थी' की गणना है ।

मिसेज बुल्क की विशेषता स्वाभाविक चरित्र-चित्रण है । वे चरित्र-चित्रण विस्तार तथा अपूर्ण विश्लेषण से करती है । भावों के सूक्ष्म से

सूक्ष्म भागों पर उनकी बड़ी तोखण दृष्टि थी। उनके पात्रों का भाव विश्लेषण तार्किक रूप में न होकर अत्यन्त स्वच्छन्द होता है। उनकी बुद्धि अत्यन्त बोद्धशु थी तथा उनकी वर्णन प्रभावोन्मादक होता था। उनकी कथाओं में अतीत उन्मत्त शैली का उदगिर हुआ। जस्य चोर नायकता शैली का उन्मत्त साहित्यिक रत्ना न प्रचुर रूप में हैं। उनकी कथा की समानता केवल जैन उपायन में ही समानान है।

जेन्स उपायन— जैन उपायन कदाचित् इस शताब्दी के सबसे मौलिक कलाकार है। अपने गार्डियन जीवन के पहले भाग में उन्होंने फ्रांसीसी लेखक गीपसा के समान छोटी-छोटी कहानियाँ प्रकाशित की। 'दि उवलिगर्स' उनकी पहला संग्रह था जिनमें जीवन की प्रभावपूर्ण संज्ञना थी। उनकी कथा विशेष की व्यक्तता 'ए पॉन्टेंट ऑन दि आर्टिस्ट रेज़ पग मैग' (१६६६), तथा 'थूर्त्तानोत्र' १६७२, नामक कथा में हुई है। सन् १७ वर्ष पश्चात् उनकी बृहत् कथा 'कॉन्सिडरन्स वेर' १६७६ ई० में प्रकाशित हुई।

चौथा खण्ड

गद्य

पहला अध्याय

कैक्सटन, टिन्डेल, बेकन, ब्राउन, ड्राइडें

साधारणतः समालोचकों ने साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब बतलाया है। यदि हम वह परिभाषा मान लें तो हमें गद्य को साहित्य में उच्च स्थान देना पड़ेगा। कविता में युग का प्राण, नाटक में युग का दायित्व तथा गद्य में जीवन के दिन प्रति दिन की चर्चा निहित रहती है। गद्य ही में हमारे राजनीतिक आदर्श, सामाजिक नियम, इतिहास और दर्शन रचे जाते हैं।

साहित्यिक कलाकारों ने गद्य को अनेक प्रकार से साहित्य रचना में प्रयुक्त किया है। गद्य में ही उपन्यास, नाटक तथा लेख लिखे गए हैं। अपनी विशेष प्रतिभा के अनुसार कलाकारों ने गद्य ही का माध्यम चुन कर रचनाएँ की हैं। कुछ लेखकों की गद्य शैली श्रुतकारपूर्ण, कठ की सरल तथा अन्य लेखकों की विशेष प्रकार की शब्दावली से अभूषित रहती है। गद्य के विभिन्न साहित्यिक प्रयोगों के ही कारण उनकी प्रगति का ऐतिहासिक भ्रंश कठिन है। नाटक तथा उपन्यास खरब में हम गद्य की उपयोगिता को कसती पढ़ चुके हैं। इस अध्याय में हम उन लेखकों तथा ग्रन्थों की समालोचना करेंगे जिन्होंने गद्य शैली की प्रगति का आभाव मिलेगा।

अनुवाद युग—पेरुलो मैक्सन काल में लेकर प्रचारवर्ती शब्दावली पूर्वाह्न तक के लेखकों ने बैदिन भाषा के ही आधार पर रचनाएँ कीं। इस युग में कुछ सीटिन पुस्तकों की लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि उनका अनुवाद अनेक लेखकों ने किया। श्रीधरदास रचित 'यान्त्रोलेखन और प्रिन्सिपल' जो कठोर शब्दावली में लिखी गई आल्फ्रेड की बहुत प्रिय थी। उन्होंने उनका अनुवाद भी किया था। कवि चॉपर ने भी इसी का अनुवाद किया था। मशरानी एलिजबेथ भी इस पुस्तक के उर्ध्व विचार

में प्रभावित हुए जो जी. डेविलेन के लिये इसका अनुवाद किया था। यह भी यहाँ तक इस पुस्तक की लोकप्रियता था कि इस पुस्तक को अंग्रेजी में लिखने भाषा को आसानी से समझने में सक्षम होने से पहले ही इस पुस्तक को अनुवाद कर साहित्य रचना करनी थी। अंग्रेजी भाषा में इस पुस्तक को अनुवाद करने पर गतुषो की भाषा कठोर थी। फ्रीड साहित्यिक रचना में इस पुस्तक को अनुवाद करने पर अनुपयोगी तथा असमझ समझने में। गतुषो के अनुवाद में डेविलेन के कन अंग्रेजी भाषा को प्रथम समझ कर लेटिन भाषा में आसानी से रचना करते रहे और उनमें बहुत निश्चय था कि उनका अनुवाद साहित्यिक रचनाएँ केवल लेटिन भाषा में ही सुरक्षित रह सकेंगी।

इस साहित्यिक प्रवृत्ति के कारण लेटिन भाषा में कुछ ही वर्षों के अन्दर तक अपना प्रभुत्व स्थापित रहा। और यदि जब लोगो ने लेटिन भाषा में रचनाएँ आरम्भ की तो आधार लेटिन ही रहा। परन्तु रोमन दृष्टि में देखा जाय तो यह बात सैना में कि कुछ लोगों ने अंग्रेजी राज शैली का चीज इंग्लैन्डन विजय के पहले ही ही रचा था। नासतन तथा रोमन जाति के अधिकार जमाने के पहले भी ये प्रभाव की रीति शैली प्रचलित थी। एक ही एल्फिक की अलंकारिक शैली और दूसरा आ फ्रेड की सरल शैली। आल्फ्रेड के समय में लिखित 'क्रॉनिकल' की शैली सरल तथा सुवोध थी। यद्यपि 'क्रॉनिकल' की रचना आल्फ्रेड के समय से आरम्भ हुई परन्तु आल्फ्रेड की मृत्यु के द्वाड़े ही वर्ष पश्चात् भाषा लेखकों ने अपनी रचनाएँ इसमें संयत की। कुछ इतिहास लेखकों का मत है कि रोमन तथा नॉरमन अधिकार के पश्चात् अंग्रेजी राज शैली का अन्त हो गया। परन्तु साहित्यिक अन्वेषकों ने पता चलाया है कि उस समय भी अंग्रेजी की सरल भाषा शैली जीवित थी और केवल एल्फिक की अलंकारिक शैली ही का अन्त हुआ था। पीटरबरो के गिन्नुशों की सरल रचनाएँ इस धारणा की प्रमाण स्वरूप हैं।

सन्त जीवन चरित्रों की अनुवाद—लेटिन भाषा की लोकप्रियता का के साथ साथ फ्रेंच भाषा का भी आकर्षण लेखकों के लिए बहुत काल तक रहा। क्रमशः अंग्रेजी भाषा अपनाई जाने लगी यद्यपि उच्चकोटि की रचनाएँ इस अपरिमाजित दशा में असंभव थी। इस काल के लेखक इतिहास, शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकें तथा नैतिक ग्रन्थ गद्य में ही लिखते रहे। तेरहवीं शताब्दी के 'क्रॉनिकल' की रचना के बाद सन्तों का

जीवन-चरित्र गद्य में लिखा जाने लगा। सेन्ट कैथेरिन्, सेन्ट मार्गेरेट तथा सेन्ट जूलियाना का जीवन चरित्र पहले पहल गद्य में लिखा गया ईसाई धर्म की विद्वानियों की शिक्षा के लिए 'पेनक्रोन रिव्यू' की रचना गद्य में हुई।

रेजिनाल्ड पीकार्ड—पन्द्रहवीं शताब्दी में यह गद्य शैली प्रचलित रही और अनेक लेखकों ने गद्य को साहित्यिक माध्यम बनाया। रेजिनाल्ड पीकार्ड ने १४५५ ई० में 'ट्रि ट्रिंमर' की रचना सरल, सीधी भाषा में की और इसमें पाठरियों के आत्म-विकास का प्रयास किया।

विलियम कैम्ब्रिज—परन्तु इन शताब्दी की सबसे महत्वपूर्ण घटना मुद्रण कला का आविष्कार था। १४७६ ईसवी में विलियम कैम्ब्रिज ने मुद्रण कारखाना इंगलिस्तान में खोला। कैम्ब्रिज मुद्रक ई नहीं बरन अनुवादक भी थे। उन्होंने अपने अनुवादों में अंग्रेजी भाषा की शब्दावली को बढ़ाने का प्रयत्न किया। उनके समय में अंग्रेजी भाषा का अनेक बोलियों प्रचलित थी परन्तु साहित्यिक रूप फिर्मा की नहीं मिल पाया था। कैम्ब्रिज के अनुवादों तथा मुद्रण कला की उपयोगिता ने कारण पढ़ने की चीज का प्रचार बढ़ा जिसे हम शुद्ध अंग्रेजी भाषा अथवा सुसंस्कृत भाषा का नाम दे सकते हैं।

लॉर्ड वर्नेस—कैम्ब्रिज की प्रकाशित पुस्तकों में सर थॉमस मैलरी रचित मॉर्ट डे आर्थर नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ था। मैलरी ने यह पुस्तक १४७० ई० में लिखी थी। इसकी शैली अत्यन्त सरल तथा आधुनिक पाठकों के लिए अत्यन्त सुगम है। मैलरी की भाषा तथा वाक्यों में मूर्ति है और उन्होंने मूल ने इस पुस्तक का अनुवाद किया था। मूल ग्रंथ में मध्ययुग का प्रेम तथा साहित्यिक जीवन प्रतिबिम्बित है। लॉर्ड वर्नेस ने भी इसी युग का चित्रण फ्रायसर्ट लिखित 'क्रानिकल' के अनुवाद में किया। फ्रायसर्ट ने यह पुस्तक १५२० ईसवी में लिखी थी और चौदहवीं शताब्दी के सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन के अनेक स्थलों का अर्थपूर्ण वर्णन किया था। मूल रूप में यह पुस्तक फ्रेंच भाषा में थी परन्तु वर्नेस का अनुवाद सरल, सौन्दर्यपूर्ण तथा सुसंगठित भाषा में है। यह अनुवाद साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है और हम इस पुस्तक से ही आधुनिक गद्य शैली का जन्म मानते हैं। इसी बीच में ईसाई धर्म पुस्तक बाइबिल का महत्वपूर्ण अनुवाद अनेक बोलियों में हो रहा था

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

और क्रमशः लेखक उस भाषा के समीप पहुँच रहे थे जिसमें इस पुस्तक की रचयिता शताब्दियों तक रही।

वाइविल का अनुवाद-टिन्डेल तथा कवडेल—आधुनिक वाइविल की सुसंस्कृत रूप देने का श्रेय दो लेखकों को है। ये थे विलियम टिन्डेल (१५२०-१५३६) तथा जॉर्ज कवडेल (१४८८-१५६८)। यद्यपि ^{William Coverdale} सत्रहवीं शताब्दी में जॉन विक्लिफ ने वाइविल का अंग्रेजी संस्करण निकाला था परन्तु उनका अनुवाद शब्दानुवाद था और उनकी भाषा कठिन तथा नीरस थी। कुछ साहित्यकारों ने विक्लिफ के अनुवाद की प्रशंसा कर उसे अंग्रेजी गद्य साहित्य के विकास में उच्चस्थल दिया है। परन्तु यह स्थान टिन्डेल तथा कवडेल को ही मिलना चाहिए था। टिन्डेल को धर्म विरोध के कारण १५५६ ईसवी में विलबोर्ड के समीप पर्वी दी गई और उनका शरीर अग्नि की शय्या पर सुलाया गया परन्तु उनकी साहित्यिक सेवा अमर है। १६११ ईसवी में जो वाइविल का विशुद्ध संस्करण निकाला उसका श्रेय टिन्डेल को प्राप्त है। इस संस्करण की भाषा अत्यन्त परिमार्जित है और इसके वाक्यांश समन्वित तथा लघुवर्ण हैं। इस ग्रन्थ की शब्दावली लेखकों के आध्यात्मिक ज्ञान का पुष्प परिचय देता है। साहित्य कवडेल ने टिन्डेल के अनुवाद कार्य की अपने सदयोग से पूर्ण किया और कदाचित् ही कोई अन्य पुस्तक ही जिनके नाम जर्मन पर अपने आधिक्य साहित्यिक प्रभाव डाला हो। इस पुस्तक में अंग्रेज वर्तमान के सभी वर्गों के मनोबुद्ध प्रमानित हुए हैं और इस आत्म-ग्रन्थ का सम्बन्ध तथा औन्नत्य भाषा को साहित्यिकों ने मानव अनुभवों का सफल व्यक्तता के लिए प्रयुक्त किया है। आशाक्षिप्तों को इस पुस्तक ने अत्यन्त विनिम्ब का समस्त साधन दिया और साहित्यिकों ने इस पुस्तक से अनेक अनेक साहित्य साधना की है। कवियों के शीतोत्प्रेरक के अतिरिक्त यह साहित्य लेखकों को अत्यन्त अत्यन्त प्रयुक्त के अतिरिक्त ही है। अनेक वर्षों तक जर्मन साहित्यिकों के उन्नयन में इस पुस्तक का अत्यन्त महत्त्व है।

वाइविल का अनुवाद जर्मन में अत्यन्त विचार की परिपूर्ण साहित्यिक पुस्तक है। अनेक वर्षों से अनेक विचार में भाग लेकर आधुनिक साहित्यिकों ने अनेक अनेक अत्यन्त परिपूर्ण की। अनेक वर्षों शताब्दी में अनेक वर्षों के अत्यन्त महत्त्व है। अनेक वर्षों के अत्यन्त महत्त्व है। अनेक वर्षों के अत्यन्त महत्त्व है।

लेखों, विवादापूर्ण दिग्दर्शियों तथा आलोचनाओं से पुस्तकालय भरे पड़े हैं। परन्तु इन में केवल कुछ ही रचनाओं को साहित्यिक स्थान प्राप्त हुआ है।

फॉक्स—सोलहवीं शताब्दी की सबसे विख्यात रचना फॉक्स रचित 'बुक ऑफ़ माटर्म्स' बहुत समय तक लोक प्रिय रही। इस रचना में फॉक्स ने प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय के शहीदों की मृत्यु का अत्यन्त प्रायश्चित्पूर्ण वर्णन किया है और कुछ वर्णनों में रक्तम रक्त का विशेष प्रतिपादन हुआ है। प्रायः एक शताब्दी तक फॉक्स की यह पुस्तक प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय की मुख्य धर्मपुस्तक रही।

रिचर्ड हूकर—धार्मिक विचारों में भाग लेने वाले लेखकों में रिचर्ड हूकर की महत्ता अधिक है। रिचर्ड हूकर (१५५४-१६००) की प्रख्यात रचना 'लॉज ऑफ़ इन्फ़ॉर्मिटाण्टिकल पॉलिटि' १५६४ ई० में प्रकाशित हुई। हूकर ने अपनी रचना से भाषावेश दूर रखकर नार्थिक रोति में अंग्रेजी भाषाओं के नियंत्रण तथा उनके सुचारु सगठन के मिद्वान्त बननाप। उन्होंने अपने तर्कों में पादाविनाश के स्थान पर समझौते का दृष्टि कोण रखा और इसी धार्मिक समझौते में ही सम्प्रदायों का कल्याण यत्नलाया। जिस प्रकार उन्होंने धर्म से मध्य मार्ग ढूँढ़ निकाला उसी प्रकार शैली में भी मध्य मार्ग चुना। अपनी शैली में उन्होंने अंग्रेजी तथा लैटिन भाषाओं को केवल अस्त्रियों की अपनाया और उसे स्वाभाविक शक्ति प्रदान की। अंग्रेजी की सरलता तथा लैटिन भाषा के ओजे की मधिमिश्रित कर उन्होंने एक प्रभावपूर्ण शैली बनाई। हूकर महान विद्वान तथा ज्ञानी पुरुष थे और स्वार्थहीन तथा मन्तोप प्रिय जीवन व्यतीत करते थे। यदि उनके आदर्शों को इंगलिस्तान ने अपनाया होता तो देश को उस समय आन्तरिक शांति मिलती और सम्प्रदायों में धमनस्व के स्थान पर प्रेम और भ्रातृत्व की सर्वादा स्थापित होती। *Sir Roger Ascham*

सर, रोजर ऐसकम—सोलहवीं शताब्दी वास्तव में नाटक का युग था। नाटक रचना तथा नाट्य कला इस युग में चरम सीमा पर थी। परन्तु कुछ साहित्यिक अंग्रेजी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाकर एक सुसंगठित शैली की नींव डालने में दक्षचित्त थे। लेडी जेन ग्रे के शिक्षक सर रोजर ऐसकम की इच्छा थी कि इंगलिस्तान विद्या तथा ज्ञान के लिए समस्त यूरोप में आदर्श-रूप बन जाय और इसी ध्येय को सम्मुख रख कर उन्होंने

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

१५४५ ईसवी में 'टॉक्सोफ्राइलस' की रचना की। इस पुस्तक में उन्होंने शिक्षा पर कथोपकथन रूप में अपने विचार प्रगट किए। १५७० ईसवी में उन्होंने दूसरी पुस्तक 'दि स्कूलमास्टर' शिक्षण कला पर लिखी। जद्यपि ग्रीक तथा अन्याय नाट्यकार तथा अन्यान्य लेखक गद्य का उपयोग करते रहे परन्तु गद्य में सार्वजनिक जीवन की अभिव्यक्ति अब तक न हो सकी थी। केवल इतिहास तथा अनुवाद ही गद्य के माध्यम में लिखे जाते थे।

Dr. Johnson's Preface

सर टॉमस नॉर्थ—द्व्युत्तर काल की सुविख्यात प्लूटार्क रचित पुस्तक 'लाइव्ज ऑव दि नोबिल ग्रीशन्स ऐन्ड रोमन्स' का अनुवाद १५७६ ईसवी में सर टॉमस नॉर्थ ने किया। शकसपथर ने अपने अनेक नाटकों के कथानक इसी अनुवाद से लिए हैं। फिलोमन डॉलैन्ड ने लिनी लिखित 'नैचुरल हिस्टरी' का अत्यन्त रोचक अनुवाद किया था और

फ्रेन्सिस बेकन—सत्रहवीं शताब्दी के सुविख्यात गद्य लेखक फ्रेन्सिस बेकन हैं। बेकन (१५६१-१६२६) वैज्ञानिक दृष्टिकोण से और उनकी रचनाओं से धार्मिक रुढ़िवाद में विशेष परिवर्तन हुआ। परन्तु अपने निजी जीवन में बेकन स्वयं रुढ़िवादी थे। उनका रचनाएँ मुख्यतः लैटिन भाषा में हैं परन्तु उनकी कृषि विज्ञान उनके अग्रणी भाषा के लेखों में ही हैं। बेकन लैटिन की ही सभ्य भाषा मानने थे और ह्यू भाषा में अपनी रचनाओं के अमर होने का नाम वे देना कर्त थे। परन्तु अग्रणी भाषा ने ही उनकी कृषि को बढ़ाकर उन्हें गद्य साहित्य का महान कलाकार बनाया।

इंगलिन्ड के पुनर्जागरण काल के बेकन प्रतिनिधि स्वरूप हैं। वे विद्वान्, पदार्थवादी, पठ्यन्त्रकारी तथा उन्नाभिलषिणी के मनुष्य थे। उनकी लिखी हुई 'इस्टरी ऑव हेनरी दि सेवन्थ' ने ऐतिहासिक रचना शैली को प्रभावित कर, सुगठित कथानक शैली का प्रचार किया। उनकी 'न्यू एटलान्टिस' पुस्तक अथूरी है जहाँ लेखक ने ज्ञानोपार्जन के उच्च साधन पर विचार प्रकट किए हैं, परन्तु उनकी सबसे मान्यता-पूर्ण रचना उनके लेखों का संग्रह है। उनकी शैली में अद्भुत कला है। संक्षेप में प्रचार भाषा तथा विचारों के प्रदर्शन में वे अद्वितीय थे। उनके प्रत्येक वाक्यांश तथा वाक्य विचार समुह हैं। उनके वाक्यांशों में आत्मिक समन्वय है और उनकी उपमाएँ अत्यन्त हृदयग्राही होती हैं।

सत्रहवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध का इतिहास, कैथलिक सम्प्रदाय पर प्रुगिडन सम्प्रदाय की विजय प्राप्ति का इतिहास है। इस समय देश में अनेक धार्मिक तर्क-विर्तक चल रहे थे, यह-युद्ध हो रहा था और क्रमशः प्रुगिडन सम्प्रदाय शक्तिशाली होता जा रहा था। इस समय के गद्य लेखों तथा पुस्तकों में एक नवीन शैली की पराकाष्ठा पहुँच रही थी। इस शैली में स्वाभाविक सरलता के साथ ^१ धार्मिक नैतिकता के साथ ^२ गाम्भीर्य, तथा प्रभावत्मक शुरुआत ^३ थी। इस गद्य की शालीनता तथा गम्भीरता कदाचिन् किसी युग में पुनः नहीं आई। इस शैली के महान् कलाकार थे सर टॉमस ब्राउडेन, जेरेमी टेलर तथा जॉन मिल्टन। Browne, J.

सर टॉमस ब्राउन—सर टॉमस ब्राउन (१६०५-८२) चिकित्सक थे और उनका निवास्थान नॉरविच था। यद्यपि वे यह-युद्ध के समय में युवा थे परन्तु वे उससे बिलकुल अप्रभावित रहे। उन्हें यथेष्ट

वैज्ञानिक ज्ञान था और वे वेकन की अन्धपक विचार भासा में प्रभावित हुए थे। धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में उनकी विशेष रुचि थी और उन्होंने प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रन्थों का समुचित अध्ययन भी किया था। सत्रहवीं शताब्दी के अन्य लेखकों का विचार धारा के समान ही ब्राउन की भी विचार धारा थी। वे सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तथा आधुनिक काल के आरम्भ की विचार धाराओं के संगम के प्रतिनिधि स्वल्प हैं। यद्यपि उन्हें विज्ञान से प्रेम था तिस पर भी अन्धविश्वासों में उनकी रुचि थी। धर्म में वे सहनशीलता के प्रतिपादक थे परन्तु उन्हीं की गवाही के कारण अनेक असहाय बुड़ी स्त्रियों को जादूगरनी समझकर अग्नि में भस्म कर दिया गया था। इसी द्वैत की उनके विचारों में प्रचुरता है परन्तु मृत्यु की अनिवार्य तथा विपाद-युक्त भावना उनके सन्मुख मंदव रहती है। यही विचार समूह उनके 'हादड्रियोटेक्रिया आर अर्न वेरियल' के आधार हैं। अपना आध्यात्मिक जीवन चरित्र उन्होंने 'रिलिजियो मेडिटेटिव' (१६४२) में प्रदर्शित किया है। ब्राउन की शैली में गम्भीर तथा वाक्य सामंजस्य की अनुपम कला है। उनका शब्द चयन तथा वाक्यांश समन्वय लैटिन भाषा शैली के आधार पर है इसी से उसमें आत्मिक शालीनता तथा शाब्दिक गुरुता की मात्रा विशेष रूप से है। ब्राउन की क-पना-पूर्ण तथा गम्भीर शैली की तुलना कदाचित् ही किसी अन्य लेखक से हो सके।

जेरेमी टेलर—जेरेमी टेलर भी ब्राउन के युग के ही लेखक तथा धर्म प्रचारक थे। उनके ओजपूर्ण धार्मिक भाषणों को जनता मन्त्र-मुग्ध होकर सुनती थी। उनकी ख्याति विशेष 'होली लिविंग' (१६५०) तथा 'होली डाइंग' (१६५१) नामक रचनाओं से है और इन दोनों पुस्तकें की सुत्रोध तथा मार्मिक शैली अनेक लेखकों के सम्मुख आदर्श रूप रह गई हैं। भाषा के मर्म को ये भली-भाँति जानते थे और इसी मार्मिक तथा हृदयग्राही उपयोग के कारण उनके धार्मिक भाषणों तथा रचनाओं के अपूर्व ख्याति मिली।

जॉन मिल्टन—धार्मिक आकर्षण के कारण जेरेमी टेलर ने अपना लेखनी उठाई थी परन्तु जॉन मिल्टन को गद्य-लेखन के लिए राजनीति से उत्साहित किया। मिल्टन, आलिवर क्रॉमवेल के लैटिन मन्त्री थे और राजनीतिक विवादों का उत्तर देता ही उनका दायित्व था। उनके बहु

से लेख केवल लैटिन भाषा ही में हैं, परन्तु उनके कुछ लोकप्रिय लेख शैली तथा तत्कालीन विषयों पर अंग्रेजी भाषा में भी हैं। उनके बहुत से लेखों की लोकप्रियता इस कारण लुप्त हो गई कि इन लेखों के विषय केवल समकालीन पाठकों को ही रुचिकर थे। १६४४ ई० में प्रकाशित 'एरियोपेजिटिका' में प्रतिबन्धरहित रचना तथा भाषण की व्यवस्था के लिए उन्होंने महत्वपूर्ण लेख लिखा। उनका दृढ़ विश्वास था कि यदि मानव आत्मा पर से अनावश्यक प्रतिबन्ध हटा दिये जाय तो उसकी स्वाभाविक तथा आदर्श-पूर्ण प्रगति होगी। अनेक रचनाओं में अपना देश प्रेम उन्होंने प्रदर्शित किया है। उनकी भविष्यवाणी थी कि इंगलिस्तान का भविष्य में उत्थान होगा और वह राष्ट्रीय में शिर मौर बनेगा। उनकी भाषा में सरलता कम है और उनके वाक्य समूहों में सौष्ठव नहीं है। इसका कारण लैटिन भाषा शैली का आधार था जो उन्होंने अंग्रेजी में प्रयोग किया परन्तु जब वे सामाजिक तथा धार्मिक विचारों पर अपने विचार प्रकट करते हैं तो उनकी शैली में अद्भुत शक्ति तथा उनके विचारों में अपूर्व नैतिकता प्रतीत होती है।

आइजक वॉल्टन—'कम्प्लीट ऐंग्लर'—इन धार्मिक तथा नैतिक विचार धारा से पृथक् गद्य लेखकों में आइजक वॉल्टन (१५६३-१६८३) अत्यन्त लोकप्रिय हुए। उन्होंने १६५३ ई० में 'कम्प्लीट ऐंग्लर' प्रकाशित कर मछली पकड़ने तथा उसके पकाने के कौशल के साथ-साथ इंगलिस्तान के ग्रामीण दृश्यों का वर्णन किया। उन्होंने डन, हूकर, जॉर्ज हरवर्ट जैसे लेखकों की जीवनी भी प्रकाशित की परन्तु उनके 'कम्प्लीट ऐंग्लर' की लोकप्रियता अद्वितीय रही और आधुनिक काल के भी पाठक उसके अध्ययन में सुरुचि रखते हैं।

१६६० ईसवी में, रेस्टोरेशन काल के आरम्भ से, अंग्रेजी भाषा में नवीन शैली का विकास तथा पोषण होता है। इस समय फ्रांसीसी राज दरबार से अंग्रेजी समाज प्रभावित था। इसी कारण फ्रांसीसी लेखकों की सरल शैली का प्रभाव अंग्रेजी गद्य साहित्य पर पड़ा। यद्यपि अंग्रेजी गद्य में सरलता यथेष्ट थी जैसा कि नाइविल से विदित है परन्तु इस काल के सभी लेखक प्रभावोत्पादन के लिए भाषा प्रयोग अधिक करते हैं और सुबोधता के लिए कम। टेलर, ब्राउन तथा मिल्टन की गद्य शैली दैनिक कार्य सम्पादन के लिए अनुपयुक्त थी और अब समय ऐसा

जॉन लॉक—हॉक्स के विपरीत मिद्दानों के मानने वाले जॉन लॉक थे। जॉन लॉक (१६३२-१७०४) की धारणा थी कि ज्ञान का मूल-धार अनुभव है और इस अनुभव और हॉक्स के निर्धारित शारीरिक प्रतिक्रियाओं में कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। लॉक रचित 'एन एसे कनसर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टैन्डिंग' का प्रभाव इंगलिस्तान तथा अमरीका दोनों पर पड़ा। यह ग्रन्थ दर्शन-शास्त्र के इतिहास में अत्यन्त महत्व-पूर्ण है और अंग्रेजी समाज की स्वाभाविक प्रवृत्तियों का प्रति रूप है। हॉक्स तथा लॉक दोनों ही की भाषा सुगम है। हॉक्स की भाषा में अपूर्व सौन्दर्य है और लॉक में केवल सरलता।

सैम्युएल पीप्स—इस समय का विज्ञान तथा दर्शन मानव-भस्तिष्क क्षेत्र का अन्वेषण कर रहा था। कुछ लेखकों ने अपने निजी जीवन पर दृष्टिपात कर अपने विचार की प्रगति का इतिहास लिखना आरम्भ किया। अनेक लेखकों के पत्रों तथा डायरियों से इस धारणा की पुष्टि होती है। कदाचित् पहले-पहल यह साहित्यिक प्रवृत्ति अंग्रेजी भाषा में विद्यमान हुई। इन लेखकों में सैम्युएल पीप्स महत्व-पूर्ण है। सैम्युएल पीप्स (१६३३-१७०३) की रचनाएँ स्वान्तः सुखाय थीं परन्तु वे सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के अत्यन्त महत्व-पूर्ण ग्रन्थकार हैं। यदि पीप्स लेखक न होते तब पर भी उनका नाम अंग्रेजी साहित्य में प्रसिद्ध रहता। वे शाही नौ-सेना के प्रवर्तक तथा रॉयल सोसायटी के सभापति थे। उन्होंने अपनी डायरी में अपनी दिन चर्या, अपनी जीवन कहानी तथा अपने विचारों का स्पष्ट तथा नग्न प्रदर्शन अत्यन्त अकृत्रिम ढंग से किया है। पीप्स ने इस डायरी में अपने हृदय के अन्तरतम भावों का विश्लेषण किया है।

पीप्स के अनिश्चित डायरी लेखक अन्य साहित्यकार भी थे जिन्होंने स्वान्तः सुखाय अपने जीवन-अनुभव पाठकों को दिये। पीप्स के अनन्य मित्र जॉन एवलिन (१६२०-१६०६) रॉयल सोसायटी के सदस्य, दरबारी तथा समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उनकी रुचि उद्यान तथा पुष्प वाटिकाएँ लगाने, भ्रमण करने तथा सभ्य समाज निर्माण करने में थी। उन्होंने भी अपनी जीवन चर्या का यथार्थ वर्णन अपनी डायरी में किया है।

एडवर्ड हाइड—१७०२ ईसवी में, एडवर्ड हाइट ने जो आगे चलकर थॉमस आर्चबिशोप के नाम से विख्यात हुए, 'हिस्टरी ऑफ

दूसरा अध्याय

जॉनसन, कोलरिज, डार्विन, रस्किन, चेस्टरटन

अठारहवीं शताब्दी में मनुष्यों का अध्ययन क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत हो गया था और जीवन और संसार के अनेक विषयों पर व चिन्तन-शील हो रहे थे। साहित्य के सौभाग्य से एक सर्ल, सुबोध तथा प्रभावपूर्ण शैली का निर्माण हो चुका था जिसके माध्यम से मनुष्य अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा का परिचय दे सकता था। दर्शन विचार में इंगलिस्तान के दार्शनिक अग्रगण्य हो रहे थे और मानव अनुभूति की धुरी पर नवीन दर्शन शास्त्र निर्माण भी कर रहे थे। साहित्य में रिचार्डसन तथा फ्रीलैंडिंग मानव अनुभूतियों का विवेचन उपन्यास में कर रहे थे। इतिहास-लेखक जाति की प्राचीन प्रतिष्ठा को इतिहास में जीवित कर रहे थे। दार्शनिक यथार्थ चिन्तन में तल्लीन थे। यह स्वाभाविक ही था कि धर्म ग्रन्थों तथा धार्मिक सम्प्रदायों पर लेखकों की तर्कपूर्ण दृष्टि पड़नी।

जोजेफ वटलर—ईसाई धर्म के लिए जोजेफ वटलर की रचनाएँ महत्वपूर्ण हुईं। जोजेफ वटलर (१६६२-१७५२) ने अपने धर्म ग्रन्थ 'दि एनैलजी ऑव रिलिजन' (१७३६) में धर्म की स्वाभाविक मर्यादा की रक्षा की।

वर्नार्ड मैन्डविल—नैतिक विषयों पर सबसे मौलिक रचना वर्नार्ड मैन्डविल (१६७०-१७३३) की थी। 'फ्रेविल ऑव दि वीज' (१७१४) ग्रन्थ में उन्होंने निर्जा जीवन की नैतिकता तथा जार्तीय जीवन की नैतिकता की विभिन्नताओं की कटु तथा व्यंगपूर्ण आलोचना की है।

जॉर्ज बर्कले—मैन्डविल के समान ही जॉर्ज बर्कले (१६८५-१७५३) ने भी जीवन की अनैतिकता से असन्तुष्ट होकर समाज सुधार की चेष्टा अपनी रचनाओं में की। वे आदर्शवादी थे और उन्होंने अमरीकी उपनिवेशों की अनैतिकता की भर्त्सना की। उन्होंने १७०६ में प्रकाशित अपनी सुविख्यात रचना 'ऐन एसे टुवट्स ए न्यू थियरी ऑव विज़न' में यह सिद्ध किया कि पदार्थ संसार निस्तार है और मानव ज्ञान का मूलाधार केवल मानसिक विचार है। पदार्थवादी युग में बर्कले ने आदर्शवाद की महत्ता सिद्ध की। डेविड ह्यूम ने मनुष्य का मानसिक विश्लेषण किया और विशेष समय लगाकर 'एसेज़ कन्सर्निंग ह्यूमन अन्डर

जॉनसन, कोलरिज, टॉर्किन, रस्किन, वे स्ट्रटन

नवीन सिद्धान्त दिए। परन्तु उनका मुख्य ग्रन्थ अंग्रेजी भाषा का प्रथम शोध था जो 'डिक्शनरी' के नाम से विख्यात है। यह 'डिक्शनरी' उन्होंने आठ वर्ष के योग परिश्रम से लिखा और यह ग्रन्थ आगामी युग के शब्द-शोध लेखकों के लिए आधार रूप रहा। शाब्दिक परिभाषा अत्यन्त दुस्तर कार्य है परन्तु जॉनसन की मानसिक शक्ति अस्वार्थ थी। उन्होंने यह शोध अत्यन्त सकलता पूर्वक तैयार किया और अंग्रेजी भाषा के अनेक शब्दों की बड़ी शब्द परिभाषाएँ बनाईं। १६८२ ईसवी में जॉनसन की तीसरी रचना 'दि लाट्वज ऑव पोगेट्स' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में उन्होंने शोल चाल की भाषा में काउली ने लेकर से के समय तक के कवियों का जीवन चरित्र लिखा। 'पेक्लेज' नामक रचना का स्थान औपन्यासिक साहित्य में है परन्तु 'दि मेम्बलर' तथा 'दि आइटलर' सामयिक कालों में उन्होंने सामाजिक, नैतिक तथा साहित्यिक लेख लिख कर गद्य साहित्य को प्रोत्साहन दिया। इन सामयिक लेखों में उन्होंने विशेषतः नैतिक विषय चुने और समाज सुधार की ओर संकेत किया। जॉनसन की विद्वत्ता, उनकी पद्धत प्रियता तथा उनका शैली का अपूर्व उदाहरण उनकी रचना 'एलजी टु दि वेस्टर्न आर्लैन्ड ऑव स्कॉटलैन्ड' में है। यह रचना १७७५ ईसवी में प्रकाशित हुई थी।

जॉनसन की साहित्यिक प्रतिभा तथा उनके मन-सुगंध रचनाओं का रक्षितमण्डल ने नवीनतम प्रशंसा नहीं की है। अंग्रेजी का प्रथम से हम केवल एक शूद्र तथा अव्यक्तप्रिय मनुष्य का निर श्रेयत है और उनका हम धर्मात्मान ने उनके साहित्यिक महत्त्व को बहुत कुछ कम कर दिया है। उनकी शैली सो-उपवर्ण तथा लक्ष्मणों ने एक आदर्शिक मनुष्यत्व होता है जिसके कारण उनके 'रुद्राव नखोलता' निर्दिष्ट होता है। समाजोत्कर्ष ने कुछ अत्यन्त पूर्ण तथा सुगंध पूर्ण कामों की सुतक उनका आलोचना की है। जॉनसन अपने ही जीवन के पूर्ण प्रतीक हैं। उनके समाजोत्कर्ष की शक्ति, स्वाभाविक स्पष्ट, बहिष्कारिता, शक्ति तथा महत्त्व का अन्वेषण भावों का समावेश है। जैसा कि उनका आदेश सम्बन्ध था तथा साहित्य में नैतिकता। वे निरपेक्ष समाजोत्कर्ष के लिए निर्भयतापूर्वक प्रयत्न साहित्यिक समाजोत्कर्ष के लिए हैं। जैसा कि वे समाजोत्कर्ष के लिए करण उनके उद्देश्य के कारण का महत्त्व दिया।

को ही वे मानव विचार का आधार मानते थे। मनुष्य और ईश्वर का सम्बन्ध उनकी दृष्टि में समाज का प्रथम नियम था और इस नियम का दिग्दर्शन अमूर्त सिद्धान्तों में न होकर सामाजिक सद्दि तथा आचार-विचार में होता है। समाज-शास्त्र में बर्क सद्दिवाद के पक्षपाती थे। उनके विचारों में तर्क और अनुभव का सामंजस्य है परन्तु अनुभव को ही वे श्रेष्ठ समझते हैं। बर्क की शैली में बोल-चाल की भाषा का प्रवाह है और उनकी तर्क शक्ति में अद्भुत प्रौढ़ता है। पाठकों की ब्राह्मशक्ति पर वे अपनी रचनाओं में विशेष ध्यान रखते हैं और इसी कारण उनकी रक्तृताओं में आवेश तथा तर्क का सम्मिश्रण रहता है। जॉनसन तथा गिबन के विपरीत बर्क की शैली अधिक सुबोध तथा उनके शब्दचयन में माधारणतयः लोकप्रिय शब्दों तथा विचारों का प्रयोग रहता है।

प्रे, कूपर, जॉन वेज़ली, हॉरेस वाल्पोल—इस शताब्दी के गद्य साहित्य में साहित्यिकों के पत्र-व्यवहार तथा सामयिक सासिक तथा द्विमासिक पत्रों का श्रेष्ठ स्थान है। इन पत्रों में हमें समकालीन जीवन का सम्पूर्ण आभिव्यक्ति मिलती है और उनके आधार पर हम इस युग ज्ञान का प्रनुभव सरलता-पूर्वक कर सकते हैं। इस युग के लेखक प्रवक्ताश तथा विचार प्रेमी थे और अपने विचारों का आदान-प्रदान मिल-जुलती बनावट पत्रों के माध्यम से करते थे। इस दृष्टि से यद्यपि टॉमस पे ने कविताएँ तथा रवी परन्तु पत्र अन्तः निर्मित जिनमें हमें उनके मानसिक विवाद का विश्लेषण तथा उनकी अथार विद्वत्ता का परिचय मिलता है। विलियम कूपर के पत्र बड़े तर्कीय हैं तथा दिन प्रतिदिन के जीवन के अनेक अनोखे स्थलों का परिचय वे पाठकों को देते हैं। मेथडिस्ट आन्दोलन के प्रवर्तक जॉन वेज़ली ने अरना 'दापरी' में अपने आन्दोलन का अत्यन्त मानवी विवरण दिया तथा हॉरेस वाल्पोल (१७६७-६७) ने अपने पत्रों में अठारहवीं शताब्दी के सम्पूर्ण जीवन का विस्तृत चित्रण किया है। उनके पत्रों में हान्द, धर्म तथा समाज निर्माण की श्रेष्ठ कला है।

लॉर्ड चेस्टरफील्ड—हॉरेस वाल्पोल की तुलना में लॉर्ड चेस्टरफील्ड के पत्र अधिक लोकप्रिय हुए। उनके शैली परिमार्जित तथा अठारहवीं शताब्दी का नमूना के अतिरिक्त है। वे पत्र उन्होंने अपने पत्रों में लिखे थे परन्तु उनमें बहुत सारा सभ्य पुरुषों के आचार-विचार

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

के नियम प्रदर्शित किये हैं। युवाओं की शिक्षा के लिये शिष्टाचार तथा लोक-प्रियता के साधन तथा नियम उन्होंने रुचिकर भाषा में प्रस्तुत किये हैं।

जेम्स मैकफ़र्सन—'ऑसियन'—इस युग के साहित्य के पठन-पाठन से निश्चित होता है कि मनुष्यों में प्राचीन-काल के प्रति बड़ी श्रद्धा तथा काव्य-भावना थी। इसी भावना को साहित्य बद्ध करने के लिए जेम्स मैकफ़र्सन (१७३६-१६) ने 'दि वर्क ऑव ऑसियन' की रचना की। मैकफ़र्सन का 'ऑसियन' केवल कल्पित पुरुष था और लेखक ने अपनी अपूर्व कल्पना के आधार पर लय-पूर्ण गद्य में कथा खण्डों का वर्णन किया है। उन्होंने अपनी रचना को प्राचीन गॉल जाति की कविताओं का भावानुवाद प्रमाणित किया और इसके प्रमाण में मूल ग्रन्थ की भी कल्पना कर एक पुस्तक रची। मैकफ़र्सन की यह रचना केवल एंग्लो-नॉबल में ही नहीं बल्कि यूरोप में भी लोकाप्रिय हुई और क्रॉमवेल के नायक रोसेलिवन ओनापार्ट तथा श्रेष्ठ जर्मन कवि गेट्टे ने इसकी प्रशंसा की है। यह रचना गद्य-साहित्य की श्रेष्ठ निधि है और इसके विषय में हम निश्चित मान सकते हैं।

कोलरिज - 'धायोथेकिया लिटरेरिया'—रोमान्टिक काल की प्राण प्रदान करने वाला रोमान्टिसम में हुई इस युग के लेखकों ने श्रेष्ठ गद्य रचना में भी योगदान किया। रोमान्टिक लेखकों में कोलरिज ने साहित्यिक समालोचना में प्रथम बार्षिक निबन्ध पत्रिका का निर्माण किया। उनकी 'धायोथेकिया लिटरेरिया' दो भागों में प्रकाशित हुई और कोलरिज ने इस पुस्तक में साहित्यिक विचार, लय, लक्ष्य प्रभावपूर्ण शब्दों का निर्माण तथा व्यक्तित्व किया। वर्षों बाद लिटरेरिया की व्याख्या उन्होंने मुख्यवस्थित रूप में की। कोलरिज 'लिटरेरिया' के दार्शनिक विचारों पर प्रभाव डालने में सफल हुए थे। इसलिए यह दार्शनिक निश्चय था कि भाषा-साहित्य का मुख्यतः साहित्य की दिशा में विकास-शक्ति है।

की अपूर्व शक्ति है परन्तु वायरन कीट्स से भी श्रेष्ठ हैं। वायरन के पत्रों में मानवता का काव्य, जीवन का हास तथा उनके समाज-द्रोह की हृदयग्राही कथा हैं। कदाचित् निजी जीवन की मधुर व्याख्या में वायरन चार्ल्स लैम्ब से पीछे हैं। चार्ल्स लैम्ब (१७७५-१८३४) की कृतियाँ 'एसेज ऑव ईलिया' (१८२३) तथा 'लास्ट एसेज' (१८३३) अंग्रेजी पाठकों को विशेष प्रिय हैं।

निजी जीवन के वर्णन में चार्ल्स लैम्ब की अपूर्व रुचि थी। जो शैली मॉन्टेन ने फ्रांस में प्रचलित की थी उसी के आधार पर काउली ने इंगलिस्तान में रचना की और लैम्ब ने इस शैली की पराकाष्ठा दिखलाई। लैम्ब की लेख-शैली में अन्यान्य प्राचीन लेखकों की प्रतिच्छाया है और उन्होंने अत्यन्त सरल, सुगम, मानवी तथा कोमल भावों का चित्रण अपने लेखों में एक स्वाभाविक हास्यप्रियता से किया है। लैम्ब श्रेष्ठ समालोचक थे और उनमें काव्यालोचन की अनुपम शक्ति थी परन्तु वे गार्हस्थ्य जीवन में भाग्यहीन तथा दुःखी थे। उनकी बहन मेरी लैम्ब को उन्माद रोग था और उन्मादित अवस्था में उन्होंने माता की हत्या कर डाली थी और पिता पर भी आघात किया था। इस घटना ने लैम्ब के जीवन पर प्रगाढ़ विषाद की छाया डाल दी थी। वे अविवाहित रहे और अपना सम्पूर्ण जीवन बहन की सेवा सुश्रूषा ही में व्यतीत किया।

विलियम हैज़लिट—चार्ल्स लैम्ब की मित्र मण्डली में विलियम हैज़लिट मध्य के श्रेष्ठ लेखक हुए। हैज़लिट चित्रकार थे और उनकी रचनाओं पर चित्रकला का प्रभाव है। अपने लेखों में उन्होंने स्पष्टवादी तथा विचारपूर्ण शैली ग्रहण की। उनके जीवन में न तो लैम्ब की मानवता है और उनकी सुकुमार भावुकता। उनके विचारों में दृढ़ता और उनकी शैली में तीव्रता तथा तीक्ष्णता है। यद्यपि अपने राजनीतिक सिद्धान्तों में वे चरमकोटि के प्रजातन्त्रवादी थे परन्तु नेपोलियन का जीवन उनको प्रिय था और उन्हें उसमें विश्वास था। उनके व्यक्तित्व का स्पष्ट चित्रण हमें उनकी रचना 'लिवर ऐमोरिस' (१८२३) में मिलता है। उनके लेखों के दो संग्रह 'दि स्मिथि ऑव दि एज' (१८२५) तथा 'कैरेक्टर्स ऑव शेक्सपियर्स प्लेज' उनकी आलोचक तथा विश्लेषण-शक्ति का पूर्ण परिचय देते हैं।

टॉमस डि किन्सी—हैज़लिट की तुलना में टॉमस डि किन्सी

मंरत्नगु में प्रकाशित हुई और इसका विशेष प्रचार रहा। तत्पश्चात् 'व्लैकवुड्स एडिनबरो मैगेजीन' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इन पत्रिकाओं ने गद्य साहित्य के श्रेष्ठ लेख प्रकाशित किए थे। राजनीतिक-दलों के मुख्य पत्र होते हुए भी इन पत्रों में जीवन के अनेक विषयों पर लेखक अपने विचार प्रगट करने रहे। मिडनी स्मिथ के व्यंगपूर्ण लेख 'एडिनबरो-रिव्यू' तथा सर चॉल्टर स्कॉट के जामाता जे० जी० लॉकहार्ट की उपहासपूर्ण आलोचनाएँ 'व्लैकवुड' में प्रकाशित होती रहीं। उन पत्रों की सफलता के पीछे हमें उन समय के अंग्रेजी समाज की शिक्षा तथा आचार-विचार का चित्र मिलता है।

चार्ल्स - डार्विन—दस युग के साहित्यिक लेखकों की संख्या बहुत बढ़ी है परन्तु उनमें युग प्रवर्तक रचनाएँ कुछ ही लेखकों की हैं। युग प्रवर्तक श्रेणी के लेखक चार्ल्स डार्विन थे। उनकी प्रतिभा हम नया वर्क के समान थी और वद्यपि उनकी ख्याति विज्ञान क्षेत्र में अधिक है परन्तु अपनी महज तथा मजीब शैली के कारण उनकी मग्ना श्रेष्ठ गद्य लेखकों में भी है। डार्विन (१८०९-८२) साहित्य के श्रेष्ठ कलाकार हैं। उनकी शैली में वैज्ञानिक स्पष्टता के साथ स्वाभाविक तर्क की मरलना है जिममें वे अपने गम्भीर वैज्ञानिक अनुभव का साहित्य रचते हैं। 'दि ऑरिजिन ऑफ स्पेशीज' (१८५९) तथा 'दि डिसेंट ऑफ मैन' (१८७१) नामक रचनाओं में उन्होंने धार्मिक नदियों को खस कर नवीन जीव-शास्त्र का निर्माण किया जिसका प्रभाव सम्पूर्ण युग के जीवन पर पड़ा है। इधर टी० एच० हक्सले (१८२५-९५) ने डार्विन की रचनाओं पर लिखी टिप्पणियों में उनके वैज्ञानिक मत का प्रतिपादन कर उनके तर्क को और भी ग्राह्य बनाया और उनके लोक प्रचार में मह योग दिया। इस युग के विचार-शील मर्त्यान्तों में जेरेमी बेन्थम, डा० थार० मॉल्थूज़, जेम्स मिल, जॉन स्ट्रुट मिल का रचनाएँ विन्ध्यात हुए परन्तु गद्य-साहित्य की दृष्टि पर कदाचित् ही इन लेखकों ने ध्यान दिया हो। इनकी रचनाओं में सरलता तथा सुगमता है और इसा लेखकों के लेख इन लेखकों ने रचनाएँ की थी। इनमें जॉन स्ट्रुट मिल का रचनाएँ शैली की दृष्टि से उत्तम हैं।

मेकॉले—श्रेष्ठ शैली का दृष्टि से दार्शनिक चिन्तन मंगले (१८००-५९) की रचनाएँ उच्च शक्ति की हैं। मेकॉले विद्वान् पुरुष थे। उन्होंने

की ओर ध्रुवसर कर रहे थे उस समय ईसाई धर्म में भी नवीन जागृति हो रही थी। आत्मकर्म सूचने की रूप रेखा टूटी समय बन रही थी और जॉन रेनरी न्यूमन (१८०१-६०) उसका नेतृत्व ग्रहण कर रहे थे। रेनरी न्यूमन ने अपना आध्यात्मिक स्मितात 'एथोलॉजिया प्रो वीटा मुआ' (१८६४) में बड़ी संजक्ता में चिन्तित किया है। न्यूमन, सुष्ट तथा कोमल शैली में अपनी रचना करते थे। उनकी भाषा में लोच तथा गुरुत्व दोनों का मनोहर सम्मिश्रण है और उनकी शैली में भावावेश तथा तर्क का अपूर्व गामंजर है।

जॉन रस्किन—उन्नीसवीं शताब्दी का आध्यात्मिक अपूर्णता के अनुभव करने वाले लेखकों में जॉन रस्किन (१८१६-१८००) इस शताब्दी का कला तथा साहित्य में सुष्ठ थे। उन्होंने 'मॉडर्न पेन्टर्स' (१८४३-६०) नामक ग्रन्थ में चित्रकार टर्नर के आदर्श समाज के गन्धुग्य रग्ये और मॉडर्न की आत्मा को परस्तरन की कमीटा प्रदान का। 'दि मेविग लिम्पुस ऑव आर्किटेक्चर' (१८४६) तथा 'दि स्टॉन्य ग्राय पॉनिश' (१८५१-३) नामक पुस्तकों में शिष्य कला तथा मूर्ति कला पर उन्होंने अपने विचार प्रगट किये हैं। 'अन्ट्रिक्स लास्ट' में उन्होंने व्यापारी समाज के उदार्थवादी सिद्धान्तों का कटु आलोचना कर अर्थ शास्त्र के कुछ नवीन तथा मानवी आदर्शों को स्वष्ट किया। रस्किन ने मजदूरों के लिये कुछ पत्र लिखे जिनका संग्रह 'क्रास क्लविगेरा' में प्रकाशित हुआ और उनकी आत्म कथा 'प्रैटरीटा' नाम से १८८६ ई० में प्रकाशित हुई।

यद्यपि रस्किन का लोकप्रियता कम हो गई है परन्तु अपने समय के वे श्रेष्ठ लेखक तथा कलाकार थे। मर्शन तथा व्यापारी युग की कुरूपता, अमानुषिकता तथा स्वार्थ परायणता में त्रिमुग्य होकर उन्होंने उत्तम कला, आध्यात्मिक तथा नैतिक जीवन के आदर्श, अंग्रेजी समाज को दिये। उनकी शैली सुन्दर शब्दों से आभूषित है, उनके वाक्यांश कला-पूर्ण तथा उनके वाक्य प्रभावपूर्ण हैं। उनकी शैली की गुरुता तथा विभव का कारण उनकी आदर्शवादी आध्यात्मिकता है।

मैथ्यू आरनल्ड—दंगलिस्तान के समालोचना साहित्य को मैथ्यू आरनल्ड (१८२२-८८) ने नये साहित्यिक आदर्श दिये। आर्नल्ड प्राचीन साहित्य के विद्वान थे और उन्होंने अंग्रेजी समाज की अनतिकता तथा सकृचित धार्मिक सिद्धान्तों का घोर विरोध किया। अंग्रेजी समाज

को वे असभ्य समझते थे और जीवन में मधुरता तथा उर्ध्वनि वा गन्ध करने में वे चिन्तन-शील रहे। साहित्यिक समालोचना पर आग्रह से अनेक प्रभावपूर्ण लेख लिखे थे। उन्होंने नवीन कलादर्श निर्मित किए और साहित्य में पहले-पहल आलोचना की कला के सिद्धान्त निरूपित किये। उनकी प्रतिभा साधारण अंग्रेजों की तरह संकुचित नहीं थी परन्तु अन्तः-विचार क्षेत्र यूरोपीय था। उनकी शैली सुसंस्कृत तथा परिभाषित है और परिभाषा निर्माण करने में वे श्रेष्ठ हैं।

वॉल्टर पेटर—आरनल्ड के ही समान वॉल्टर पेटर भी धार्मिक आलोचक थे परन्तु उनकी प्रतिभा तथा शैली आरनल्ड से भिन्न है। उन्होंने कला के उच्च आदर्श की व्याख्या की और कला को समाज तथा नैतिक क्षेत्र से उठाकर उसका एक नया लोक निर्माण किया। उनके लिये जीवन की महत्ता सौन्दर्यानुभव में है और इसी में वे जीवन का पूर्णता तथा सफलता समझते हैं। 'कनकलूज़न टु स्टडीज़ इन दि हिस्टरी ऑफ़ 'रेनेसान्स' (१८७३) में पेटर ने अत्यन्त सौन्दर्य-पूर्ण शैली का निर्माण किया और शब्द तथा भाव चयन में उत्तम श्रेणी की सौन्दर्य-पासना का प्रमाण दिया। 'मिगवस दि एपिक्चूरियन' (१८८५) नामक उपन्यास में उन्होंने अत्यन्त लाभप्रद अनुभवों की खोज की। साहित्य समालोचना के लिये उन्होंने अनेक लेख लिखे थे और कला से नैतिकता तथा समाज से मुक्त करने की चेष्टा की थी। जिस निपट पर दृग युग की महान आत्माओं ने अपने दार्शनिक विचार प्रकट किये उन्हीं विषयों को पेटर ने निलंबित कर दिया।

जी० के० चे स्टर्टन—तीसरी शताब्दी के गद्य साहित्य में वार्नरट्टा तथा जेम्स ज्वायस का महत्त्व-पूर्ण स्थान है। इन लेखकों का गद्य उनके नाटकों तथा उपन्यासों में है। शेष गद्य लेखक या तो नवीन प्रभावों की खोज में हैं या पुराने कलाकारों के छाया मात्र हैं। जी० के० चे स्टर्टन के समान लेखक कम हैं जिनमें साहित्यिक नूतनता तथा प्रभाव-पूर्ण प्रतिभा हो। चे स्टर्टन १८७४ ईसवी में जन्में और उनका प्रभाव गद्य शैली पर महत्त्वपूर्ण रहा है। वे आशावादी, प्रजातन्त्रवादी, कैथलिक सम्प्रदायवादी थे। यही आदर्श लिये वे साहित्य क्षेत्र में आये। उनकी शैली में विरोधी भावों के वाक्यांशों की प्रचुरता रहती है और

जॉनसन, कोलरिज, डार्विन, रस्किन, चेस्टरटन

इसके आधार पर वे अपने पाठकों को आकर्षित करते हैं। उनकी रचनाओं में अनेक परिभाषाएँ तथा विचार स्थल हैं जिनमें अत्यन्त आभास के कारण वाक्य प्रस्तुत होता है। चेस्टरटन ने इस युग की गद्य शैली को बहुत दृष्टियों में प्रभावित किया है। उनमें काव्य-प्रियता है परन्तु साहित्यिक दृष्टि के सम्बन्ध में चेस्टरटन का उल्लेख अनिवार्य है। यद्यपि दिल्पेर वेल्कि, मैकम वीर ग्राम, ई० वी० लूकम, एडवर्ड टामस, टॉमलिनसन, ए० ए० मिलने, रायट लिन्ड, ए० जी० गार्डिनर, ऐसे प्रतिभापूर्ण लेखक गद्य साहित्य को सुसज्जित कर रहे हैं परन्तु कदाचित् ही किसी में मौलिकता हो। जॉनसन तथा गोल्डस्मिथ, डिफो तथा म्विफ्ट, स्टाविसन, लैम्ब, टि किन्सी, शा, ज्वायस तथा चेस्टरटन की रचनाओं में आधुनिक गद्य लेखक वर्ग प्रभावित है।

लिटन स्ट्रैची—यदि किसी गद्य लेखक ने मौलिक रचना शैली इस युग में निमित्त की तो वे थे लिटन स्ट्रैची (१८८०-१९३२)। उन्होंने जीवन चरित्र रचना में नवीन दृष्टिकोण रखा। 'एमिनेन्ट विक्टोरियन्स' (१९१८), 'क्रॉन विक्टोरिया' (१९२१) तथा 'एलिजबेथ एंड एमकम' (१९२८) में मौलिक रूप से नव नवन कर उन्होंने आकर्षक शैली में रचनाएँ की हैं। उन्होंने पहले पहल जीवन चरित्र-लेखन में स्पष्टवादिता का उद्देश्य रखा और व्यंग्य का प्रचुर प्रयोग किया। उनके नायक, नायिका हमारे सम्मुख राजा, रानी तथा श्रेष्ठ व्यक्ति के विशेषणों में सशुद्ध होकर गद्दी आते वरन् वे आते हैं मनुष्य अथवा स्त्री रूप में। नवी दृष्टिकोण इनकी युग प्रवर्तक विशेषता है।

आधुनिक साहित्य में क्रमशः प्राचीन पद्धतियाँ कुल्ल-खुल्ल प्रायः और कुल्ल पुनर्जीवित हो रही हैं। वक्तव्यों में बर्क, फ्रांस् तथा गैरिडन की आवेशपूर्ण शैली लुप्त होकर पत्रकारों की मुलभ, मुगल तथा हास्ययुक्त शैली पुनर्जीवित हो रही है। समाचारपत्र तथा रेडियो ने गद्य शैली को पूर्णरूप से प्रभावित किया है। इस समय रूसी साहित्यकारों का प्रभाव अंग्रेजी कलाकारों पर विदित है। चेखव की शैली, जिसकी अनुवीक्षण शक्ति अपार प्रतीत होती है, अंग्रेजी लेखक हर्षपूर्वक अपना रहे हैं। क्रमशः अंग्रेजी साहित्याकाश विस्तार हो रहा है। रूस, फ्रांस, स्कैंडिनेविया स्वीडन, पोलैन्ड, जर्मनी के लेखकों ने अपनी ज्योतिर्मयी किरणें इस आकाश

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

पर फेंकी है। सम्भव है किरी आगामी युग में उच्च जीवन-मर्त्य की सन्ध्या-समय के गर्त में खी जायगी और नवीन छावनी का उच्च निर्माण होगा तो साहित्य राष्ट्रीय न होकर अन्तराष्ट्रीय हो जायगा और मनुष्य ज्ञान-पथ न होकर अन्तर्जातीयता के विशाल वंश में नया जन्म लेगा।

